Date:
Page: 1

सप्तम दिवस भागवत
-: कथा :-

⇒ लक्ष्मी जी का विवाह केवल नारायण से हो सकता हैं। किन्तु रुक्मी, रुक्मिणी जी का विवाह शिशुपाल से करना चाहता था।

⇒ लक्ष्मी का स्वरुप हैं चलना, लक्ष्मी नारायण को छोड़कर कहीं भी एक जगह टिक नही सकती, शास्त्र कहते हैं—

श्लोक - चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणाश्चलं जीवित यौवनम् ।
चलाचले च संसारे धर्म एको हि निश्चलः ॥

⇒ लक्ष्मी अर्थात् धन आता हैं, चला जाता हैं। जीवन मे यौवन भी एक दिन चला जाता है, और एक दिन प्राण भी चले जाते हैं। परन्तु धर्म ही इस संसार मे निश्चल अर्थात् स्थाई हैं।

⇒ धन आता है, चला जाता हैं, धन को कोई सदैव अपने पास रोककर रख नही सकता, इसी प्रकार प्राण भी जब निकलने वाले होते है, तो कोई रोक नही सकता।

⇒ उदाहरण :- एक बार एक तोता वृक्ष की डाल पर बैठकर हँस रहा था, तभी उधर से गरुण जी निकले, गरुण ने जब उस तोते को देखा तो वह उसके समीप बात करने के लिए जाने लगे, इतने मे ही वहाँ यमराज जी आ जाते हैं, और उस तोते को देखकर हँसने लगते हैं। जब गरुण जी यमराज को हँसते हुए देखते है, तो वह समझ जाते हैं कि, कुछ देर बाद इस तोते की मृत्यु होने वाली है, इसलिए गरुण जी उस तोते के प्राणो की रक्षा करने के

Date:
Page: 2

⇒ लिए उसे सात समुद्र पार एक टापू पर बनी गुफा के अन्दर छोड़ आते हैं, गरुण जी मन मे विचार करते हैं, चलो इस तोते के प्राणो की रक्षा मैंने कर ली, अब यहाँ इसे कोई मारने नही आयेगा। इसके बाद गरुण जी सीधे यमराज जी के पास जाते हैं और उनसे पूछते हैं कि आप उस तोते को देखकर हँस क्यों रहे थे?

⇒ तब यमराज जी गरुण जी से कहते हैं मैं उस तोते को देखकर इसलिए हँस रहा था, क्योंकि मैं विचार कर रहा था कि इस तोते की मृत्यु कुछ देर बाद सात समुद्र पार एक टापू के ऊपर बनी गुफा के अन्दर होने वाली हैं, और यह यहाँ वृक्ष की डाली पर बैठा हुआ है, यह इतनी शीघ्र वहाँ तक जायेगा कैसे?

⇒ यह सुनकर गरुण जी को बहुत दुःख होता हैं, वह विचार करते हैं, मैं तो उस तोते को मौत के मुँह तक स्वयं ही पहुंचा आया, अभी तक तो उस तोते की मृत्यु भी हो गई होगी।

⇒ इस दृष्टान्त से हमे यह शिक्षा मिलती हैं कि जब प्राण निकलने वाले होते है, तो कोई रोक नही पाता हैं।

धन, प्राण, जीवन, यौवन सब चल हैं। इस संसार मे धर्म ही निश्चल हैं।

Date:
Page: 3

⇒ जो लक्ष्मी के पीछे भागते है, लक्ष्मी उनके पास कभी नही जाती, लक्ष्मी का स्वभाव हैं, वह एक जगह कभी नही रुकती हैं। जब लक्ष्मी जी माला लेकर के अपने लिए वर पसन्द कर रही थी, उस समय विष्णु जी सबसे अलग बहुत दूर जाकर के एकान्त मे बैठे थे, विष्णु जी ने लक्ष्मी जी की तरफ देखा भी नही किन्तु लक्ष्मी जी ने फिर भी विष्णु जी को अपने पति के रुप मे स्वीकार किया, तो भैया जो लक्ष्मी के पीछे नही भागते, लक्ष्मी जी तो उनके ऊपर कृपा करती हैं।

⇒ द्वारकाधीश का विवाह लक्ष्मी जी के साथ हुआ, लक्ष्मी के पति तो केवल विष्णु जी हैं। इसलिए लक्ष्मी का विवाह अन्य किसी पुरुष के साथ नही हो सकता और जो लक्ष्मी का विवाह उनकी इच्छा के विरुद्ध अन्य किसी पुरुष से करवाने का प्रयास करता हैं, उसका रुक्मी के जैसा हाल होता हैं।

⇒ रावण ने लक्ष्मी जी को अपनी पत्नी बनाने का प्रयास किया था, आज भी जलता हैं।

⇒ लक्ष्मी को व्यय करने के लिए तीन प्रकार के पुरुष बताए।

① उत्तम ② मध्यम ③ अधम

(1) उत्तम :- उत्तम व्यक्ति लक्ष्मी का पिता बनता हैं, और लक्ष्मी को अपनी पुत्री मानता हैं। जो व्यक्ति घर के धन को बेटी की तरह मानता हैं, खुद पिता के तरह रहता, और लक्ष्मी रुपी बेटी बड़ी हो जाने पर उसका विवाह नारायण के साथ

Date:
Page: 4

⇒ करता हैं, वह उत्तम पुरुष हैं।

⇒ उत्तम पुरुष को चाहिए कि वह खूब धन कमाए और जब लक्ष्मी रूपी बिटियाँ बड़ी हो जाए अर्थात अधिक धन हो जाए तो अपने घर मे भागवत कथा का आयोजन कराए और कथा के षष्ठम दिवस मे अपनी बेटीका विवाह नारायण के साथ करके, नारायण को अपना जमाता बना ले।

(2) मध्यम :- मध्यम व्यक्ति लक्ष्मी की माता बनता हैं और लक्ष्मी को अपनी बेटी मानता हैं। जिनके पास धन कम हैं वो मध्यम पुरुष हैं, अब मध्यम पुरुष अपनी लक्ष्मी रूपी बिटिया का विवाह नारायण के साथ कैसे करे? देखिये जबतक बेटी 18 वर्ष की नही हो जाती, तबतक हम उसका विवाह नही कर सकते, अन्यथा कानूनी अपराध माना जाता है। इसी प्रकार जब तक आपके पास धन कम है, आपकी लक्ष्मी रूपी बिटिया छोटी हैं, तबतक उसका विवाह नारायण के साथ मत करिए, जब आपकी लक्ष्मी रूपी बिटिया बड़ी हो जाए तब आप अपने घर मे भागवत कथा का आयोजन करके अपनी लक्ष्मी रूपी बिटिया का विवाह नारायण के साथ करिए।

(3) अधम :- अधम व्यक्ति लक्ष्मी का पति बनना चाहता हैं। पति बनने वालो का लक्ष्मी सर्वनाश कर देती हैं। रावण ने लक्ष्मीजी को पत्नी बनाने का प्रयास किया था, आज भी जलता हैं। इसलिए लक्ष्मी के पिता बनो, माता बनो

Date:
Page: 5

⇒ किन्तु पती बनने का प्रयास मत करो, विदर्भ देश के राजा भीष्मक ने भगवान श्री कृष्ण को अपना जमाता बनाया।

⇒ शुकदेव जी कहते हैं - राजन् परीक्षित आगे कथा आती है कि भगवान् को पुत्र की प्राप्ति हुई। रुक्मिणी जी गर्भवती हुई और समय आने पर उन्होंने पुत्र रत्न को जन्म दिया। कामदेव ही भगवान् के पुत्र बनकर के प्रगट हुए। और प्रद्युम्न नाम से जगत् मे प्रसिद्ध हुए।

श्लोक :- कामस्तु वासुदेवांशो दग्धः प्राग् रुद्रमन्युना।

देहोपपत्तये भूयस्तमेव प्रत्यपद्यत ॥

⇒ भगवान शंकर ने अपने तृतीय नेत्र के द्वारा कामदेव को भस्म कर दिया था। तब कामदेव की पत्नी रति देवी ने कहा नाथ अब मेरे पति को शरीर की प्राप्ति कब होगी? तो भगवान् शंकर ने कहा जब द्वापर मे कृष्णावतार होगा, तो तुम्हारे पति कृष्ण भगवान् के पुत्र बनकर के प्रगट होगे, तब उनको शरीर की प्राप्ति होगी।

चौ० ① जब जदुबंस कृस्न अवतारा।
होइहि हरन महा महिभारा ॥

② कृस्न तनय होइहि पति तोरा।
बचनु अन्यथा होइ न मोरा ॥

⇒ भगवान् कामदेव भगवान् द्वारकाधीश के पुत्र बनकर के प्रगट हुए, उसी समय शम्बरासुर नाम का एक दैत्य था, इसको वरदान प्राप्त था कि

Date:
Page: 6

⇒ भगवान् कृष्ण के पुत्र के द्वारा ही इसकी मृत्यु होगी, ये प्रतीक्षा कर रहा था, कि कृष्ण के पुत्र उत्पन्न हो, तो मैं उनको मार दूं। बड़ा मायावी था शम्बरासुर, इधर रुक्मिणी जी ने सुन्दर पुत्र को जन्म दिया, और मायावी शम्बरासुर पहुँच गया, और अपनी माया के द्वारा रुक्मिणी जी के पुत्र को सूतिकागृह से वेष बदलकर हर ले गया।

⇒ शम्बरासुर बालक को उठाकर के लेकर के गया और समुद्र मे फेंक दिया, उसने सोचा समुद्र मे बड़े-बड़े जीव रहते हैं, इसको खा जायेंगे और इसकी मृत्यु हो जायेगी।

⇒ शम्बरासुर ने जब प्रद्युम्न जी को समुद्र मे फेंका तो एक मच्छ उस बालक को निगल गया, किन्तु पेट मे जाने के बाद भी उस बालक की मृत्यु नही हुई, और मछुओं ने जब जाल फेंका, तो वही मच्छ उस जाल मे फंस गया, मछुओं ने उस मच्छ को बाहर निकालकर पकड़ लिया, और विचार किया ये मच्छ मैं महाराज शम्बरासुर को उपहार मे दे दूं। मछुओं ने उस मच्छ को लेजाकर के महाराज शम्बरासुर को भेंट मे दे दिया।

⇒ शम्बरासुर ने उस मच्छ को अपनी रसोई मे भेज दिया। रसोई मे जब भोजन बनाने वालो ने उस मच्छ के पेट को चीरा तो उसमे से एक जीवित बालक निकला, शम्बरासुर की रसोई मे मायावती नाम की एक स्त्री काम करती थी। और वो मायावती कोई

Date:
Page: 7

⇒ और नही थी, कामदेव की पत्नी रति देवी थी, भगवान् शंकर ने रति से कहा था, तुम शम्बरासुर के घर पर ही रहना, वही तुमको तुम्हारे पति की प्राप्ती होगी।

⇒ मायावती रसोई मे ही रहती, मायावती ने जब देखा तो वह जान गई, और नारद जी ने आकर के सबकुछ मायावती को बता दिया।

श्लोक - नारदोऽकथयत् सर्वं तस्याः शंकितचेतसः।
बालस्य तत्त्वमुत्पत्तिं मत्स्योदरनिवेशनम् ॥

⇒ ये बालक कैसे उत्पन्न हुआ, मच्छ के पेट मे कैसे गया ये सब कथा नारद जी ने मायावती को सुना दी, मायावती ने धीरे से उस बच्चे को उठा लिया और चुपके से अपने कक्ष मे लेकर के चली गई, और किसी को बताया नही, चुपके-चुपके मायावती ने प्रद्युम्न जी का पालन पोषण किया और कुछ ही दिनो मे प्रद्युम्न जी जवान हो गये।

⇒ एक दिन मायावती ने हास्य के साथ भौंह मटका कर प्रद्युम्न जी की ओर देखा और अपने हाव, भाव प्रस्तुत किए, उनके हाव, भाव को देखकर प्रद्युम्न जी को लगा ये तो मेरे साथ स्त्री जैसा व्यवहार कर रही हैं। जैसे पत्नी अपने पति के साथ हाव, भाव से मिलती हो, उस भाव से मुझको ये मिल रही हैं, किन्तु ये तो मेरी माँ हैं, इसने मेरा पालन, पोषण किया हैं,

⇒ प्रद्युम्न जी ने रति (मायावती) से कहा -

श्लोक - मातृभावमतिक्रम्य वर्तसे कामिनी यथा।

Date:
Page: 8

⇒ मातृभाव को छोड़कर पत्नी जैसा व्यवहार क्यों कर रही हो? ये उचित नही हैं।

⇒ प्रद्युम्न जी की बात सुनकर के मायावती हँसने लगी, और मायावती ने प्रद्युम्न जी से कहा मैं आपकी माँ नही हूँ। आपकी माँता तो द्वारकाधीश की पत्नी रुक्मिणी महारानी और पिता श्री कृष्ण हैं।

⇒ आप साक्षात् कामदेव हैं, और मैं आपकी पत्नी रति देवी हूँ, आप अपने स्वरूप का स्मरण करे कि आप कौन हैं?

⇒ इस प्रकार मायावती ने जब कहा, तो उसी समय प्रद्युम्न जी महाराज ने अपने स्वरुप का स्मरण किया, ये प्रद्युम्न जी भी भगवान् के स्वरूप ही हैं, सिद्धान्त मे इनको भी भगवान का स्वरूप ही स्वीकार किया जाता है।

⇒ भगवान् के चतुर्व्यूह को शास्त्रो मे बताया गया हैं। तो भगवान् के जो चतुर्व्यूह हैं, उन चतुर्व्यूह मे वासुदेव, बलरामजी, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध जी आते हैं।

⇒ ये चारो भगवान् के स्वरुप हैं। कृष्णावतार मे दो तो भाई के रुप मे आए, कृष्ण और बलराम, और दो पुत्र और पौत्र के रुप मे आए, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध, इस प्रकार भगवान का चतुर्व्यूह द्वापर युग मे अवतरित हुआ। और यही चतुर्व्यूह त्रेता युग में चार भाइयों

Date:
Page: 9

⇒ के रूप मे, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के रूप मे अवतरित हुआ।

⇒ भगवान् श्री राम ही वासुदेव हैं, और लक्ष्मण जी बलराम जी हैं, भरत जी प्रद्युम्न हैं, शत्रुघ्न जी अनिरुद्ध हैं। इस प्रकार से त्रेता युग मे भी भगवान् के चतुर्व्यूह का प्राकट्य हुआ हैं और द्वापर युग मे भी, इसलिए श्री रामावतार और कृष्णावतार ये दोनो अवतार परिपूर्ण अवतार हैं

⇒ प्रद्युम्न जी महाराज ने जब अपने स्वरूप का स्मरण किया, तो उनको सब याद आ गया, प्रद्युम्न जी के अस्त्र, शस्त्र प्रकट हो गये, श्री प्रद्युम्न जी महाराज ने जाकर के शम्बरासुर को युद्ध करने के लिए ललकारा, प्रद्युम्न जी और शम्बरासुर के मध्य मे युद्ध हुआ, और श्री प्रद्युम्न जी महाराज ने शम्बरासुर का वध कर दिया।

⇒ इसके बाद में मायावती रति, जो आकाश मे चलना जानती थी वह अपने पति प्रद्युम्न जी को आकाश मार्ग से द्वारकापुरी ले गयी।

⇒ प्रद्युम्न जी जब देवी रति के साथ आकाश मार्ग से उड़ते हुए भगवान् के उस उत्तम अन्तःपुर मे प्रवेश करते हैं, तो प्रद्युम्न जी और रति देवी को देखकर, जितनी अन्तःपुर की नारियॉं थी वो सब आश्चर्यचकित हो गई, ये कौन दिव्य पुरुष आ रहे हैं। भगवान् श्री कृष्ण के समान ही इनका मुखमण्डल, आकृति, प्रकृति, स्वरूप सब कुछ एक समान (आत्मा वै जायते पुत्रः) आत्मा ही पुत्र के रूप मे होती हैं, और शास्त्र का तो यहॉं तक सिद्धान्त हैं, व्यक्ति जब बूढ़ा होता हैं, तो

Date:
Page: 10

⇒ कहते हो वह बूढ़ा हो गया, उसकी जवानी चली गई, भैया जवानी चली नही गई, वो बेटे के रूप मे जवान होकर फिर आ गया।

⇒ पिता की जवानी उसके बेटे के रूप मे दिखती हैं तो श्री प्रद्युम्न जी महाराज भी भगवान के समान मनोहर सुन्दर हैं। प्रद्युम्न जी को देखकर अन्तःपुर की नारियों को भ्रम हो गया, ये द्वारकाधीश आकाश मार्ग से आ रहे हैं।

⇒ सबको भ्रम हो गया कि कृष्ण ही आ रहे है सभी नारियाँ प्रद्युम्न जी को श्रीकृष्ण समझकर सकुचा गयी और घरो में इधर- उधर लुक- छिप गयी।

⇒ लेकिन रुक्मिणी जी ने जब प्रद्युम्न जी को देखा तो रुक्मिणी जी विचार करने लगी आज यदि मेरा बेटा जीवित होता, तो ऐसा ही होता, रुक्मिणी जी कहती हैं, मेरा बेटा यदि जीवित होगा, तो ऐसा ही होगा, इतना बड़ा, इस प्रकार रुक्मिणी जी सोच ही रही थी, तब तक नारद जी वहाँ आ गए,

श्लोक- नारदोऽकथयत् सर्वं शम्बराहरणादिकम् ।

⇒ नारद जी ने आकर के सारी कथा सुना दी, हे माता जी, ये आपके पुत्र हैं, और शम्बरासुर ने इनका हरण किया था, इनकी पत्नी रति देवी हैं यह समाचार सुनकर के द्वारका के लोग परम आनन्दित हुए, खूब आनन्द हुआ, और बड़े धूमधाम से भगवान के पुत्र प्रद्युम्न जी का विवाह महोत्सव मनाया गया। बोलो श्री प्रद्युम्न जी महाराज की जय।

Date:
Page: 11

⇒ भगवान श्री कृष्ण के पुत्र का भी विवाह हो गया, घर मे बहू आ गयी, लेकिन अभी हमारे श्यामसुन्दर के सोलह हजार एक सौ सात विवाह बाकी हैं।

⇒ अब आगे शुकदेव भगवान राजन परीक्षित को भगवान के अन्य विवाहो की कथा श्रवण कराते हैं।

: स्यमन्तक मणि की कथा :

⇒ एक बार भगवान श्रीकृष्ण को भी बेवजह कलंक लग जाता हैं।

⇒ जल से पतला कौन हैं? कौन भूमि से भारी?
कौन अग्नि से तेज हैं? कौन काजल से काली?

⇒ जल से पतला ज्ञान हैं, पाप भूमि से भारी।
क्रोध अग्नि से तेज हैं, कंलक काजल से कारी॥

⇒ हमारे यहाँ काजल से भी ज्यादा कंलक को काला बताया गया हैं। यदि कभी बेवजह कंलक लग जाए तो क्या करे, उसके लिए यह कथा सुनिए।

श्लोक ⇒ सत्राजितः स्वतनयां कृष्णाय कृतकिल्बिषः।

स्यमन्तकेन मणिना स्वयमुद्यम्य दत्तवान्॥

द्वारिकापुरी मे सत्राजित नाम के एक क्षत्रिय रहते थे। ये सूर्य भगवान के बहुत बड़े भक्त थे भगवान सूर्य की इन्होने उपासना की, तो सूर्य

Date:
Page: 12

⇒ भगवान ने प्रसाद के रूप मे इनको एक मणि दी, उस मणि का नाम था स्यमन्तक मणि, यह मणि नित्य आठ भार सोना देती थी। सत्राजित उस मणि की पूजा करते थे, और पूजा करने के बाद जब पुष्पांजलि अर्पित करते थे।

⇒ तब उस मणि के अन्दर से आठ भार सोना प्रगट होता था, और उसी सोने से उनका वैभव बढ़ने लगा। धीरे-धीरे पूरी द्वारकापुरी मे चर्चा होने लगी, सत्राजित के पास तो बहुत धन सम्पत्ति है।

⇒ ये समाचार भगवान द्वारकाधीश के पास पहुँचा, तो भगवान ने एक दिन सत्राजित को सभा मे बुलाया। भगवान ने सत्राजित से कहा तुम इस मणि से प्राप्त होने वाले स्वर्ण का क्या करोगे? तुम यह मणि मुझे दे दो, इस मणि से प्राप्त होने वाले स्वर्ण से कम से कम द्वारका की प्रजा का कल्याण होगा।

⇒ सत्राजित ने कहा नही-नही इस मणि को भगवान सूर्य ने हमे दिया है, इस मणि को हम नही देगें, भगवान श्री कृष्ण ने बात वही पर छोड़ दी, भगवान श्री कृष्ण ने सोचा चलो फिर किसी दिन इस विषय पर चर्चा की जायेगी, आज ही निर्णय करना कोई जरुरी नही है।

⇒ सत्राजित का एक भाई था, प्रसेन, प्रसेन ने सत्राजित से कहा भाई यह मणि मुझे दे दो, मैं इस मणि को अपने गले मे पहनकर अपने मित्रों के साथ शिकार खेलने जाऊंगा।

Date:
Page: 13

⇒ प्राचीनकाल में सब वस्त्र के साथ गहने पहनते थे, भारतीय परिधान धोती, कुर्ता हैं। पहले लोग धोती, कुर्ता पहनते थे, धोती-कुर्ता के साथ मे यदि आप गले मे कोई माला पहनते हैं, कानों मे कुण्डल पहनते हैं, तो शोभा देता हैं। इसलिए पहले लोग भारतीय परिधान के साथ मे गहने पहनते थे।

⇒ किन्तु आजकल लोग अपने परिधान को भी भूलते जा रहे हैं। अब आप पैंट, शर्ट पहनकर के गले मे हार और कानों मे कुण्डल पहनेगे तो कैसे लगेगें, स्वयं से विचार करिए।

⇒ हम लोग अपनी संस्कृति को छोड़कर के पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे हैं। हम अंग्रेजो की वेशभूषा अपना रहे हैं, और अंग्रेज अपना देश छोड़कर वृन्दावन मे आकर के धोती कुर्ता पहनकर राधे, राधे गा रहे हैं।

⇒ हम किसी भी देश मे, किसी भी परिस्थिति मे हो किन्तु हमें कभी भी अपनी संस्कृति, अपनी वेशभूषा को छोड़ना नही चाहिए।

⇒ प्रसेन ने आज सुन्दर धोती कुर्ता पहना और गले मे स्यमन्तक मणि को धारण किया, प्रसेन के गले मे वह मणि बहुत सुन्दर लग रही थी।

⇒ सत्राजित का भाई प्रसेन मणि को पहनकर के जंगल मे शिकार खेलने गया। उस जंगल मे एक सिंह रहता था। सिंह ने जब प्रसेन के गले

Date:
Page: 14

मे मणि देखी तो सिंह ने प्रसेन को मार डाला और मणि को ले लिया, वह सिंह मणि को लेकर के गुफा मे जा ही रहा था। तबतक जामवंत जी वहाँ आ जाते हैं, और उस सिंह को मारकर के उस मणि को ले लेते हैं।
जामवंत जी ने उस मणी को गुफा मे लेजाकर के बच्चे को खेलने के लिए दे दिया। इधर सत्राजित का भाई प्रसेन जब जंगल से लौटकर के नही आया। तो सत्राजित को लगा कृष्ण ने मणि के लोभ मे मेरे भाई को मार डाला, कभी-कभी अमृत के साथ विष भी पीना पड़ता हैं। विष से अभिप्राय (निन्दा), बेवजह भगवान को कलंक लग गया।

⇒ जब द्वारका के लोगों को पता चला कि मणि के लोभ मे कृष्ण ने सत्राजित के भाई प्रसेन को मार दिया, तो सब प्रभु की बुराई करने लगे जब भगवान श्री कृष्ण को यह बात ज्ञात हुई, तो भगवान ने कहा कलंक मुझ पर लगा हैं इसलिए इस कलंक को मैं ही मिटाऊँगा।

⇒ भगवान कहते कभी कलंक लगे तो मुँह से मत बोलिए, कर्म करके उसे मिटाइए।

⇒ भगवान श्री कृष्ण सेना लेकर के प्रसेन को ढूंढने गये, तो आगे देखा मार्ग मे प्रसेन मरा पड़ा है थोड़े आगे और बढ़े तो देखा सिंह भी मरा पड़ा हैं, भगवान चलते-चलते जामवंत जी की गुफा के द्वार तक पहुँच गए, जिस गुफा के अन्दर जामवंत जी रहते थे।

Date:
Page: 15

⇒ गुफा के द्वार पर पहुँचकर के भगवान श्री कृष्ण ने सेवकों से कहा तुम लोग यही खड़े रहो मैं भीतर जा रहा हूं, सेवकों ने कहा महाराज आपका अकेले जाना ठीक नही, भगवान ने कहा चिन्ता मत करो, मेरी प्रतीक्षा करना, सेवकों ने कहा कितने दिनों तक?

⇒ भगवान ने कहा 12 दिनों तक, अगर 12 दिन मे मैं लौटकर नही आया तो द्वारकापुरी मे जाकर के सूचना दे देना, उन सेवकों को द्वार पर खड़ा करके भगवान गुफा के अन्दर गये, गुफा के अन्दर जाकर भगवान ने देखा, उस मणि को लेकर के बच्चे खेल रहे थे।

⇒ गुफा के अन्दर भगवान श्रीकृष्ण को देखकर के उन बच्चो का पालन-पोषण करने वाली धात्री जोर-जोर से चिल्लाने लगी, कोई नर आ गया, कोई नर आ गया, जबतक भगवान श्री कृष्ण कुछ सोचते, सावधान होते कि क्या मामला है? तब तक उस गुफा के अन्दर से एक भयंकर ऋक्ष श्री जामवंत जी महाराज आए और भगवान के ऊपर टूट पड़े

⇒ अब तो जामवंत जी और भगवान श्री कृष्ण के मध्य मे युद्ध होने लगा। 28 दिनों तक जामवंत जी और भगवान के मध्य बिना विश्राम किए युद्ध चलता रहा, 28 दिनो के अन्दर भगवान श्री कृष्ण पर तो कोई फर्क नही पड़ा, किन्तु जामवंत जी के शरीर की एक-एक गाँठ टूट-फूट गयी। तब जामवंत जी भगवान श्री कृष्ण के चरणों मे गिरकर के बोले जय श्री राम।

Date:
Page: 16

⇒ भगवान श्री कृष्ण ने जामवंत जी से पूछा तुम कौन हो? तब जामवंत जी बोले प्रभू मैं रामावतार का जामवंत हूँ।

⇒ जामवंत जी भगवान से कहते हैं, प्रभू राम रावण युद्ध मे आपने बड़े - बड़े योद्धाओं को मारा, इसलिए मेरे हाथों की खुजली मिटी नहीं, तब मैंने आपसे त्रेता युग मे कामना की थी, कि आपका और हमारा कभी युद्ध हो तो मैं आपको अपनी कला दिखाऊ

⇒ तब राम जी ने जामवंत जी से कहा इस अवतार मे तो हमारा, तुम्हारा युद्ध नही हो सकता क्यों कि आप वृद्ध हो और, मैं अपने से बड़ो के साथ युद्ध करू, ये मर्यादा नही है। भगवान ने कहा आपकी इस कामना को मैं कृष्णावतार मे पूर्ण करुगा।

⇒ भगवान श्री कृष्ण जामवंत जी की कामना को आज पूर्ण करते हैं। जामवंत जी ने भगवान से पूछा आज आप कैसे पधारे हमारी कुटिया मेर भगवान श्री कृष्ण ने जामवंत जी से कहा आपके पास जो मणि है, वह मुझे दे दो, क्यों कि इस मणि के कारण ही मुझ पर कलंक लगा है।

⇒ जामवन्त जी ने भगवान श्री कृष्ण से कहा प्रभू आप अपने नेत्र बन्द करिए, भगवान ने जैसे ही अपने नेत्र बन्द किए जामवंत जी ने भगवान के एक हाथ मे मणि और दूसरे हाथ मे अपनी बेटी जाम्बवती का हाथ

Date:
Page: 17

⇒ पकड़ा दिया। भगवान् ने जामवंत जी से कहा हम मनुष्य हैं, आपने अपनी बेटी हमे समर्पित कर दी, दुनियाँ के लोग क्या कहेगें?

⇒ भगवान् जाम्बवती को काली कमली मे ढक के द्वारका लाये और महल के पीछे के द्वार से प्रवेश करके जाम्बवती जी को कक्ष मे चुपचाप बैठा देते हैं।

⇒ भगवान् जब कक्ष से निकलकर के बाहर आते हैं, तो देखते हैं कि रुक्मिणी जी बाहर खड़ी- खड़ी चुपचाप से सब देख रही थी।

⇒ रुक्मिणी जी ने भगवान् से पूछा स्वामी आपने कमरे मे किसको बन्द किया है। ठाकुर जी रुक्मिणी जी से कहते हैं, हम वन मे भ्रमण करने गये थे, वहाँ हमे तपस्या करते हुए एक जोगनी मिली, वह हमे पति रुप मे प्राप्त करने के लिए तपस्या कर रही थी, हमने उससे विवाह कर लिया, बहुत सुन्दर हैं वो, तुम उसे देखना मत।

⇒ रुक्मिणी ने भगवान् से पूछा क्या वो मुझसे भी ज्यादा सुन्दर हैं। भगवान् बोले हाँ तुमसे भी ज्यादा सुन्दर हैं। रुक्मिणी जी ने शाप दे दिया, इस कमरे के अन्दर जो स्त्री बैठी है, वो मुझसे थोड़ी कम सुन्दर हो जाये।

⇒ रुक्मिणी जी के शाप देती ही भालू की बेटी जाम्बवती जी रुक्मिणी जी से थोडी कम सुन्दर स्त्री बन गयी। भगवान् ने रुक्मिणी जी से कहा देवी आज आपकी वजह से भालू की बेटी सुन्दर स्त्री बन गयी।

Date:
Page: 18

⇒ भगवान् श्री कृष्ण जिन लोगों को गुफा के बाहर छोड़ गये थे, उन्होने बारह दिनतक भगवान् की प्रतीक्षा की। परन्तु बारह दिन बाद भी जब भगवान् लौट कर नही आये, तब वे अत्यन्त दुःखी होकर द्वारका को लौट गए। सेवकों ने द्वारका वासियों को सारी बात बता दी।

⇒ जब द्वारकावासियों को पता चला कि श्रीकृष्ण गुफा से बाहर नही निकले, तो सभी द्वारकावासी अत्यन्त दुःखित होकर सत्राजित को भला-बुरा कहने लगे। सभी द्वारकावासियों ने श्री कृष्ण की प्राप्ति के लिए भगवती दुर्गादेवी से प्रार्थना की।

⇒ इधर भगवान् श्री कृष्ण जाम्बवती जी को महल मे छोड़कर सत्राजित के पास गये और समस्त द्वारकावासियों के सामने उन्हे यह मणि कैसे प्राप्त हुयी थी, वह सब कथा सुनाकर के वह मणि सत्राजित को सौंप देते हैं।

⇒ जब द्वारका के लोगो को सम्पूर्ण सच पता चलता हैं, तो वह भगवान् को छोड़कर के सत्राजित की बुराई करने लगते हैं।

⇒ इस बुराई से बचने के लिए सत्राजित ने विचार किया मैं भी अपनी बेटी का विवाह कर दू कृष्ण के साथ, कृष्ण मेरे जमाता हो जाए फिर कौन हमारी बुराई करेगा, गालियाँ देगा, किसकी इतनी हिम्मत है, बोलने की।

⇒ यही सब विचार करके सत्राजित अपनी बेटी

Date:
Page: 19

⇒ सत्यभामा का हाथ भगवान श्री कृष्ण के हाथ मे देकर के कन्यादान दान कर देते हैं। भगवान श्री कृष्णने विधिपूर्वक सत्यभामा जी का पाणिग्रहण किया।

⇒ सत्राजित ने विचार किया मेरा जो कुछ भी हैं वह मेरी बेटी का ही हैं, क्यों कि सत्राजित को कोई पुत्र सन्तान प्राप्त नही हुई थी। इसलिए सत्राजित स्यमन्तक मणि भी भगवान श्री कृष्ण को अर्पण कर देते हैं।

⇒ किन्तु भगवान श्री कृष्ण स्यमन्तक मणि को लेने से मना कर देते हैं। भगवान श्री कृष्ण विचार करते हैं यह मणि लेना ठीक नही, अगर मैं इस मणि को ले लूगा, तो हमारे घर मे तो लड़ाई शुरू हो जायेगी, भगवान विचार करते हैं, यदि यह मणि मेरे घर मे रहेगी, तो रोज लड़ाई, कलह होगा।

⇒ जाम्बवती जी कहेगी मेरे पिता ने इस मणि को दिया था, और सत्यभामा जी कहेगी मेरे पिता ने इस मणि को दिया था, भगवान कहते यह तो झगड़े का घर बन जायेगा। इसलिए इससे अच्छा तो यही होगा कि यह मणि सत्राजित के पास मे ही रहे भगवान ने सत्राजित से कहा -

श्लोक - भगवानाह न मणिं प्रतीच्छामो वयं नृप।

नवास्तां देवभक्तस्य वयं च फलभागिनः॥

⇒ भगवान भी बहुत चतुर है, भगवान ने सोचा पेड़ लगाने से अच्छा हैं, फल खाने को मिल जाये, बुद्धिमान तो वही हैं, जो पेड़ नही लगाता

Date:
Page: 20

⇒ और फल खाता है। भगवान ने सत्राजित से कहा एक काम करो आप, मणि तो अपने पास रखो, लेकिन इस मणि से 8 भार जो सोना निकलता है, वो हमको दे दिया करो,

⇒ सत्राजित ने कहा ठीक है, मैं इस मणि से प्राप्त होने वाले स्वर्ण को आपको दे दिया करूगा

⇒ बन्धुओ सत्यभामा का विवाह श्री कृष्ण के साथ होने से पूर्व, सत्यभामा जी की सगाई शतधन्वा से हुई थी।

⇒ जब सत्यभामा का विवाह श्री कृष्ण के साथ हो जाता है, तो अक्रूर जी सतधन्वा से कहते हैं सत्यभामा तो तुम्हे मिली नही, इसलिए अब तुम किसी भी प्रकार से स्यमन्तक मणि सत्राजित से ले लो।

⇒ मणि के लोभ मे आकर के सतधन्वा मध्य रात्रि के समय सोते हुए सत्राजित को मार देता है।

⇒ जब सत्यभामा जी और श्री कृष्ण को यह बात पता चलती है, तो वह बहुत विलाप करते हैं, सत्यभामा जी श्री कृष्ण से कहती है, मेरे पिता तो इस संसार को छोड़कर के चले गये हैं किन्तु उनकी मणि वो उनकी आखिरी निशानी है। इसलिए बैठने से कार्य नही चलेगा, मुझे वह मणि ढूंढकर लाकर के दो। ये मणि मेरे

⇒ भगवान श्री कृष्ण कहते, द्वारका से कन जायेगी?

Date:
Page: 21

⇒ भगवान् श्री कृष्ण बलराम जी को साथ लेकर के स्यमन्तक मणि को ढूढ़ने निकलते हैं।

⇒ जब अक्रूर जी को पता चलता है कि श्री कृष्ण मणि को ढूढ़ते हुए आ रहे हैं, तो अक्रूर जी शतधन्वा से कहते हैं, तुम यह मणि मुझे दे दो, और यहाँ से भाग जाओ।

⇒ शतधन्वा अक्रूर जी को मणि देकर के वहाँ से भाग जाता है। भगवान् श्री कृष्ण शतधन्वा का पीछा करते हैं और अपने तीक्ष्ण धारवाले चक्र से उसका सिर उतार लेते हैं। इस प्रकार शतधन्वा की मृत्यु हो जाती है।

⇒ भगवान् श्री कृष्ण शतधन्वा के वस्त्रों मे स्यमन्तक मणिको ढूढ़ते हैं, किन्तु उन्हें मणि नही मिलती है। अबतो दाऊ दादा को लगता है, मणिके ऊपर कृष्ण की पहले से ही दृष्टि थी, इसलिए कन्हैया ने स्यमन्तक मणि अपने पास रख ली है।

⇒ भगवान् द्वारका पहुँचते हैं, सत्यभामा भगवान् से पूछती हैं, आपको मणि मिली? भगवान् कहते मणि तो मुझे नही मिली। अब तो सत्यभामा जी को भी यही लगता है कि, मणि ठाकुर जी ने ही रख ली है।

⇒ इधर जब शतधन्वा स्यमन्तक मणि अक्रूर जी को दे जाता है, तो अक्रूर जी उस मणि से प्राप्त होने वाले स्वर्ण से, ब्राह्मणो को भोजन कराने के बाद मे सोने की थाली दक्षिणा मे देते हैं

⇒ जब भगवान् श्रीकृष्ण को यह बात पता चलती है, तो भगवान् अक्रूर जी को एक पत्र लिखते हैं

Date:
Page: 22

⇒ और कहते हैं, अक्रूर जी हमे पता है, मणि तुम्हारे पास है, यदि तुम उसका दुरुपयोग करते तो गलत था, किन्तु तुमतो उसका सदुपयोग कर रहे हो, इसलिए वह मणी तुम अपने पास ही रखो किन्तु तुम एकबार द्वारका के लोगो को सच तो बताओ, जिससे बलराम जी और सत्यभामा का सन्देह दूर हो।

→ तब अक्रूर जी आये और वह मणि द्वारका वासियो को दिखाकर के सच बताया। सच सुनकर के सत्यभामा जी और दाऊ दादा के मनमेकृष्ण के प्रतिजोसन्देह था वह मिट गया। इस प्रकार कर्म के द्वारा भगवान अपने ऊपर लगे कलंक को मिटाते हैं।

⇒ इस प्रकार भगवान के तीन विवाह सम्पन्न हो जाते हैं, आइये अब श्रवण करते हैं, कि भगवान का चौथा विवाह भगवान का कैसे हुआ?

⇒ एकदिन भगवान ने विचार किया, चले इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली), और इन्द्रप्रस्थ चलकर अपने बुआ के और, बुआ के जो बच्चे हैं पाण्डव, मेरे भाई, उनका हाल, समाचार ले, ये जानने के लिये भगवान इन्द्रप्रस्थ पधारे, और यहाँ सबसे मिले, और कुछ दिन रहे।

⇒ एकदिन भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को साथ लेकर के मृगया (शिकार) करने के लिए जंगल गए, वन मे घूमते - घूमते भगवान अर्जुन को लेकर यमुना के तट पर पहुँच गये, भगवान श्री कृष्ण अर्जुन के साथ यमुना

Date:
Page: 23

⇒ तट पर टहल रहे थे, तभी भगवान् श्रीकृष्ण और अर्जुन ने देखा, यमुना जल मे खड़े होकर के एक कन्या तपस्या कर रही थी,

⇒ भगवान् श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा -

श्लोक - पप्रच्छ प्रेषितः सख्या फाल्गुनः प्रमदोत्तमाम् ।

⇒ अर्जुन तुम इस कन्या के पास जाकर के पूछ कर के आओ, कि यह कन्या कौन है, और यमुना जल मे खड़े होकर तपस्या क्यों कर रही है? अर्जुन ने जाकर के पूछा देवी तुम कौन हो? और यमुना जल मे खड़े होकर के तपस्या क्यों कर रही हो?

⇒ बन्धुओं यमुना जल मे खड़े होकर के जो कन्या तपस्या कर रही थी, वो कोई और नही साक्षात् कालिन्दी (यमुना) महारानी थी।

⇒ कालिन्दी ने अर्जुन से कहा -

श्लोक - अहं देवस्य सवितुर्दुहिता पतिमिच्छती ।
विष्णुं वरेण्यं वरदं तपः परममास्थिता ॥

⇒ मै यमुना सूर्य भगवान की पुत्री हूँ, और मैं भगवान् विष्णु को पति के रूप मे चाहती हूँ। अर्जुन ने भगवान से जाकर के कहा प्रभो सब आप से ही विवाह करना चाहते है। ये देवी जी भी आपको पति के रूप मे प्राप्त करने के लिए तपस्या कर रही हैं।

Date:
Page: २४

⇒ भगवान श्री कृष्ण रथ से उतर कर के आए अर्जुन के साथ, कालिन्दी यमुना जल से निकल कर के बाहर आई, और अपने हाथों मे जो नीलकमल के पुष्पों की माला पकड़ रखी थी, उस माला को यमुना जी ने भगवान के गले मे डाल दिया।

⇒ बोलो कालिन्दीकृष्ण भगवान की जय, भगवान के इस विवाह के साक्षी अर्जुन बने, कालिन्दी से विवाह करके भगवान महल मे पुनः लौट आते हैं।

⇒ बन्धुओ ये कालिन्दी सूर्य की पुत्री और यमराज की बहन हैं। एक दिन यमुना महारानी अपने भाई यमराज से मिलने के लिए गई, तो वह देखती हैं कि यमपुरी मे बहुत सी आत्माओं को दण्ड दिया जा रहा है, यह देखकर के यमुना महारानी दुःखी हो जाती हैं

⇒ यमराज अपनी बहन से वर्ष मे एक बार भैयादूज को मिलने जाते हैं। जब यमद्वितीया को यमुना मैया अपने भाई यमराज का तिलक करती हैं, तो यमराज अपनी बहन यमुना से कहते हैं, बताओ बहन तुम्हे क्या चाहिए जो मांगना हो मांग लो।

⇒ तब यमुना मैया ने अपने भाई यमराज से कहा भाई यमद्वितीया के दिन जो भाई बहन हाथ पकड़कर के यमुना मे स्नान करे, उनको तुम कभी सताना नही,

Date:
Page: 25

⇒ यमुना कहती यमद्वितीया को जो कोई मुझमे नहायेगा।
यमराजा हैं मेरा भाई, उसको नही सतायेगा॥
यमुना कहती यमद्वितीया को - - - - -

⇒ बन्धुओं भवसागर से यदि पार होना हैं तो श्री जी शरण मे जाना पड़ेगा और यदि यमराज के दण्ड से बचना हैं, नर्क की यातनाओं से बचना हैं तो, यमुना महारानी की शरण मे जाना पड़ेगा। वृन्दावन के रसिक सन्त कहते हैं।

⇒ वृन्दावन धाम को वास भलो।
जहाँ पास बहे यमुना पटरानी।
जो जन नहाय के ध्यान धरें
बैकुण्ठ मिले तिनको रजधानी॥
चारहूँ वेद बखान करें, सन्त, गुनी, अरु ज्ञानी, ध्यानी।
यमुना यमदूतन टारत हैं भव तारत हैं श्री राधिका - रानी॥

⇒ बन्धुओ हम सभी को यह प्रयास करना चाहिए कि हम जब भी वृन्दावन जाये तो यमुना स्नान अवश्य करे। यमुना को जो पूजता हैं, यमुना मे जो दीप दान करता हैं, यमराज उसे कभी प्रताड़ित नही करते हैं भवसागर से तो हमे हमारी राधारानी पार कर देगी, किन्तु यमदूतो से हमे भगवान की चतुर्थ पटरानी यमुना मैया ही बचायेगी, बोलो यमुना महारानी की जय।

Date:
Page: 26

⇒ बन्धुओ भगवान के चार विवाह सम्पन्न हो गये अब पांचवे की तैयारी है। भगवान का पांचवा विवाह उज्जैन की राजकुमारी मित्रविन्दा से हुआ।

⇒ मित्रविन्दा राजाधिदेवी की कन्या और विन्द, अनुविन्द की बहिन हैं। इनके भाई इनका विवाह दुर्योधन के साथ करना चाहते थे, किन्तु मित्रविन्दा जी श्री कृष्ण को ही अपना पति बनाना चाहती हैं मित्राविन्दा के मन के भाव को जानकर भगवान श्री कृष्ण द्वारका से अवन्ती (उज्जैन) पहुँच गये और विन्द, अनुविन्द, दुर्योधन सब देखते रह गये भगवान ने मित्रविन्दा को अपने जीवन का मित्र बना लिया, मित्रविन्दा ने भगवान के चरणों मे समर्पण किया, मित्रविन्दा की माता राजाधिदेवी ने अपनी बेटी का कन्या दान किया इस प्रकार भगवान का पांचवा विवाह सम्पन्न हुआ। बोलो मित्रविंदा वल्लभ लाल की जय।

⇒ बन्धुओं भगवान श्री कृष्ण का छठा विवाह अयोध्या की राजकुमारी सत्या के साथ हुआ, इनके पिता का नाम नग्नजित था। इन्होने अपनी बेटी के विवाह मे एक शर्त लगा रखी थी, सात बिगड़े हुए बैल, जिनको मनुष्य की गन्ध से ही चिढ़ थी उन सातो बैलो को एक रस्सी मे कोई नाथ दे, उसी से मैं अपनी बेटी का विवाह करुगा।

⇒ बड़े- बड़े राजा आये, ऐसे बिगड़े हुए बैल सिंह की तरह उठा - उठा कर फेंक देते, कोई भी राजा उन सात बैलो को एक रस्सी से नाथ नही पाया। एकदिन भगवान श्री कृष्ण अयोध्या पधारे और अयोध्या की गलियों मे भ्रमण के लिए निकले

Date:
Page: 27

⇒ भगवान् श्री कृष्ण जब अयोध्या की गलियों से गुजर रहे थे, तभी सत्या की दृष्टि भगवान् श्री कृष्ण पर पड़ती है। सत्या भगवान् को देखकर मोहित हो जाती है। उसी समय भगवान् श्री कृष्ण की भी दृष्टि सत्या पर पड़ती है, सत्या जी मानो इशारे में ही ठाकुर जी से अपने मन की बात कह देती हैं। हे श्रीकृष्ण मुझे भी अपने चरणों की दासी बना लीजिए। सत्या जी के मन के भाव को जानकर भगवान् श्री कृष्ण राजा नग्नजित के पास जाकर के कहते हैं। महाराज -

श्लोक:- नरेन्द्र याच्ञा कविभिर्विगर्हिता
राजन्यबन्धोर्निजधर्मवर्तिनः ।

तथापि याचे तव सौहृदेच्छया
कन्यां त्वदीयां न हि शुल्कदा वयम् ॥

⇒ मै क्षत्रिय हूँ, और क्षत्रियों को कभी याचना नही करनी चाहिये, लेकिन आज मैं आपसे याचना करता हूँ, महाराज नग्नजित् ने कहा क्या याचना ? भगवान् श्री कृष्ण ने कहा आप अपनी कन्या का हमे दान कर दे, मैं आपकी कन्या का हाथ मांगता हूँ, तब महाराज नग्नजित ने कहा, मैं अपनी कन्या का विवाह तो आपके साथ कर दू, लेकिन मैने जो प्रतिज्ञा की है वो कैसे पूर्ण होगी? भगवान् श्री कृष्ण ने नग्नजित से कहा आप चिन्ता न करो, आपकी प्रतिज्ञा को मैं पूर्ण करूगा, सभी के देखते - देखते भगवान् श्री कृष्ण ने -

श्लोक- आत्मानं सप्तधा कृत्वा न्यगृह्णाल्लीलयैव तान् ।

Date:
Page: 28

⇒ अपने सात रूप बनाकर के खेल-खेल में ही उन सातो बैलों को नाथ दिया। तब नग्नजित ने अपनी कन्या सत्या का विवाह भगवान श्री कृष्ण के साथ किया।

⇒ ये भगवान श्री कृष्ण का पहला ऐसा विवाह हुआ जिसमे भगवान को बहुत सारा दहेज मिला। राजा नग्नजित ने दहेज मे क्या दिया?

श्लोक:- दशधेनुसहस्राणि पारिबर्हमदाद् विभुः।
युवतीनां त्रिसाहस्रं निष्कग्रीवसुवाससाम् ॥

⇒ दस हजार गायो का दान किया, तीन हजार दासियाँ दान की, सोने के आभूषणो से अपने शरीर को ढके हुये, नौ हजार हाथी, और अनेक रथ घोड़े दान मे दिये, इस प्रकार भगवान श्री कृष्ण छठा विवाह सत्या जी के साथ करते हैं, और सत्या जी को साथ लेकर द्वारका आते हैं। बन्धुओ इस प्रकार भगवान का छठा विवाह सम्पन्न होता है, बोलिये सत्यावल्लभ लाल की जय।

⇒ शुकदेव जी कहते - राजन परीक्षित भगवान श्री कृष्ण का सातवा विवाह भद्रा जी के साथ हुआ भद्रा जी की माता का नाम श्रुतकीर्ति था, और भाई का नाम सन्तर्दन था। भद्रा जी केकय राज की राजकुमारी थी। भद्रा जी के भाई सन्तर्दन ने स्वयं ही भद्रा जी को भगवान श्री कृष्ण को सौप दिया, आज भगवान ने भद्रा जी का पाणिग्रहण किया हैं। इस

Date:
Page: २९

⇒ प्रकार भगवान श्री कृष्ण का सातवा विवाह भद्रा जी के साथ सम्पन्न हुआ। बोलिये भद्रा वल्लभ लाल की जय।

(8)
⇒ भगवान श्री कृष्ण का आठवा विवाह लक्ष्मणा जी के साथ हुआ। लक्ष्मणा जी मद्रप्रदेश की राज कुमारी है। मद्र देश के राजा (मद्रास, दक्षिण भारत) ने अपनी बेटी का स्वयंवर किया, उस स्वयंवर मे भगवान श्री कृष्ण गये, लक्ष्मणा ने भी भगवान का वरण कर लिया, भगवान लक्ष्मणा जी को लेकर द्वारका आये। इस प्रकार भगवान का आठवा विवाह सम्पन्न हुआ, बोलिये लक्ष्मणा वल्लभ लाल की जय।

⇒ बन्धुओं भगवान के आठ विवाह प्रमुख है। और भगवान की आठ प्रमुख पटरानियां हैं।

(1) रुक्मिणी, (2) जाम्बवती (3) सत्यभामा

(4) कालिन्दी (5) मित्रविन्दा (6) सत्या

(7) भद्रा (8) लक्ष्मणा

⇒ शुकदेव जी कहते हैं - राजन परीक्षित भगवान के आठ विवाह सम्पन्न होने के बाद मे सोलह हजार एक सौ विवाह एक ही बार मे हुए।

⇒ राजा परीक्षित जी ने पूछा - गुरुदेव भगवान के सोलह हजार एक सौ विवाह एक साथ, एक ही बार मे कैसे हुए?

⇒ शुकदेव जी कहते हैं भौमासुर नाम का एक दैत्य था प्राग्ज्योतिषपुर नाम का नगर बनाकर

Date:
Page: 30

⇒ के उसी मे रहता था। और उसकी प्रतिज्ञा थी २०००० हजार राजकन्याओं के साथ एक ही मण्ड़प मे, मैं विवाह करुगा, भौमासुर ने सोलह हजार एक सौ राजकन्याओं का हरण करके अपने कारागार मे बन्द करके रखा हैं और विचार करता हैं, २०००० हजार जब हो जाये तब एक ही साथ २०००० कन्याओं से विवाह करु।

⇒ भौमासुर के कारागार मे बन्द उन सोलह हजार एक सौ कन्याओं ने किसी प्रकार द्वारकाधीश तक सूचना भेजी हे गोविन्द हमारा भी उद्धार करो, और सभी ने भगवान का नाम लेकर के रोकर के गोविन्द को पुकारा।

०ः भजन ः०

दरबार मे बंशी वाले के, दुःख दर्द मिटाए जाते हैं
दुनियाँ के सताए लोग यहाँ, सीने से लगाए जाते हैं

① संसार नही है रहने को, यहाँ दुःख ही दुःख है सहने को
भर-भर के प्याले अमृत के यहाँ रोज पिलाए जाते हैं
दरबार मे - - - - - -

② पल-पल मे आशा निराशा भई,
दिन-दिन घटती पल-पल बढ़ती
दुनियाँ जिसको ठुकरा देती
वह गोद बिठाए जाते हैं।
दरबार मे - - - - - -

Date:
Page: 31

(3) किस्मत के मारे कहा रहे,
दुनियाँ छोटी पड़ जाती हैं
जो शरण श्याम की आते हैं
पलकों पे बिठाये जाते हैं।
दरबार मे - - - - - - -

(4) बनवारी जो मझधार मे हैं
जिनका ना कोई सहारा हैं
दो आंसू गिरा दे चरणो पर
फिर गले लगाये जाते हैं।
दरबार मे - - - -

(5) सर रखकर तली पर आ जाओ
हसरत हैं जिन्हे कुछ पाने की
मेरे गोविन्द को पाने के लिए
कुछ कष्ट उठाए जाते हैं
दरबार मे - - - - - - -

⇒ उन कन्याओं की प्रार्थना सुनकर एक दिन भगवान ने योजना बनाई और अपने गरुण का स्मरण किया गरुड़ जी पधारे, गरुड़ पर भगवान विराजमान हुए तभी भगवान की तीसरी पत्नी सत्यभामा जी ने आकर भगवान से कहा स्वामी आप इतनी दूर अकेले जा रहे हो, मैं भी आपके साथ चलूगी, भगवान ने सत्यभामा जी से कहा आप अवश्य चलो, क्यों कि आज मैं जिस कार्य के लिए जा रहा हूं, वो आपके बिना पूर्ण नही होगा

Date:
Page: 32

→ बन्धुओ भौमासुर पृथ्वी माता और भगवान का पुत्र था। जब भगवान ने वराह अवतार धारण किया था, पृथ्वी का उद्धार करने के लिये, और भगवान अपने दाँतो पर पृथ्वी को उठाकर के ला रहे थे, तभी पृथ्वी ने भगवान के अंग का स्पर्श प्राप्त किया, भगवान का दर्शन, भगवान का स्पर्श अमोघ है, उसका कोई फल होना चाहिए, पृथ्वी देवी ने भगवान का अंग स्पर्श प्राप्त किया, उसका फल पृथ्वी माता को प्राप्त हुआ, भू देवी गर्भवती हो गयी, भू देवी ने गर्भ को धारण किया,

⇒ किन्तु हिरण्याक्ष असुर से भयभीत होने के कारण पृथ्वी माता के हृदय मे उसकी छाया विराजमान हो गयी। पृथ्वी मैया ने भगवान वराह और हिरण्याक्ष का युद्ध देखा था, इसलिए उनके अन्दर भय व्याप्त हो गया, और भू देवी के गर्भ मे जो बालक आया, वो भगवान का पुत्र तो था लेकिन असुर हो गया, भूमि का पुत्र है, इसलिए इसका नाम भौमासुर पड़ा, भौम माने मंगल, मंगलवार को भौमवार भी कहते हैं वैज्ञानिक लोग कहते मंगलपर जीवन है। पृथ्वी का बेटा है मंगल, यदि पृथ्वी पर जीवन है तो मंगल पर भी जीवन है।

⇒ जब भौमासुर असुर प्रगट हुआ तो भगवान इसे मारने जा रहे थे, तभी भू देवी ने कहा प्रभु इसे छोड़ दो, यह मेरा बेटा हैं, तो वराह भगवान ने भू देवी से कहा ठीक हैं देवी, आप कहती हो तो मैं इसे

Date:
Page: 33

छोड़ देता हूँ, लेकिन जिसदिन आप कहोगी इसे मार दो, उस दिन मैं इसे मार दूंगा, भू देवी ने विचार किया मैं क्यों कहूँगी मेरे बेटे को मार दो, कोई माँ अपने बेटे को मारने के लिए क्यों कहेगी? लेकिन भगवान की लीला बड़ी विचित्र है, भगवान जिससे जो चाहते हैं, वो करा लेते हैं, और कहलवा लेते हैं। वही भू देवी कृष्णावतार में सत्यभामा के रूप मे प्रगट होकर के आई हैं, भगवान सत्यभामा जी को साथ लेकर जाने के लिए इसीलिए तैयार हो गये क्यों कि भगवान जानते हैं, जब तक सत्यभामा जी नही कहेगी प्रभू इस भौमासुर को मार दो, तब तक मैं भौमासुर का वध नही कर सकता।

⇒ शुकदेव जी कहते राजन् परीक्षित आज भगवान द्वारकाधीश सत्यभामा जी को साथ लेकर गरुड़ पर बैठकर प्राग्ज्योतिषपुर के लिए चल पड़े

श्लोक- सभार्यो गरुड़ारुढः प्राग्ज्योतिषपुरं ययौ ॥

⇒ आज भगवान सत्यभामा जी के साथ प्राग्ज्योतिषपुर पहुँचे, और भौमासुर के नगर के ऊपर भगवान ने आक्रमण कर दिया, भौमासुर का सेनापति था मुर, वह बड़ा मायावी था, उसने नगर की सुरक्षा के लिए अनेक प्रकार के यन्त्र लगा रखे थे, नगर के अन्दर कोई प्रवेश नही कर सकता था, वो यन्त्र किसी को दिखाई भी नही पड़ते थे, किन्तु जैसे ही कोई नगर मे प्रवेश करता था, यन्त्र के द्वारा उसके टुकड़े, टुकड़े हो जाते थे।

Date:
Page: 34

⇒ भगवान श्री कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र के द्वारा मुर की समस्त माया का संहार किया, और नगर मे प्रवेश किया तो मुर युद्ध करने के लिए आया, उस मुर नाम के दैत्य को भगवान ने मार दिया, मुर दैत्य को भगवान ने मारा इसीलिए भगवान का नाम "मुरारी" पड़ गया।

⇒ इसके बाद मे भगवान और भौमासुर के मध्य मे युद्ध हुआ, तो उस युद्ध मे भगवान ने बड़ी अद्भुत लीला की, भौमासुर जब भगवान को बाण मारता, तो वो बाण आकर के भगवान को लगते, और भगवान जब मारे भौमासुर को तो बाण बगल से निकल जाये, भगवान का अस्त्र, शस्त्र अमोघ हैं, भगवान का लक्ष्य कभी विचलित नही हो सकता, लेकिन भगवान जब लीला करते हैं, फिर तो लीला ही होती हैं, सत्यभामा जी ने जब देखा कि बाण आकर के गोविन्द को लग रहे हैं, तो वह व्याकुल हो गई। और उच्च स्वर मे गोविन्द से बोली (हन्यताम)-2 प्रभु इस दुष्ट का वध कर दो।

⇒ भगवान ने सत्यभामा जी से कहा देवी मैं इसी क्षण की प्रतीक्षा के लिए तो यह सब लीला कर रहा था, अब आपने स्वयं अपने मुख से कह दिया इसका वध कर दो, तो मुझे इसका वध करने मे कोई समस्या नही।

⇒ सभी के देखते-देखते भगवान श्रीकृष्ण ने छुरे के समान तीखी धार वाले चक्र से हाथी पर बैठे हुए भौमासुर का सिर काट डाला

Date:
Page: 35

⇒ और भौमासुर की मृत्यु हो गई। इसके बाद कारागार मे बन्द सोलह हजार एक सौ राज कन्याओं को भगवान ने मुक्त किया, भगवान ने कहा अब आप लोग अपने - अपने घर जा सकती हो, उन कन्याओं ने गोविन्द से कहा हे नाथ, अब हम कहाँ जाए ? कोई भी क्षत्रिय हमे स्वीकार नही करेगा, हमारे माता, पिता भी हमे स्वीकार नही करेगे, हमारा जीवन तो नर्क मय हो जायेगा, क्यों कि हम इतने दिनों तक एक राक्षस के यहाँ रही हैं, आपने इस असुर के आतंक से हमे मुक्त किया हैं, अब अपने चरणों मे हमे भी स्थान प्रदान करो।

⇒ भगवान श्री कृष्ण ने सोलह हजार एक सौ कन्याओं से कहा आप लोग चिन्ता न करो, जिसका कोई नही, उसका मैं हूँ, तुम्हे तुम्हारे घर वालो ने नही अपनाया कोई बात नही, मैं तुम्हे अपनाऊंगा। भगवान सभी कन्याओं को लेकर के द्वारका आये, और एक मुहूर्त मे सोलह हजार एक सौ कन्याओं के साथ विवाह करके उनको स्वीकार कर लिए। बोलो द्वारकाधीश भगवान की जय।

⇒ बन्धुओ भगवान की जो प्रमुख आठ पटरानियाँ हैं यह भगवान की शक्तियाँ हैं। भगवान नारायण के द्वारा बनाई गई, आठ प्रकार प्रकृति ही भगवान की आठ पत्नियाँ बनकर के आयी।

श्लोक ⇒ भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।

अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥

Date:
Page: 36

⇒ पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार, इसमे से पाँच तो हमारे महाभूत हैं जिनसे हमारा शरीर बना, पंच तत्त्व पृथ्वी, जल अग्नि, वायु, आकाश, ये हमारे बाहर हैं, और चार तत्त्व मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार हमारे भीतर हैं।

⇒ जिसमे से चित्त नाम का तत्त्व जो हैं हमारे भीतर, जिसको हम आत्मा कहते हैं, आत्मा परमात्मा का ही रुप हैं, इसलिए इस चित्त नामक तत्त्व को भीतर से हटाओ, ये तो परमात्मा हैं, बचे कितने? मन, बुद्धि और अहंकार, अहंकार का मतलब यहाँ पर आप अभिमान मत लीजियेगा, अहंकार का मतलब देहाभिमान, इस प्रकार से पृथ्वी, जल अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि, अंहकार, ये आठ तत्त्व ही भगवान की प्रमुख आठ पत्नियाँ बनकर के पधारे।

⇒ भगवान की ये आठ प्रमुख पत्नियाँ हैं अर्थात ये भगवान की शक्तियाँ हैं, भगवान इन शक्तियों के बिना अधूरे हैं, भगवान जब लीला करने आये हैं, तो शक्ति सम्पन्न होना चाहते हैं। और जब वह शक्ति सम्पन्न हो जाते हैं, तो वह अपनी लीला पूर्ण करते हैं।

⇒ अब जानते हैं, भगवान ने जिन सोलह हजार एक सौ कन्याओं से विवाह किया वह कौन हैं?

⇒ बन्धुओ उपासना काण्ड, कर्मकाण्ड, इनमे भगवान की आरधना के सोलह हजार एक सौ मन्त्र ही

Date:
Page: 37

⇒ भगवान की सोलह हजार एक सौ पत्नियाँ हैं।

⇒ अब कुछ लोग प्रश्न करते हैं, भगवान ने इतने विवाह क्यों किए, कैसे किए?

⇒ अरे भैया भागवत जी श्रवण करेगे तो पता चलेगा न क्यों किए, भगवान ने किसी स्त्री के साथ विवाह नही किया हैं, अपने ही तत्वो से, अपने ही आराधना के मंत्रो से ही भगवान ने विवाह किया हैं। भगवान ने द्वारका मे सोलह हजार एक सौ आठ भवन बनवा दिए और प्रत्येक रानी के साथ अलग-अलग रुप मे भगवान उनके साथ रहने लगे, जिस भी भवन मे प्रवेश करो भगवान उस भवन मे अपनी रानी के साथ विराजित होकर दर्शन देते थे, ऐसी दिव्य भगवान की लीला।

⇒ आजकल के लोग कहते महाराज भगवान श्री कृष्ण ने तो सोलह हजार एक सौ आठ विवाह किए थे, हम दो, चार विवाह कर ले, इसमे क्या बुराई हैं।

⇒ भागवत के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण एक ही समय पर अपनी सारी पत्नियों के साथ सोलह हजार एक सौ आठ रुप प्रगट करके उनके महलो मे उनके साथ विराजते थे, तो ठाकुर जी तो सर्वसमर्थवान हैं। वह तो एक ही समय पर सभी को दर्शन दे सकते हैं। किन्तु हम एक समय पर एक के ही रहेगें, इसलिए भैया हमको एक ही विवाह करना चाहिए, भगवान बनने का प्रयास नही करना चाहिए। और अगर ज्यादा ही इच्छा हैं कि एक विवाह हो गया, एक और

Date:
Page: 38

⇒ करना है, तो पहली पत्नी से पूछ लेना, इतनी मारेगी कि दूसरे विवाह के विषय मे चिन्तन ही नही करेगा। जो लोग यह कहते हैं कि भगवान् ने ऐसा किया था हम क्यों नही कर सकते? उनसे मेरा यह कहना है भैया भगवान् ने तो जन्म के सातवें दिन ही पूतना के स्तनों पर लगे विष का पान किया था, तुम भी एक, दो जहर के प्याले पी कर दिखाओ, भगवान् ने तो गिरिराज पर्वत उठाया था, तुम भी एक, आध पर्वत को उठाकर के दिखा दो। भगवान् ने किया तो बहुत कुछ है, लेकिन हमको तो वही समझ मे आता है, जो हमारे फायदे का हो। इसलिए कृष्ण ने जो कहा हैं वो करो, राम ने जो किया है वो करो, क्यों कि कृष्ण ने जो किया है, वो आप कभी कर नही सकते, राम ने जो किया है, वो आपके हक में हैं, इसलिए कृष्ण की कथनी, राम की करनी को अपनाओ।

⇒ भगवान् श्रीकृष्ण सर्वसमर्थवान ईश्वर हैं, इसलिए वह कुछ भी कर सकते हैं।

चौ० समरथ को नहीं दोष गुसाईं ।
रवि पावक सुरसरि की नाईं ॥

किन्तु जो भगवान् श्रीकृष्ण कर सकते हैं, वह हम नही कर सकते। बन्धुओ भगवान् जब सोलह हजार एक सौ कन्याओं के साथ विवाह करते हैं, तो उद्धव जी भगवान् से कहते हैं

Date:
Page: 39

⇒ गोविन्द आपके सारे विवाह इतने जल्दी-जल्दी मे हो गये कि हम आपका ठीक से स्वागत भी नही कर पाये, इसलिए हम चाहते हैं कि इस बार आपका स्वागत विशेष प्रकार से (नये ढंग से) किया जाये। भगवान ने उद्धव जी से पूछा आप क्या करना चाहते हो हमारे स्वागत मे?

⇒ उद्धव जी ने भगवान् से कहा, संसार मे किसी का विवाह होता हैं, तो वहा फुव्वारे जल के होते हैं, आपके स्वागत मे हम दूध के फुव्वारे रखेंगे, भगवान ने उद्धव जी से कहा उद्धव मुझे ये तुम्हारा स्वागत का नया तरीका पसन्द नही आया मेरे स्वागत के लिए तुम गौमाता का दूध बर्बाद करोगे?

⇒ उद्धव जी भगवान् से जिद करने लगे, गोविन्द आप नही समझ रहे हो, बहुत अच्छा लगेगा, देखने वाले लोग आनन्दित हो जायेगे, भगवान् बोले उद्धव तुम्हारी इच्छा हैं तो तुम करो, लेकिन मेरी इच्छा नही हैं। ठाकुर जी उद्धव जी को यह बताना चाहते हैं कि मेरी इच्छा सर्वोपरि हैं। भगवान कहते उद्धव तुम इतना दूध लाओगे कहाँ से, उद्धवजी ने कहा गोविन्द द्वारका मे हर घर मे गैया है, द्वारका के लोगों से जाकर के कहूँगा, सब लोग एक-एक लोटा दूध लेकर के आओ, और फव्वारे मे डाल दो सब लोग अपने-अपने घर से दूध लेकर के आयेगे तो पर्याप्त मात्रा मे दूध एकत्रित हो जायेगा।

⇒ उद्धव जी ने द्वारका मे घोषणा करा दी कि सभी लोग अपने-अपने घर से एक-एक लोटा गाय का दूध लेकर के प्रातःकाल 4 बजे महल मे आयेगे और मुख्यद्वार पर लगे

Date:
Page: 40

⇒ फुव्वारे मे दूध डाल देगें, जब द्वारका के लोगों ने यह घोषणा सुनी तो, सब लोगों के मन में एक साथ एक ही भावना प्रगट हुई, अरे कहाँ सुबह, सुबह दूध लेकर के जायेगें, बाकी सब तो दूध लेकर के ही जायेगें, हम तो सुबह के 4 बजे जल लेकर के चले जायेगें, कौन जान पायेगा, हम जल लेकर के गये थे या दूध, ऐसा विचार किसी एक व्यक्ति के मन मे नहीं आया, सभी के मन मे आया।

⇒ प्रातःकाल सभी लोटे मे जल भरके चल दिए महल की ओर, आपस मे सभी बात करते हुए जा रहे हैं, अरे भैया मैं तो द्वारकाधीश के स्वागत के लिए गिर गाय का दूध लेकर के जा रहा हूँ, और लेकर के जल ही जा रहे हैं। सब जाकर के फुव्वारे मे जल डाल आये, और जैसे ही सुबह भगवान अपनी रानियों के संग पधारे, भगवान ने उद्धव जी से कहा, कहाँ हैं तुम्हारा दूध का फुव्वारा? चलाओ उसे, सभी द्वारका वासियों के सामने जैसे ही उद्धव जी ने फुव्वारा चलाया तो उसमे से एक बूंद जल नही निकला, उद्धव जी ने फुव्वारे के पास जाकर के देखा तो, उसमे तो लीटरो पानी भरा हैं। भगवान ने उद्धव जी से कहा, उद्धव मेरी इच्छा के विरुद्ध संसार मे कोई कृत्य नाही होता, उद्धव जी को समझ मे आ गया कि गोविन्द की जो इच्छा होगी, वही होगा,

⇒ इसलिए भक्त को अपनी इच्छा प्रगट ही नहीं करनी चाहिए और यदि इच्छा प्रगट हो तो ठाकुर जी को निवेदित कर दे, है

Date:
Page: 41

⇒ ठाकुर जी यदि मेरे लिए उचित हो तो पूर्ण करना नहीं तो आप जो करोगे, वो मुझे स्वीकार हैं।

⇒ ठाकुर जी सदैव वही करते हैं, जो हमारे लिए उचित होता हैं। इसलिए सदैव यही विचार करना चाहिए कि ठाकुर जी वही करेंगे जो हमारे लिए उचित होगा, क्यों कि वह नही होता है जो तुम चाहते हो, होता वह हैं जो तुम्हारे लिए उचित होता हैं। हमारे सरकार तो बड़े कृपालु हैं।

⇒ भजनः

किस देवता ने आज मेरा दिल चुरा लिया
दुनियां की खबर ना रही, तन को भुला दिया।

(1) रहता था पास मे सदा, लेकिन छिपा हुआ
करके दया दयाल ने पर्दा उठा लिया,
दुनियां की — — — — — — —

(2) सूरज न था न चाँद था, बिजली न थी यहाँ
एकदम वो अजब शान का जलवा दिखा दिया
किस देवता ने — — — — —

(3) करके कसूर मांफ मेरे, जन्म, जन्म के
ब्रह्मानंद अपने चरण मे, मुझको लगा लिया
किस देवता ने आज — — — —

⇒ बन्धुओ ऐसी द्वारकाधीश की ये अदभुत लीलायें जो एक बार श्रवण करे, उसको बार-बार श्रवण पान का मन करे। भगवान के सोलह हजार एक सौ आठ विवाह की कथा के बाद मे प्रणय कलह की कथा आती हैं, भागवत मे

Date:
Page: 42

⇒ ये प्रणय कलह क्या हैं? ये गृहस्थ आश्रम मे रहने वाले गृहस्थियों के सीखने का एक विषय हैं। प्रणय अर्थात प्रेम भरा, कलह अर्थात झगड़ा (क्लेश), भगवान रुक्मिणी जी के साथ मे एक मीठी, नोक, झोंक करते है, उसका वर्णन किया गया हैं।

⇒ भगवान श्रीकृष्ण जीवन मे तरसते रह गये कि मेरा कभी मेरी पत्नी से झगड़ा होता, मेरी पत्नी नाराज होती, मुझसे कुछ झगड़ा, क्लेश करती, तो समझ मे आता कि झगड़ा करने पर स्त्री कैसी लगती हैं देखने मे, स्त्री के दो रूप हैं, कामिनी और भामिनी, जब वह प्रसन्न हो तो कामिनी, और क्रोध से युक्त हो तो भामिनी, द्वारकाधीश के जीवन मे कभी ऐसा अवसर नही आया कि उनकी किसी भी पत्नी के साथ प्रणयकलह हुई हो।

⇒ एक दिन भगवान ने योजना बनाई, कि आज मैं कुछ ऐसा करू, कि झगड़ा हो जाए, क्या योजना बनाई भगवान ने? शुकदेव जी कहते है-

श्लोक- कर्हिचित् सुखमासीनं स्वतल्पस्थं जगद्गुरुम्।

पतिं पर्यचरद् भैष्मी व्यजनेन सखीजनैः ॥

⇒ एक दिन भगवान श्रीकृष्ण रुक्मिणी जी के साथ पलँग पर बैठे हुए थे। अगल, बगल मे खड़ी दासियाँ पंखा झल रही थी, कुछ देर तक भगवान रुक्मिणी जी को देखते रहें, और फिर भगवान ने कहा देवी, एक बात बताओ

Date:
Page: 43

⇒ मेरे जैसे व्यक्ति का आपने वरण किया, पत्र लिखकर के आपने बुलाया, आपको तो शिशुपाल जैसा राजा चाहता था, फिर भी आपने मेरे जैसे व्यक्ति को चुना, क्या मिला आपको ? मुझे तो लगता है आपने बहुत बड़ी भूल की हैं, मैं तो कही का राजा भी नही हूँ, द्वारका के राजा तो महाराज उग्रसेन हैं, मैं तो उनका छड़ीदार हूँ, और आपने मेरे जैसे व्यक्ति का वरण किया, आप तो राजकुमारी हो, इतनी सुन्दर हो, मैं कहा काला, कलूटा

⇒ मेरे इतने शत्रु है पूरी दुनियाँ मे, कि शत्रुओं के भय से भयभीत होकर समुद्र के अन्दर छिपकर के द्वारकापुरी बसाकर के मैं रहता हूँ, मेरे जैसे भगोड़े व्यक्ति के साथ आपने विवाह किया क्या मिला आपको ?

⇒ भगवान कहे जा रहे थे, और रुक्मिणी जी चुपचाप सुन रही थी, रुक्मिणी जी विचार करने लगी. भगवान आज क्या बोले जा रहे हैं?

⇒ तब तक भगवान रुक्मिणी जी से बोले देवी जो किया आपने, अच्छा नही किया, लेकिन अभी भी कुछ बिगड़ा नही हैं, अगर आज भी आप चाहो, तो आप किसी क्षत्रिय के साथ विवाह कर सकती हो,

श्लोक - अथात्मनोऽनुरूपं वै भजस्व क्षत्रियर्षभम् ।

⇒ भगवान कहते देवी आप अपने मन के अनुरूप जो आपको पसन्द आए, उसके साथ

Date:
Page: 44

⇒ आप जाना चाहो तो जा सकती हो, मुझे पीड़ा भी दुःख नही होगा, यदि आप चली जाओगी

⇒ अब आप विचार करो, इतनी बड़ी बात पति पत्नी से कह दे, कि आप चली जाओ, मुझे कोई कष्ट नही होगा, इतना सुनने के बाद उस स्त्री की क्या दशा होगी, भगवान की बाते सुनकर रुक्मिणी जी तो मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। उनको लगा भगवान मेरा त्याग कर रहे है।

⇒ रुक्मिणी जी मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिरती तब तक भगवान ने पलंग से उछलकर के रुक्मिणी को संभाल लिया, भगवान चतुर्भुज हो गये, दो हांथो से भगवान ने रुक्मिणी जी को संभाला, और दो अन्य हांथो से रुक्मिणी के केशो को बटोरकर के भगवान ने जूड़ा बनाया, रुक्मिणी के केश खुल गये थे, और जब वह भूमि पर गिरने लगी तो उनके केश भूमि का स्पर्श कर रहे थे, सौभाग्यवती स्त्री के केश भूमि का स्पर्श करे, और केश खुले रहे, ये मर्यादा नही, सौभाग्यवती स्त्री के केश तो बंधे रहने चाहिए।

⇒ सौभाग्यवती स्त्री के केश यदि खुले रहे तो ये शास्त्र मे अच्छा नही माना जाता, रुक्मिणी जी के केश खुल गये, तो भगवान ने अपने हांथो से स्वयं जूड़ा बनाया, रुक्मिणी जी की जब मूर्छा खुली तो रुक्मिणी जी रोने लगी, रुक्मिणी जी ने भगवान से कहा हे नाथ मेरा त्याग मत करो, आपके चरणों को छोड़कर के ये दासी कहाँ जायेगी, भगवान ने कहा

Date:
Page: 45

⇒ देवी अरे मै तो मनोविनोद कर रहा था, तुमसे मजाक कर रहा था, रुक्मिणी जी बोली ऐसी कैसी मजाक, तब भगवान श्री कृष्ण ने कहा-

श्लोक- अयं हि परमो लाभो गृहेषु गृहमेधिनाम् ।
यन्नर्मैनीयते यामः प्रियया भीरु भामिनि ॥

⇒ हे भामिनी ये गृहस्थ जीवन का परम सुख हैं, कभी-कभी पति, पत्नी के बीच मे कुछ खटपट होनी चाहिए, खटपट भी होना जरूरी हैं भगवान कह रहे हैं। कभी-कभी आपस मे खटपट हो जाने पर आपस मे प्रेम और बढ़ जाता हैं

⇒ जैसे केवल मीठा-मीठा रसगुल्ला खाते रहो तो मन ऊब जाता हैं, फिर चटनी और अचार खाने का मन करता हैं, उसी प्रकार गृहस्थ जीवन मे थोड़ा कभी-कभी नोक झोंक खटपट चलती रहती हैं, तभी ये गृहस्थ की यात्रा सुखद बनती हैं। यह गृहस्थ जीवन का परम लाभ हैं।

⇒ इस कथा का मूल अर्थ यह हैं, कि व्यक्ति के अन्दर हमको दोष कब दिखने लगते हैं? हमारी द्रष्टि दोष युक्त कब हो जाती हैं, ऐसा दो स्थिति मे होता हैं। या तो सामने वाला व्यक्ति बहुत पास हमारे रहे, या फिर सामने वाला व्यक्ति बहुत दूरी बना ले हमसे, अति दूरात अति सामीप्य इन दो स्थितियों में दोष जन्म लेता हैं, जब स्त्री, पुरुष विवाह के बन्धन बंध जाते हैं, तो विवाह के पश्चात् एक दूसरे के सामीप्य के कारण दोष दिखने लगते

Date:
Page: 46

⇒ हैं, और जिस दोष की वजह से उनके प्रेम मे विघ्न उत्पन्न होने लगता हैं। खटास उत्पन्न हो जाती हैं। इसलिए ठाकुर जी यहाँ पर कह रहे हैं, न तो ज्यादा किसी के पास रहो, न तो ज्यादा किसी से दूर रहो, पत्नी से भी ज्यादा सामीप्य मत करो सदैव उसके पास ही मत रहो, कभी-कभी प्रणय कलह अर्थात- थोड़ी बहुत नोक झोंक करके दूरी बना लिया करो। इससे आपका प्रेम बना रहेगा, नही तो विवाह से पहले, लड़की को लड़के मे साक्षात नारायण दिखाई देते हैं, और लड़का को लड़की मे साक्षात लक्ष्मी दिखाई देती हैं, लेकिन विवाह के बाद मे लड़की को लड़के मे रावण दिखाई पड़ता हैं, और लड़का को लड़की मे साक्षात सूर्पणखा दिखाई पड़ती हैं।

⇒ एसा क्यों होता है? ये अति सामीप्य के कारण होता हैं। इसलिए हमे सदैव न किसी के अति सामीप्य रहना चाहिए न दूरस्थ, मध्यस्थ रहना चाहिए। और अगर आपको एसा लग रहा हैं ज्यादा मिलना, जुलना हो रहा हैं, ज्यादा सामीप्य हो रहे हैं, तो बीच मे थोड़ा सा कोई एसा नाटक ही सही, करके थोड़ा सा प्रणय कलह, नोक-झोंक करो, इससे प्रेम बढ़ेगा,

⇒ आगे कथा आती हैं, भगवान के वंशवृद्धि की, शुकदेव जी राजन परीक्षित को भगवान के वंश का वर्णन करते हैं। शुकदेव जी कहते- परीक्षित भगवान श्री कृष्ण की प्रत्येक पत्नी ने दस-दस, पुत्र और एक - एक पुत्री को जन्म दिया। और भगवान श्री कृष्ण के एक-एक पुत्र ने दस

Date:
Page: 47

⇒ -दस पुत्र और एक पुत्री को जन्म दिया इतने नाती, पोता भगवान के हुए, इतना बड़ा वंश भगवान का, भगवान के इन पुत्र, पौत्रों को शिक्षा देने के लिए तीन करोड़ एक सौ अट्ठासी हजार अध्यापक नियुक्त किए गये थे।

⇒ इतने बड़े परिवार का संवर्धन करके मानो भगवान ने उपदेश दिया हैं, कि कलियुग आने वाला हैं, जिसकी संख्या अधिक होगी वही पृथ्वी पर राज्य करेगा, इसलिए अपनी संख्या बढ़ाओ, अकेले 56 करोड़ यदुवंशी भगवान के ही खानदान के थे। जिधर निकल जाते थे किसी की हिम्मत नही होती थी, बोलने की, किन्तु आजकल तो एक नारा चला हैं, बड़ा जोर का हम दो हमारे दो, धीरे-धीरे इसमे थोड़ा और परिवर्तन हो गया अब तो लोग कहते हम दो हमारा एक वही दूसरी ओर कुछ लोग जो हमारे विरोधी हैं, वह कहते हम दो हमारे पच्चीस, अब जरा विचार करिए यदि ऐसी ही सोच रही हिन्दुओं की तो बहुत जल्द हम फिर से गुलाम हो जायेगें।

⇒ इसलिए इन कथाओं के माध्यम से हिन्दुओं मे जागरूकता फैलाने की आवश्यकता हैं।

⇒ आगे वर्णन आता हैं भगवान के पौत्र के विवाह का, प्रद्युम्न जी महाराज जो भगवान के पुत्र हैं, उनके पुत्र अनिरुद्ध, इनका विवाह बाणासुर की बेटी ऊषा के साथ हुआ। बाणासुर प्रह्लाद जी का प्रपौत्र हैं, प्रह्लाद जी के पुत्र विरोचन, विरोचन के पुत्र महाराज बलि

Date:
Page: 48

⇒ और बलि के पुत्र बाणासुर, बाणासुर की बेटी ऊषा, ऊषा ने स्वप्न में भगवान् के पौत्र अनिरुद्ध को देखा, और ऊषा ने अनिरुद्ध को अपना प्रियतम मान लिया, जब नींद खुली तो ऊषा ने अपनी सहेली चित्रलेखा से कहा, मैने आज स्वप्न मे एक पुरुष को देखा हैं। और उसी को मैने अपना स्वामी मान लिया हैं।

⇒ चित्रलेखा ने पूछा वो कौन हैं? कैसा दिखता हैं? तो जैसे-जैसे ऊषा ने बताया, चित्रलेखा ने वैसा चित्र बनाया, एकबार चित्र बनाया तो कृष्ण भगवान् का चित्र बन गया, दुबारा बनाया तो प्रद्युम्न जी का चित्र बना, तीसरी बार मे अनिरुद्ध का जब चित्र बना, तो चित्रलेखा ने पूछा यही हैं? ऊषा ने कहा हाँ यही हैं।

⇒ फिर तो ऊषा की सहेली चित्रलेखा ने रातोरात अनिरुद्ध जी का अपहरण कर लिया, और अनिरुद्ध जी को लाकर ऊषा के महल मे छोड़ दिया, चार महीने तक अनिरुद्ध जी ऊषा के महल मे रहे, बाद मे जब बाणासुर को पता चला तो बाणासुर ने अनिरुद्ध को बंदी बना लिया, ये बात जब भगवान् श्री कृष्ण को पता चली, तो भगवान श्री कृष्ण ने जाकर के बाणासुर से युद्ध किया, और उस युद्ध मे बाणासुर को पराजित करके बाणासुर की [996] भुजाओं को काट दिया, बाणासुर जान गया, ये भगवान् हैं, साक्षात ईश्वर हैं। फिर तो बाणासुर ने अपनी का कन्यादान किया और अपनी बेटी को अनिरुद्ध को जी को सौंप दिया।

Date:
Page: 49

⇒ भगवान श्री कृष्ण ऊषा और अनिरुद्ध को लेकर के द्वारका आते हैं।

⇒ भगवान ने प्रह्लाद जी को वचन दिया था कि तुम्हारे वंश में जन्म लेने वाले किसी भी व्यक्ति का मैं वध नही करुगा, इसलिए भगवान ने बाणासुर के अंहकार को नष्ट करके उसे छोड़ दिया, उसका वध नही किया।

⇒ इसके बाद कथा आती हैं, भगवान ने अपने पुत्रों को बड़ा सुन्दर उपदेश किया हैं। भगवान जानते हैं कि मेरे वंश का विनाश जब कभी भी होगा, तो ब्राह्मणों के शाप से ही होगा, और तो कोई मेरे यदुवंशियों को जीत नही सकता, मेरे वंश के लोगो को पराजित नही कर सकता, अगर ये मारे जायेगें, समाप्त होगे तो ब्राह्मणों के शाप से ही होगें।

⇒ इसलिए भगवान ने विचार किया कही ऐसा न हो कि समय से पहले ही इनका विनाश हो जाये, इसलिए भगवान ने अपने पुत्र, पौत्रों को शिक्षा देने की योजना बनाई। और बड़ी अदभुत लीला की।

⇒ एकदिन भगवान के पुत्र साम्ब, प्रद्युम्न, चारुभानु और गद इत्यादि खेल रहे थे, उनकी गेंद जाकर के कुएँ में गिर पड़ी, जब वह गेंद को निकालने के लिए कुएँ के पास गये, तो देखा उस कुएँ में एक बड़ा भारी कृकलास: (गिरगिट) था। बच्चों ने आकर के भगवान श्रीकृष्ण से कहा, पिता जी कुएँ के अन्दर बहुत बड़ा कृकलास है। ऐसा कृकलास तो हमने देखा नहीं, जब बच्चों ने भगवान को बताया तो भगवान गये, और

Date:
Page: 50

⇒ भगवान ने जाकर के अपने हाथ से उस कृकलास को पकड़ा और पकड़कर के बाहर निकाला, भगवान के कर का स्पर्श होते ही वो कृकलास (गिरगिट) एक राजा के रूप मे परिवर्तित हो गया। भगवान ने उससे पूछा आप कौन हैं?

⇒ उस कृकलास ने कहा -

श्लोकः- नृगो नाम नरेन्द्रोऽहमिक्ष्वाकुतनयः प्रभो।
दानिष्वाख्यायमानेषु यदि ते कर्णमिस्पृशम् ॥

⇒ मै इक्ष्वाकु का पुत्र नृग हूँ। मैं सूर्यवंश का राजा था। ब्राह्मण के शाप से ये कृकलास योनि प्राप्त हुई, राजा नृग ने भगवान को अपनी सम्पूर्ण कथा सुनाई।

⇒ भगवान ने नृग से पूछा तुम एक राजा थे तो तुम्हे ये कृकलास की योनि क्यों प्राप्त हुई?

⇒ राजा नृग ने कहा मैं प्रतिदिन एकलाख गायोंका दान करता था, ब्राह्मणों को, एकदिन मैंने एक ब्राह्मण को गायो का दान किया, ब्राह्मण गायोंको लेकर घर गये, संजोग से उन गायो मे से एक गाय भागकर के फिर राजा के गौशाला मे आ गई। दूसरे दिन प्रातःकाल फिर एकलाख गायो का दान करने के लिए उपस्थित हुए, तो सेवकों ने सब गायो को तैयार किया, उस गाय को भी लाकर के खड़ा कर दिया जिसे

Date:
Page: 51

⇒ एक दिन पहले ब्राह्मण को दान कर दिया था। महाराज ने जब ब्राह्मण को एक लाख गायों का दान किया तो उस गाय को भी दान मे दे दिया जिसे एक दिन पहले दूसरे ब्राह्मण को दान मे दिया था।

⇒ तब तक वो पिछले दिन का ब्राह्मण देखा मेरी एक गाय कहा गई? उसने सोचा जहाँ से आई है, वही गई होगी, और कहाँ जायेगी।

⇒ खोजते-खोजते वह ब्राह्मण राजा के यहाँ पहुँचे तो देखा महाराज उस गाय का दान दूसरे ब्राह्मण को कर चुके थे। ब्राह्मण ने राजा से कहा, महाराज यह मेरी गाय है मेरी गौशाला से भागकर के आई है, कल आपने इस गाय का मुझे दान किया था, यह मेरी गाय है।

⇒ जिस ब्राह्मण को राजा ने पुनः उस गाय को दान मे दिया था, वह ब्राह्मण बोले महाराज अभी-अभी आपने इस गाय का दान मुझे किया है, यह गाय मेरी है। दोनो ब्राह्मण अपनी-अपनी जगह पर सत्य बोल रहे थे।

⇒ अब तो राजा नृग चक्कर मे पड़ गये, अब मैं क्या करू, कभी इस ब्राह्मण की ओर देखते कभी उस ब्राह्मण की ओर देखते, दोनो अपनी२ बात पर अड़े रहे, गाय मेरी है, गाय मेरी है, महाराज नृग मौन होकर के इस दृश्य को देख रहे थे, उन्हे इस समस्या का कोई समाधान नही सूझ रहा था। अन्त मे दोनो ब्राह्मणों को क्रोध आ गया, कि ये राजा बहुत बड़ा दानी बनता है, एक ही गाय का दोबार दान किया

Date:
Page: 52

⇒ अब एक गाय के लिए हम लोग झगड़ा करे, यह सब इस राजा के अज्ञान के कारण हुआ, दोनो ब्राह्मणों ने क्रोध मे राजा नृग को शाप दे दिया, जाओ तुम कृकलास हो जाओ, जैसे गिरगिट रंग बदलता हैं, कभी लाल हो जाता, कभी हरा हो जाता, उसी प्रकार तुम रंग बदलते हो, ब्राह्मणों के शाप के कारण राजा नृग ही कृकलास बन गये।

⇒ राजा नृग ने ब्राह्मणों के चरणों मे गिरकर प्रार्थना की मेरा उद्धार कैसे होगा? ब्राह्मणों को राजा पर दया आई, उन दोनो ब्राह्मणों ने राजा से कहा, द्वापर मे जब भगवान कृष्ण का अवतार होगा, तो उनके करारविन्द का स्पर्श प्राप्त करके, तुम इस योनि से मुक्त हो जाओगे।

⇒ सन्त महापुरुषों का क्रोध भी जीव का कल्याण करता हैं। श्रेष्ठजनों का क्रोध भी वरदान के समान होता हैं। पहले तो हमे बुरा लगता हैं इन्होंने क्रोध किया, डांट दिया, लेकिन महा-पुरुषों का क्रोध भी जीव का कल्याण करता हैं।

⇒ अहिल्या को शाप दे दिया, महर्षि गौतम ने, जा तू पत्थर हो जा, अहिल्या पत्थर हो गई, अहिल्या ने कहा महाराज मेरा उद्धार कब होगा? तब महर्षि गौतम ने कहा जिस दिन दशरथनन्दन राम इस वन मे आयेगे राम जी के आते ही तू पवित्र हो जायेगी, उनका दर्शन तुझे मिलेगा। अहिल्या

Date:
Page: 53

⇒ हजारो वर्षो तक पत्थर बनकर पड़ी रही, जब राम जी का दर्शन हुआ, तो आहिल्या ने यही कहा महर्षि गौतम ने मुझे शाप दिया, अच्छा किया, अगर वो शाप न देते तो, आज मुझे राम जी का दर्शन कहा होता ?

छन्द:- मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा
परम अनुग्रह मैं माना।
देखेउँ भरि लोचन हरि भव मोचन
इहइ लाभ संकर जाना ॥

⇒ तो महात्माओं का ऋषि मुनियों का क्रोध और शाप भी, जीव का कल्याण कर देता हैं।

⇒ एकबार एक व्यक्ति ने पूछा महाराज ये महात्मा लोग कैसे थे, इनका कोई दूसरा काम नही था, केवल खाते थे और दूसरो को शाप देते थे। किसी पुराण को पढ़ो, कथा कहाँ से प्रारम्भ होगी। अमुख ऋषि ने अमुख व्यक्ति को शाप दिया। यही से कथा का प्रारम्भ होता हैं।

⇒ रामायण पढ़ो तो नारद जी ने शाप दिया, भागवत पढ़ो तो श्रृंगी ऋषि ने राजा परीक्षित को शाप दिया, शाप से ही कथा का प्रारम्भ होता हैं इन कथाओं को सुनने के बाद लगता है, इन महात्माओं के पास दूसरा कोई काम नहीं था। केवल खाते थे और शाप देते थे लोगों को, लेकिन विचार करना, जिनके शाप का परिणाम इतना दिव्य होता था, वो वरदान देता होगा तो उसमें कितना आनन्द होता होगा। रामायण पढ़ो चाहे भागवत, जिसको मुनियों, ब्राह्मणों महात्माओं ने शाप दिया हैं, उन सबको

Date:
Page: 54

⇒ भगवान् की प्राप्ति हुई। सोचो जिसके शाप मे इतनी ताकत है, कि वो शाप दे दे तो उसे भगवान् मिल जाते हैं, वो वरदान देता होगा तो उसमे कितना आनन्द होगा। ये मुनियों का शाप अद्भुत है, महर्षि गौतम ने इन्द्र को शाप दे दिया जाओ तुम्हारे शरीर मे एक हजार छिद्र हो जाये, इन्द्र को बड़ा दुःख हुआ।

⇒ बाद मे महर्षि गौतम ने कहा जब राम जी का विवाह देखोगे तुम्हारे शरीर के जितने छिद्र हैं ये नेत्र बन जायेंगे। जब राम जी का विवाह होने लगा, ब्रह्मा जी बड़े प्रसन्न, ब्रह्मा जी ने कहा हम तो आठ नेत्रों से राम जी के विवाह को देख रहे हैं, हमसे ज्यादा सुखी कोई नही, बगल मे बैठे थे शंकर जी के पुत्र कार्तिकेय, उन्होंने कहा हम तो बारह नेत्रों से इस विवाह को देख रहे हैं, हम से ज्यादा कोई सुखी नही, उनके बगल मे भगवान् शंकर बैठे थे, भगवान् शंकर ने कार्तिकेय की पीठ पर एक थपक लगाई और कहा बच्चा मैं तुम्हारा बाप हूँ, मैं पन्द्रह नेत्रों से भगवान् के विवाह को देख रहा हूँ, मुझसे ज्यादा सुखी कोई नही, सभी देवताओ ने कहा, बस, बस आज इन्द्र से ज्यादा सुखी कोई नही है

चौ० देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं।
आजु पुरंदर सम कोउ नाहीं॥

⇒ इन्द्र आज एक हजार नेत्रों से भगवान् के विवाह को देख रहे हैं। इन्द्र ने जब भगवान् श्री राम के विवाह का दर्शन किया, तो ये ही अनुभव किया।

Date:
Page: 55

चौ० रामहि चितव सुरेश सुजाना ।
गौतम श्रापु परम हित माना ॥

⇒ महर्षि गौतम ने शाप दिया बहुत अच्छा किया, तो महर्षियों का शाप भी कल्याणकारक हैं। उन ब्राह्मणो ने राजा नृग को शाप दिया, और उस शाप के कारण ही राजा नृग को आज भगवान् का दर्शन हुआ। भगवान् का स्पर्श प्राप्त करके, भगवान् का दर्शन करके राजा नृग मुक्त होकर के भगवत धाम चले गये, इस घटना के बाद भगवान् अपने पुत्रो को, बच्चो को, सबको लेकर के आये, दरबार मे बैठे, भगवान् ने अपने पुत्र, पौत्रों से कहा आज मेरी बात सावधानी से सुनो,

⇒ भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा आज की इस घटना से शिक्षा ले लो, जीवन मे कभी किसी ब्राह्मण के धन का हरण मत करना, उस ब्राह्मण को किसी ने दान दिया हो अथवा तुमने स्वयं दान किया हो, उस वस्तु को कभी तुम ग्रहण मत करना,

श्लोक- स्वदत्तां परदत्तां वा ब्रह्मवृत्तिं हरेच्च यः ।
षष्टिवर्ष सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥

⇒ तुमने दिया हो, किसी अन्य ने दिया हो, जो ब्राह्मण की वृत्ति का हरण करता हैं, वो जीव साठ हजार वर्ष तक गन्दगी का कीड़ा बनता हैं, इसलिए जीवन मे ऐसा अपराध कभी मत करना, अपने पुत्रों को भगवान् ने उपदेश दिया,

Date:
Page: 56

⇒ इसके बाद कथा आती है, एकदिन बलराम जी महाराज नन्दबाबा और अपने स्वजन सम्बन्धियों से मिलने की इच्छा से द्वारका से ब्रज मे आते हैं।

⇒ वृन्दावन पहुँचकर बलराम जी नन्दबाबा और अपने स्वजन सम्बन्धियों से मिले, इसके बाद जलक्रीड़ा की इच्छा से गोपियों को साथ लेकर बलराम जी यमुना के तट पर पहुँच गये।

⇒ बलराम जी ने यमुना जी से कहा, यमुने तू मेरी लीला मे सहयोग कर, बलराम जी के कहने पर यमुना जी उनकी लीला मे सहयोग करने के लिए उपस्थित नही हुई, तो बलराम जी को क्रोध आ गया, बलराम जी ने अपना हल उठाया और यमुना मे लगाया और कहा आज ही मैं पूरी यमुना को खोदकर नाली जैसा बना दूँगा, इसका अस्तित्व मिट जायेगा।

⇒ जब बलराम जी ने यमुना जी को डाँट-फटकारा, तब वे चकित और भयभीत होकर बलराम जी के चरणो पर गिर पड़ी और प्रार्थना करने लगी-

श्लोकः- राम राम महाबाहो न जाने तव विक्रमम्।
यस्यैकांशेन विधृता जगती जगतः पते ॥

⇒ यमुना जी ने प्रगट होकर बलराम जी के चरणों मे प्रणाम किया, हे राम मैं आपके पराक्रम को नही समझ पाई, आप मुझे क्षमा

Date:
Page: 57

⇒ कर दो। फिर यमुना जी ने बलराम जी की लीला मे सहयोग किया।

⇒ इसके बाद कथा आती हैं, भगवान् ने पौण्ड्रक और काशिराज का उद्धार किया। पौण्ड्रक नाम का एक राजा था, वह अपने को भगवान् मानता था। नकली शंख,चक्र लगाकर के पीताम्बर पहनकर के, मोर मुकुट लगाकर के घूमता था, और कहता था, मैं ही ईश्वर हूँ।

⇒ एक दिन पौण्ड्रक ने एक पत्र लिखकर के अपने दूत के हाँथो द्वारकाधीश तक पहुँचाया दूत ने द्वारका आकर वह पत्र पढ़कर के द्वारकाधीश को सुनाया, उस पत्र मे पौण्ड्रक ने लिखा, कृष्ण तुम भगवान नही हो, मैं भगवान हूँ, इसलिए ये सुदर्शन चक्र धारण करना छोड़ दो, यह सुनकर के द्वारकावासियों को पौण्ड्रक के ऊपर बहुत क्रोध आया।

⇒ सभी द्वारकावासियों ने द्वारकाधीश से कहा प्रभो आप इस दुष्ट का संघार कर दो, भगवान ने कहा ठीक हैं, और भगवान् चल पड़े, पहुँच गये पौण्ड्रक के पास, पौण्ड्रक अपनी सेना तैयार करके भगवान् से युद्ध करने के लिए तैयार था।

⇒ भगवान् ने पौण्ड्रक से कहा, तुमने पत्र मे लिखा था, असली वासुदेव मैं हूँ, तुम भगवान वासुदेव नही हो, इसलिए चक्र

Date:
Page: 58

⇒ धारण करना छोड़ दो, तो आज मैं अपने चक्र को छोड़ रहा हूँ, अगर तुम असली वासुदेव हो तो इसे संभाल लेना, भगवान का चक्र सुदर्शन चला और उसने पौण्ड्रक के सिर को धड़ से अलग कर दिया, भगवान ने पौण्ड्रक का वध कर दिया।

⇒ पौण्ड्रक के मित्र काशिनरेश थे, इसलिए पौण्ड्रक की तरफ से वह भगवान से युद्ध करने के लिए आ गये। भगवान के सुदर्शन चक्र ने काशिनरेश का भी सिर काट दिया, और काशिनरेश के सिर को उठाकर के काशी मे फेंक दिया।

⇒ जब काशिनरेश का सिर उनके महल के द्वार पर गिरा तो उनके पुत्रो ने देखा, उनको बड़ा दुःख हुआ। काशिनरेश के पुत्रों को जब पता चला कि द्वारकाधीश श्री कृष्ण ने मेरे पिता को मारा हैं, तो उनके मन मे द्वारकाधीश के प्रति द्वेष उत्पन्न हो गया, काशिनरेश के पुत्रों ने काशी के विद्वान ब्राह्मणों को बुलाकर के भगवान श्री कृष्ण को मारने के लिए तांत्रिक क्रिया कराई।

⇒ काशिनरेश के पुत्रो ने तांत्रिक कृत्या को प्रगट करके भगवान श्री कृष्ण को मारने के लिए भेजा, कृत्या भगवान को मारने के लिए चल पड़ी। कृत्या जबतक भगवान के समीप पहुँचती तबतक भगवान का सुदर्शन चक्र प्रगट हो गया, और उस सुदर्शन चक्र ने कृत्या को भस्म कर दिया।

Date:
Page: 59

⇒ और फिर भगवान् का सुदर्शन चक्र काशी की ओर चल पड़ा, जब भगवान् का सुदर्शन चक्र काशी की ओर चला तो काशी में विराजमान जितने देवता थे, वो काशी छोड़कर के भाग गये।

⇒ भगवान् के सुदर्शन चक्र ने सम्पूर्ण काशी को दग्ध कर दिया, भगवान् के चक्र से काशी अंकित हो गई, और भगवान् के चक्र से जो अंकित होता हैं, वही तो संसार बन्धन से मुक्ति का कारण बनता हैं। संसार चक्र से छूटने का उपाय क्या हैं? भगवान् के चक्र से सम्बन्ध हो जाये, भगवान् का चक्र ही संसार चक्र से छुड़ाने वाला हैं।

⇒ इसलिए कहा जाता हैं, भगवान् के सुदर्शन चक्र से जो मारे जाते हैं, वो वैकुंठ चले जाते हैं।

⇒ आगे कथा आती हैं, श्री बलराम जी ने द्विविद नाम के एक वानर को मारा, ये द्विविद भौमासुर का सखा था।

⇒ जब द्विविद को पता चला कि श्री कृष्ण ने भौमा-सुर को मार डाला हैं, तब वह मित्र की मित्रता के ऋण से उऋण होने के लिए भगवान से युद्ध करने के लिए आया। द्विविद को द्वारकाधीश तो मिले नही किन्तु बलराम जी मिल गये।

⇒ द्विविद ने देखा -

Date:
Page: 60

श्लोक- गायन्तं वारुणीं पीत्वा मदविह्वललोचनम् ।
विभ्राजमानं वपुषा प्रभिन्नमिव वारणम् ॥

⇒ बलराम जी वारुणी (मधुपान) करके सुन्दर, सुन्दर युवतियों के साथ बैठकर मधुर संगीत गा रहे थे। उसी समय वह द्विविद नाम का वानर आया और बलराम जी की वारुणी का जो पात्र रखा था, उसको उठाकर के उसमे से वारुणी को पीने लगा और पृथ्वी पर गिराने लगा।

⇒ बलराम जी को क्रोध आ गया, बलराम जी ने एकबार उसे भगाने के लिए इशारा भी किया, किन्तु वो भागा नही, बलराम जी को क्रोध आया और उन्होंने अपना हल उठाकर के द्विविद को खींचा, और एक मूसल मारा उसकी खोपड़ी मे, इतने मे उस द्विविद की मृत्यु हो गई। इस प्रकार उस द्विविद वानर का बलराम जी के द्वारा उद्धार हो गया।

⇒ इसी कथा को लेकर आज से तीनवर्ष पूर्व सोशल मीडिया पर बहुत बड़ा विवाद हुआ था। एक कथाकार ने कहा था, बलराम जी तो मदिरा पीते थे, बात अंशतः उनकी भी सत्य थी, लेकिन कहने का तरीका गड़बड़ था।

⇒ बलराम जी क्षत्रिय हैं, क्षत्रियों के धर्म अलग हैं, ब्राह्मणों के धर्म अलग हैं, वैश्य के धर्म अलग हैं, शूद्र के धर्म अलग हैं। चारो वर्णों के अलग-अलग धर्म है।

Date:
Page: 61

गीता मे भगवान् कहते हैं-

श्लोक:- श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥ 3।35

अपने-अपने धर्म का सभी को पालन करना चाहिए, क्षत्रियों का धर्म हैं, कि वे वारुणी और माध्वी दो प्रकार की मदिरा का पान कर सकते हैं किन्तु यदि ब्राह्मण पीले तो, वो उसी समय पतित हो जायेगा।

⇒ स्वधर्म को जानने के लिए शास्त्र के आश्रय मे जाना पड़ेगा, जो चीज आपके लिए पाप हो सकती है, वही चीज दूसरे व्यक्ति के लिए पुण्य भी हो सकती हैं इसका निर्णय शास्त्र करेगा।

⇒ जैसे पान खाना, सन्यासी यदि पान खा ले तो वो पतित हैं, वो ही पान यदि गृहस्थ खाये तो उसे पाप नही लगेगा, ब्रह्मचारी वेद मंत्र पढ़कर के पान भगवान को अर्पित करता हैं, लेकिन उसी ताम्बूल को वो प्रसाद के रुप मे नही ले सकता, तो किसके लिए क्या धर्म हैं, क्या अधर्म हैं, ये जानना पड़ेगा, और ये तब पता चलेगा जब शास्त्र के आश्रय मे आप आयेगे।

⇒ शराब पीना धर्म भी हैं, और अधर्म भी, किसके लिए धर्म हैं, किसके लिए अधर्म हैं ये निर्णय शास्त्र करेगा।

⇒ गाली देना पाप हैं, किन्तु विवाह मे दूल्हे को गालियाँ दी जाती वो पुण्य हैं, सुरा के अनेक भेद हैं, माध्वी, पैष्टी, गौड़ी, वारुणी अलग-अलग

Date:
Page: 62

⇒ प्रकार की मदिराएं हैं, और कौन सी मदिरा किसके लिए ग्राह्य हैं, किसके लिए नही इसके लिए बहुत बड़ा विवेचन है पराशरमाधव मे आप पढ़ सकते हैं।

⇒ बलरामजी ने जिस वारुणी का पान किया वो वारुणी साधारण मदिरा नही थी, वारुणी एक दैवीय मदिरा होती हैं, जो देवताओं का पेय पदार्थ हैं। बलराम जी महाराज उस वारुणी का पान करते थे। बलराम जी तो साक्षात ईश्वर हैं, जो प्रलयकाल मे सम्पूर्ण सृष्टि को, (अपने उदर मे समाहित कर लेते हैं) खा जाते हैं अपने पेट के अन्दर, वो वारुणी भी ले तो क्या आपत्ति हैं।

⇒ लेकिन इस बात को किस ढ़ग से वेदव्यास जी ने प्रस्तुत किया हैं, उसे समझने की आवश्यकता हैं।

⇒ इसके बाद कथा आती हैं, जाम्बवती जी के पुत्र साम्ब का विवाह दुर्योधन की बेटी लक्ष्मणा के साथ हुआ।

⇒ दुर्योधन ने अपनी बेटी लक्ष्मणा का स्वयंवर किया, उस स्वयंवर मे जाम्बवती जी के पुत्र साम्ब भी पधारे, दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा को साम्ब पसन्द आ गये, और लक्ष्मणा ने साम्ब के गले मे जयमाला ड़ाल दी।

⇒ दुर्योधन नही चाहते थे कि उनकी बेटी का विवाह श्रीकृष्ण के पुत्र के साथ हो

Date:
Page: 63

⇒ इसलिए दुर्योधन ने भगवान् श्री कृष्ण के पुत्र साम्ब को बंदी बना लिया। भगवान् श्री कृष्ण को जब यह बात पता चली तो, उन्होंने विचार किया दुर्योधन बलराम जी का चेला है, इसलिए यह बात दाऊ दादा को बतानी चाहिए।

⇒ भगवान् श्रीकृष्ण ने सारी बात बलराम जी को बताई, बलराम जी अपना हल, मूसल लेकर के हस्तिनापुर पहुँच गए, बलराम जी ने दुर्योधन से कहा ⇒ कहाँ है मेरा भतीजा और बहू ? उन्हे मेरे साथ राजी खुशी विदा कर दो मैं उन्हे अपने साथ द्वारका ले जाने के लिए आया हूँ।

⇒ दुर्योधन ने बलराम जी से कहा गुरुदेव मैं आपकी प्रत्येक बात मानता हूँ, किन्तु इसबार आपकी बात नही मानूंगा।

⇒ शिष्य वही है जो गुरुदेव की प्रत्येक बात को माने उसे स्वीकार करे, जो गुरुदेव के वचनो का उलंघन करे वो कैसा शिष्य ?

⇒ दुर्योधन के मुख से इस प्रकार के वचन सुनकर बलराम जी को क्रोध आ गया और उन्होने दुर्योधन से कहा यदि तुम मेरी बात नही मानोगे तो मैं आज सारी प्रथ्वी को कौरवहीन कर डालूँगा। इसप्रकार कहते - कहते बलराम जी ने क्रोध मे भरकर -

श्लोक :- लांगलाग्रेण नगरमुद्विदार्य गजाह्वयम् ।
विचकर्ष स गंगायां प्रहरिष्यन्नमर्षितः ॥

Date:
Page: 64

⇒ अपना हल उठाया, और उसकी नोक से चोट करके हस्तिनापुर को उखाड़ कर के गंगा जी मे डुबाने के लिए खींचने लगे।

⇒ जब दुर्योधन ने देखा कि हस्तिनापुर गंगा जी मे गिर रहा है तो वह बलरामजी के चरणों मे गिर पड़े और हाथ जोड़कर कहने लगे, गुरुदेव मुझसे बहुत बड़ा अपराध हो गया मुझे क्षमा कर दीजिए मुझे आपकी आज्ञा का उलंघन नही करना चाहिए था।

⇒ जब दुर्योधन ने हांथ जोड़कर प्रार्थना कि तो बलराम जी ने उन्हे मांफ कर दिया, दुर्योधन ने प्रसन्नतापूर्वक अपनी बेटी लक्ष्मणा का हाथ साम्ब के हांथ मे देकर बलराम जी के साथ बिदा कर दिया।

⇒ आगे कथा आती हैं, भगवान श्री कृष्ण के गृहचर्या और नित्यचर्या की। शुकदेव जी कहते हैं राजन परीक्षित- एक दिन नारद जी ने विचार किया भगवान श्री कृष्ण ने सोलह हजार एक सौ आठ कन्याओ के साथ विवाह किया किन्तु भगवान सोलह हजार एक सौ आठ रानियों के साथ रहते कैसे है? इसलिए नारद जी भगवान की गृहचर्या का दर्शन करने आये।

⇒ जब नारद जी भगवान श्री कृष्ण के महल मे पधारे तो उन्होने देखा भगवान प्रत्येक रानी के साथ अलग- अलग रुप मे उनके कक्ष मे विराजमान थे। नारद जी ने दर्शन

Date:
Page: 65

⇒ किया और कहा प्रभु ये केवल आपकी ही सामर्थ्य है। बन्धुओ कृष्ण ने जो किया वो हम नही कर सकते, इसलिए कृष्ण ने जो कहा, उसे मानो, कृष्ण साक्षात ईश्वर है।

⇒ आगे शुकदेव जी- भगवान श्रीकृष्ण की नित्यचर्या का वर्णन करते हैं। भगवान श्री कृष्ण प्रातःकाल उठकर के स्नान करने के बाद मे शंख और गौमाता का पूजन करते है। शंख का नाद करते हैं।

⇒ बन्धुओ समुद्र मंथन से 14 रत्न निकले थे जिनमे से दो ① शंख ② गौमाता मनुष्यों को मिले। बाकी सब तो देवता और दैत्यो ने आपस मे बाँट लिए थे।

⇒ इसलिए शंख और गौमाता इन दोनो का प्रातःकाल हमे पूजन करना चाहिए। जिस घर मे शंखनाद से बच्चो की आँख खुले वह घर तो स्वर्ग हैं।

⇒ प्रातःकाल बच्चो को स्नान कराने के बाद मे उनके गाल से शंख का स्पर्श कराना चाहिए ऐसा करने से बच्चे बुद्धिमान बनते हैं।

⇒ प्रातःकाल स्नान करने के बाद मे गौमाता का पूजन करना चाहिए और उन्हे प्रणाम करना चाहिए। महाभारत के अनुशासन पर्व मे भीष्म जी युधिष्ठिर जी से गौ की महिमा बताते हुए कहते हैं। गौमाता श्रेष्ठ क्यों है?

Date:
Page: 66

⇒ भीष्म जी कहते हैं, यदि कोई अत्यन्त पापी व्यक्ति भी गौ को स्पर्श कर लेता हैं। तो उसे नर्क नही जाना पड़ता।

⇒ नर्क कौन जाता है?

श्लोक - अत्यन्त कोपः कटुका च वाणी
दरिद्रता च स्वजनेषु वैरम्।
नीचप्रसङ्गः कुलहीन सेवा
चिह्नानि देहे नरकस्थितानाम्॥

⇒ (1) अतिक्रोध करने वाला (2) कटुवचन बोलनेवाला (3) दरिद्री (4) आत्मीय जनो से वैर करने वाला (5) नीचों का सङ्ग और नीच की सेवा।

ये नर्क जाने वालो के चिह्न बताए गये हैं।

⇒ नर्क मे क्यों जाते हैं?

⇒ जब व्यक्ति काम, क्रोध, मद, लोभ से गन्दा हो जाता हैं। तब उसे कुछ दिनो के लिए नर्क भेजा जाता हैं। जैसे वस्त्र गन्दे हो जाने पर हम वस्त्रों को वाशिंग मशीन मे डालकर धुलकर साफ करते हैं, इसी प्रकार जब व्यक्ति काम, क्रोध, मद, लोभ से गन्दा हो जाता हैं, तो उसे नर्क भेजा जाता है, नर्क रुपी वाशिंग मशीन मे अपने दागों को छुड़ाकर पुनः वह स्वच्छ हो जाता हैं।

⇒ बन्धुओं जब व्यक्ति नर्क में जाता हैं, तो वहाँ पर वैतरणी नदी हैं, वहाँ जीव कई वर्षों तक

Date:
Page: 67

⇒ भटकता हैं, उसे कष्ट होता हैं। क्यों कि उसे यातना देह मिलता हैं। इस शरीर मे वो सब पीड़ा होती हैं, जो शरीर को कष्ट मिलने पर होती हैं।

⇒ भीष्म जी कहते हैं, ऐसा पापी व्यक्ति जिसको नर्क जाना हैं। यदि वह जीवन मे एकबार गौमाता का पूजन करके, गौ की पूछ पकड़कर किसी ब्राह्मण को दान कर देता हैं। तो वह गाय उसे वैतरणी नदी पार करवा देती हैं।

⇒ शुकदेव जी राजन् परीक्षित से कहते हैं, एकदिन भगवान् श्री कृष्ण अपनी नित्यचर्या कर रहे थे तभी एक दूत आकर के भगवान् श्री कृष्ण से कहता है - प्रभो! जिन राजाओ ने जरासन्ध के दिग्विजय के समय उसके सामने सिर नही झुकाया था उन्हे जरासन्ध ने बलपूर्वक बन्दी बना लिया हैं। बीस हजार आठ सौ राजाओ को जरासन्ध ने बन्दी बना रखा हैं, वे सभी राजा जरासन्ध के कारागार मे दुःख को प्राप्त कर रहे हैं। हमने सुना हैं आप दीनबन्धु हैं। जो भी आपके शरण मे आता हैं आप उसके दुःखो को दूर करते हैं। हे गोविन्द जरासन्ध के कारागार मे बन्द बीस हजार आठ सौ राजाओ का दुःख दूर कीजिए।

⇒ भगवान ने उस दूत से कहा तुम चिन्ता न करो, उन राजाओं से जाकर कहो शीघ्र ही मैं उन्हें जरासन्ध के कारागार से मुक्त करने के लिए आऊंगा।

Date:
Page: 68

⇒ वह दूत गया कि इतने मे ही नारद जी पत्र लेकर के आ गये, नारद जी ने भगवान् से कहा महाराज पाण्डव लोग राजसूय यज्ञ करना चाहते हैं, आपके मार्ग दर्शन मे, कृपा करके पधारिये।

⇒ भगवान् श्री कृष्ण ने एक सभा बुलाई और सभी से पूछा, मैंने पाण्डवो का निमन्त्रण भी स्वीकार कर लिया और जरासन्ध के कारागार मे बन्द राजाओं को वचन भी दे दिया कि शीघ्र ही उन्हे मुक्त कराने आयेंगे। अब आप लोग बताइए पहले कहाँ जाना चाहिए?

⇒ दाऊ दादा ने कहा हमे जरासन्ध के यहाँ जाना चाहिए और बन्दी बने राजाओ को मुक्ति दिलानी चाहिए। उद्धव जी बोले महाराज मेरी दृष्टि से तो पाण्डवों के यहाँ पहले जाना चाहिए, भगवान् बोले क्यो? उद्धव जी बोले पाण्डव 'राजसूय यज्ञ कर रहे हैं, और राजसूय यज्ञ तभी हो पायेगा जब अखिल भूमण्डल के राजा अधीनस्थ हो जायेंगे, अभी तक जरासंध ने अधीनता स्वीकार की नही इसलिए पाण्डवो के माध्यम से उसे जीतना अनिवार्य हो जायेगा।

⇒ यदि जरासन्ध पर विजय प्राप्त कर ली तो जो राजा जरासन्ध के कारागार मे बन्द हैं, वो अपने आप मुक्त हो जायेंगे। भगवान् ने प्रसन्न होकर उद्धव जी से कहा, उद्धव तुम सचमुच बड़े विद्वान हो।

⇒ भगवान् श्री कृष्ण द्वारका से इन्द्रप्रस्थ पधारे और भीम, अर्जुन को साथ लेकर, ब्राह्मण का

Date:
Page: 69

⇒ रूप धारण करके भिक्षा माँगने के लिए जरासन्ध के द्वार पर पहुँचे। जरासन्ध ने जब ब्राह्मण रूप धारण किए हुए भीमसेन, अर्जुन और भगवान श्री कृष्ण को देखा तो वह पहचान गया ये ब्राह्मण तो नही हो सकते, क्षत्रीय होते हुए भी मेरे पास ब्राह्मण का रूप धारण करके आये हैं।

⇒ जरासन्ध ने विचार किया जब नारायण ने ब्राह्मण का वेष धारण करके बलि का धन, ऐश्वर्य - सबकुछ छीन लिया, फिर भी बलि की पवित्र कीर्ति सब ओर फैली हुई है। यदि आज मुझसे भी माँगकर कुछ ले जायेंगे तो मेरा क्या घट जायेगा?

⇒ जरासन्ध ने कहा - ब्राह्मणों आपको क्या चाहिए? आपको जो भी चाहिए माँग लो। तब ब्राह्मण वेषधारी भगवान श्री कृष्ण ने कहा -

श्लोक: युद्धं नो देहि राजेन्द्र द्वन्द्वशो यदि मन्यसे।

युद्धार्थिनो वयं प्राप्ता राजन्या नान्नकांक्षिणः ॥

⇒ राजन् हम लोग अन्न के इच्छुक ब्राह्मण नही हैं। हम आपके पास युद्ध के लिए आये हैं। यदि आपकी इच्छा हो तो हमें द्वन्द्व युद्ध की भिक्षा दीजिये

⇒ जैसे ही भगवान श्री कृष्ण ने कहा मुझे द्वन्द्व युद्ध की भिक्षा दीजिए, जरासन्ध ने कहा कौन हो तुम लोग, तुम लोग ब्राह्मण हो ही नही सकते, ब्राह्मण युद्ध की बात ही नही करते हैं, अपने असली स्वरूप मे आओ, कौन हो तुम लोग?

Date:
Page: 70

⇒ तुरन्त भगवान श्रीकृष्ण, भीमसेन और अर्जुन अपने असली स्वरूप मे प्रगट हो गये।

श्लोकः॰ असौ वृकोदरः पार्थस्तस्य भ्रातार्जुनो ह्ययम्।

अनयोर्मातुलेयं मां कृष्णं जानीहि ते रिपुम्॥

⇒ भगवान श्री कृष्ण ने कहा राजन देखो, विशाल काय शरीर जिनका हैं, ये पाण्डुपुत्र भीमसेन हैं, और इनके बगल मे जो खड़े हैं यह इनके भाई अर्जुन हैं। और मैं इन दोनो का ममेरा भाई (मामा का बेटा) तथा आपका पुराना शत्रु कृष्ण हूँ।

⇒ भगवान की बात सुनकर के जरासन्ध जोर-जोर से हँसने लगा और बोला कृष्ण तुमसे तो मैं युद्ध करूँगा नही, क्यो कि तुम तो युद्ध भूमि का मैदान छोड़कर भाग गये थे रही बात अर्जुन की तो ये अवस्था और बल दोनों मे ही मुझसे छोटा हैं, इसलिए मैं इसके साथ भी नही लड़ूँगा। रहे भीमसेन, ये अवश्य ही मेरे समान बलवान और मेरे जोड़ के हैं। इसलिए मैं इनके साथ युद्ध करूगा।

⇒ इतना कहकर जरासन्ध ने एक बहुत बड़ी गदा भीमसेन को दे दी और स्वयं दूसरी गदा लेकर के युद्ध करने लगा। २७ दिनो तक भीमसेन और जरासन्ध के मध्य मे युद्ध चला फिर भी जरासन्ध का वध भीमसेन नही कर पाये। रात्रि मे उदास होकर के भीमसेन ने भगवान श्री कृष्ण से पूछा प्रभु अब मैं क्या करू? भगवान

Date:
Page: 71

⇒ बोले भीमसेन तुम्हे अपनी जीत की इतनी पड़ी कि मेरी तरफ देखते ही नही हो, कल जब युद्ध करना तो मेरी तरफ देखना, मै जैसे-जैसे इशारा करू, वैसे-वैसे ही करना जरासन्ध का वध हो जायेगा।

⇒ अगले दिन जब युद्ध प्रारम्भ हुआ तो भीमसेन ने भगवान श्री कृष्ण की तरफ देखा, भगवान् ने एक पत्ते को पकड़ा और बीच मे से चीर कर फेंक दिया, भीमसेन भगवान का इशारा समझ गये, और उन्होने जरासन्ध को पकड़कर उसे धरती पर दे मारा। फिर उसके एक पैर को अपने पैर के नीचे दबाया, और दूसरे को अपने दोनों हाथो से पकड़कर गुदा की ओर चीरते चले गये।

⇒ भीमसेन ने सोचा कि मैने तो जरासन्ध का वध कर दिया, किन्तु कुछ ही देर मे जरासन्ध के दोनों धड़ आपस मे आकर के जुड़ गये और वह पुनः जीवित हो गया। भीमसेन ठाकुरजी के पास जाकर के बोले प्रभु यह तो फिर से जीवित हो गया, अब मैं क्या करु ?

⇒ भगवान जरासन्ध के मृत्यु का रहस्य जानते थे।
⇒ बन्धुओ जरासन्ध बृहद्रथ राजा का पुत्र था। बृहद्रथ ने काशी की दो राजकुमारियों से विवाह किया था। किन्तु विवाह के उपरान्त मे बृहद्रथ को दोनों रानियों से कोई सन्तान प्राप्त नही हुई। तब उन्होने ऋषि चण्डकौशिक के पास जाकर उनकी सेवा की, तो ऋषि ने उनकी सेवा से

Date:
Page: 72

⇒ प्रसन्न होकर उन्हे एक फल दिया और कहा कि अपनी पत्नी को इसे खिला देना, शीघ्र ही तुम्हे संतान प्राप्ति हो जायेगी।

⇒ राजा बृहद्रथ ने उस फल के दो भाग करके आधा - आधा दोनो रानियों को खिला दिया। अब फल एक था, तो दो सन्ताने कहा से होती। परिणाम यह हुआ कि दोनो रानियों ने मांस के लोथड़े के रुप में आधे- आधे बालक को जन्म दिया।

⇒ शिशु के आधे- आधे शरीर को देखकर दोनों रानियाँ भयभीत हो गई, और उन्होंने मांस के दोनो लोथड़ो को जंगल मे फिकवा दिया। उधर से जरा नाम की एक राक्षसी निकल रही थी, उसे जब मनुष्य के मांस की गन्ध आई तो वह आगे बढ़ी उसने देखा कि मांस के लोथड़े के रुप मे शिशु के दो टुकड़े पड़े हुए हैं। जरा राक्षसी ने दोनो टुकड़ो को उठाकर के जोड़ दिया। तो वह बालक बनकर जीवित हो गया, वही जरासन्ध कहलाया।

⇒ जरा अर्थात राक्षसी, सन्ध अर्थात जोड़ा हुआ जरा के द्वारा जो सन्ध किया गया हो, उसका नाम जरासन्ध पड़ा।

⇒ जब भीमसेन ने भगवान से पूछा ये तो मरता ही नही, अब मैं क्या करू? तब भगवान ने कहा भीमसेन तुमने जरासन्ध को जीत के भाव से मारा इसलिए नही मरा।

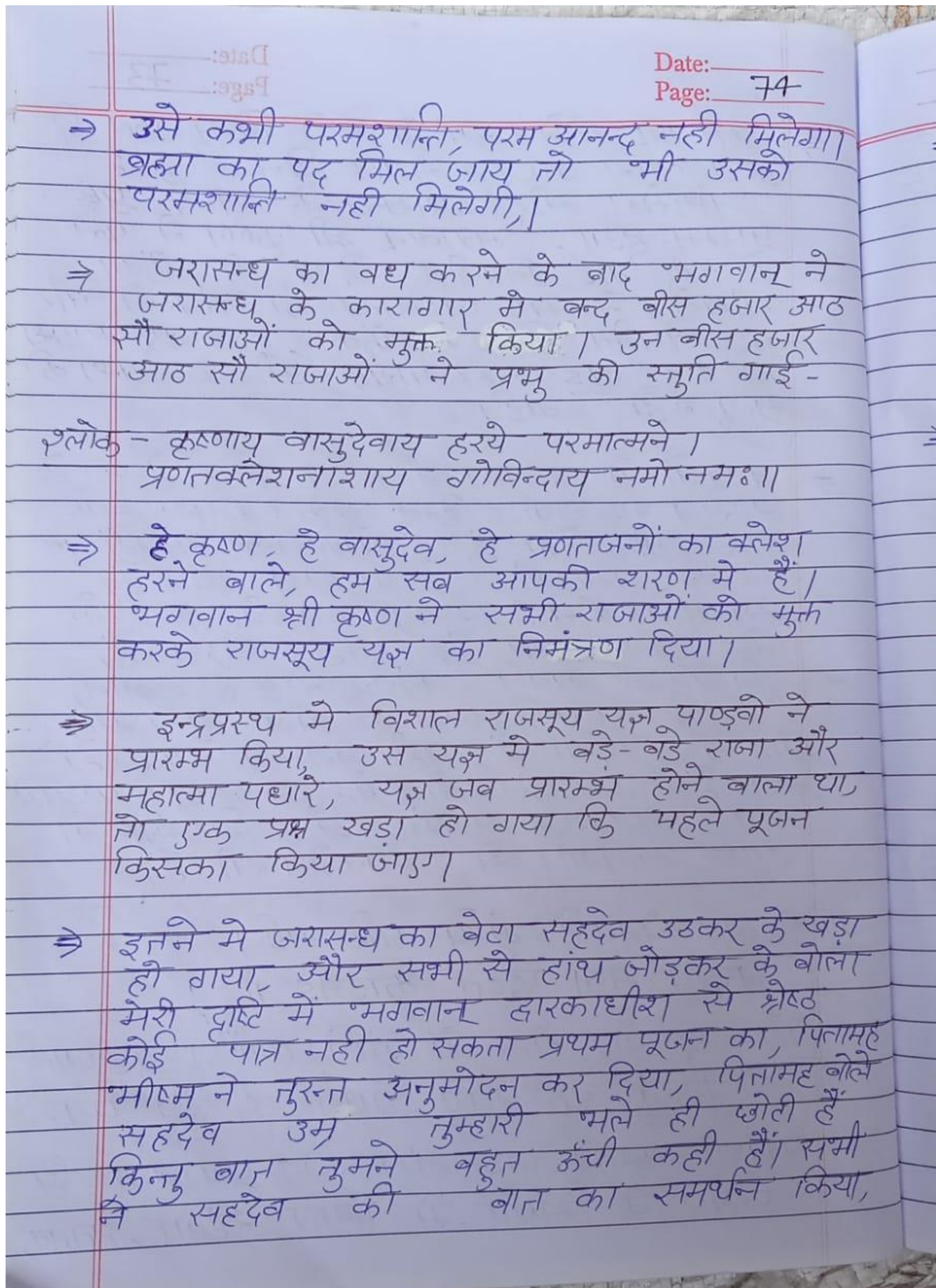
Date:
Page: 73

⇒ भगवान बोले कर्म तो करो किन्तु फल की इच्छा त्याग कर, अगले दिन पुनः भीमसेन और जरासन्ध के मध्य युद्ध प्रारम्भ हुआ, भगवान श्री कृष्ण ने पत्ते को चीर कर विपरीत दिशा मे फेंका, भीमसेन ने भी जरासन्ध को बीच से चीर कर विपरीत दिशा मे फेंका, इसबार जरासन्ध का धड़ जुड़ नही पाया, और जरासन्ध की मृत्यु हो गई।

⇒ बन्धुओं ये जरासन्ध कौन है? कहानी का तो जरासन्ध मर गया किन्तु एक जरासन्ध हमारे तुम्हारे भीतर बैठा हैं, उसको जब मारोगें तब शान्ती मिलेगी, वो जरासन्ध क्या है? जरा माने बीमारी (रोग), जरा के द्वारा जो जोड़ डाला गया है, वह जरासन्ध हैं, दुनियाँ का सबसे भयंकर रोग है अज्ञान, हमारी आपकी जरा ने, अज्ञानता ने, एक जोड़ मार दिया हैं, वही जरासन्ध तैयार हो गया हैं, अब इस जोड़ को जब फाड़ पाओगे आप तब जरासन्ध मरेगा, और जिन्दगी मे शान्ती आयेगी। ये ग्रन्थि कौन सी हैं?

चौ॰ जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई।
जदपि मृषा छूटत कठिनई ॥

जैसे - जड़ और चेतन में ग्रंथि (गाँठ) पड़ जाती हैं किन्तु वह ग्रंथि मिथ्या ही हैं, ऐसेही मनुष्य जबतक जड़-अंश की प्रधानता से संसार के भोगों मे लिप्त रहेगा, तबतक



Date:
Page: 74

⇒ उसे कभी परमशान्ति, परम आनन्द नही मिलेगा। ब्रह्मा का पद मिल जाय तो भी उसको परमशान्ति नही मिलेगी।

⇒ जरासन्ध का वध करने के बाद भगवान ने जरासन्ध के कारागार मे बन्द बीस हजार आठ सौ राजाओं को मुक्त किया। उन बीस हजार आठ सौ राजाओं ने प्रभु की स्तुति गाई -

श्लोक - कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः॥

⇒ हे कृष्ण, हे वासुदेव, हे प्रणतजनों का क्लेश हरने वाले, हम सब आपकी शरण मे हैं। भगवान श्री कृष्ण ने सभी राजाओं को मुक्त करके राजसूय यज्ञ का निमंत्रण दिया।

⇒ इन्द्रप्रस्थ मे विशाल राजसूय यज्ञ पाण्डवों ने प्रारम्भ किया, उस यज्ञ मे बड़े-बड़े राजा और महात्मा पधारे, यज्ञ जब प्रारम्भ होने वाला था, तो एक प्रश्न खड़ा हो गया कि पहले पूजन किसका किया जाए।

⇒ इतने मे जरासन्ध का बेटा सहदेव उठकर के खड़ा हो गया, और सभी से हाथ जोड़कर के बोला मेरी दृष्टि में भगवान द्वारकाधीश से श्रेष्ठ कोई पात्र नही हो सकता प्रथम पूजन का, पितामह भीष्म ने तुरन्त अनुमोदन कर दिया, पितामह बोले सहदेव उम्र तुम्हारी भले ही छोटी हैं किन्तु बात तुमने बहुत ऊँची कही हैं। सभी ने सहदेव की बात का समर्थन किया,

Date:
Page: 75

⇒ और सभी ने सहमति भगवान के प्रथम पूजन की दे दी। जैसे ही पाण्डवों ने भगवान का पूजन प्रारम्भ किया, सभा मे बैठे शिशुपाल ने भगवान को गालियाँ देना प्रारम्भ कर दिया, और बिना रुके भगवान को एक सौ एक गालियाँ दी, जैसे ही एक सौ एक गाली हुई, भगवान ने अपने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल के शीष को धड़ से अलग कर दिया।

⇒ शिशुपाल के शरीर से एक ज्योति निकली और भगवान मे विलीन हो गई। इसके उपरान्त भगवान ने निर्विघ्न पाण्डवो का राजसूय यज्ञ सम्पन्न कराया।

⇒ आगे कथा आती हैं, सर्वग्रास सूर्यग्रहण के समय भगवान श्री कृष्ण, बलराम जी और सभी यदुवंशी कुरुक्षेत्र मे पधारे, वहाँ पर भगवान श्री कृष्ण का मिलन नन्दबाबा, यशोदा मैया, राधारानी और समस्त व्रजवासियों से हुआ।

⇒ कृष्ण पटरानियों को जब पता चला कि जिन राधारानी का स्मरण भगवान श्रीकृष्ण दिन रात करते हैं वह कुरुक्षेत्र मे आई हैं, तो कृष्णपटरानियों को राधारानी से मिलने की उत्सुकता होने लगी, सभी रानियाँ राधा रानी से मिलने के लिए उनके शिविर मे गई।

⇒ राधा रानी का श्वेत शिविर हैं, कृष्ण पटरानियाँ अहंकार के भाव से राधा रानी का दर्शन करने के लिए जा रही हैं, मन मे विचार करते हुए जा रही हैं, बड़ा नाम सुना हैं

Date:
Page: 76

⇒ राधारानी का, आज स्वयं अपने नेत्रों से देख लेंगे, कि राधारानी कितनी सुन्दर हैं। भगवान की पत्नियाँ विचार करती हैं, हम स्वयं इतनी सुन्दर हैं, क्या राधारानी हम सभी से अधिक सुन्दर हैं।

⇒ कृष्ण पटरानियों ने जब राधारानी के शिविर मे प्रवेश किया, तो उन्होने ने देखा एक बहुत सुन्दर स्त्री श्वेत वस्त्रों को पहनकर बैठी हुई है, रुक्मिणी, सत्यभामा आदि ने पूछा देवी आप राधा रानी हो? उस स्त्री ने उत्तर दिया, नही मैं राधा रानी नही हूँ, मैं तो उनकी दासी हूँ, राधा रानी तो अन्दर हैं।

⇒ रुक्मिणी, सत्यभामा आदि कृष्णपटरानियों ने विचार किया, जब दासी इतनी सुन्दर है, तो राधा रानी कितनी सुन्दर होगी, राधा रानी के दासी का स्वरूप देखकर ही कृष्णपटरानियों का रूप का अंहकार वही नष्ट हो गया। धीरे-धीरे कृष्ण पटरानियाँ आगे बढ़ी, हर द्वार पर एक सुन्दर दासी के दर्शन हुए, रुक्मिणी जी को छोड़कर अन्य पटरानियाँ तो बीच मार्ग से राधा रानी का दर्शन किए बिना ही लौट आईं।

⇒ अन्त मे रुक्मिणी जी राधारानी के कक्ष तक पहुँची, उन्होंने देखा एक स्त्री जिसके मुख पर करोणो चन्द्रमा के समान तेज है, घुंघराले- घुंघुराले केश है, श्वेत वस्त्र धारण किए हुए है, अष्ट सखियाँ उनकी सेवा मे लगी हुई हैं। राधारानी के स्वरुप को देखकर रुक्मिणी जी उनको देखती रह गई,

Date:
Page: 77

⇒ रुक्मिणी जी के मन मे जो रुप का अभिमान था, कि मैं सबसे अधिक सुन्दर हूँ वह किशोरी जी को देखकर नष्ट हो गया

⇒ बन्धुओ राधा रानी और ठाकुर जी के स्वरुप मे कोई ज्यादा अन्तर नही हैं, रात्रि के समय जब हमारे ठाकुर जी शयन करते हैं, उस समय उनके घुंघराले केश खोल दो, और श्याम वर्ण ठाकुर जी का रंग गौरवर्ण कर दो बस ऐसी है हमारी राधा रानी।

⇒ वृन्दावन दर्शन से अधिक अनुभव का विषय हैं, वृन्दावन के किसी भी प्राचीन मन्दिर (राधारमण - राधावल्लभ, बांकेबिहारी) मे आप जाओ तो आप देखोगे, कि बिहारी जी सभी को दर्शन दे रहे हैं, किन्तु राधारानी घूंघट मे पास मे खड़ी हैं। अब आप विचार कर रहे होगे ऐसा क्यों ? तो बन्धुओ आइए जानते हैं कि वृन्दावन के प्राचीन मन्दिरो मे बिहारी के साथ राधा रानी क्यों नही दिखाई देती, राधा रानी घूंघट मे क्यों रहती हैं।

⇒ एक समय की बात भगवान् श्री कृष्ण वेणु का नाद कर रहे थे, तभी एक मोर वहां आता है, और भगवान् से कहता है गोविन्द आप मेरे साथ चलो, मुझे आपको किसी से मिलवाना हैं वह मोर भगवान् को यमुना के किनारे ले आता है, यमुना के किनारे राधा रानी गगरी मे जल भर रही थी, भगवान् श्री कृष्ण ने वेणु का नाद किया तभी राधा रानी ने पीछे मुड़कर के देखा

Date:
Page: 78

भगवान ने जैसे ही राधा रानी को देखा-

दोहा- जब देखी वृषभानुजा, हिय बिच उठी हिलोर।
वंशी रह गई हाथ मे, फिरना लागी फूंक॥

⇒ राधा रानी को देखकर भगवान मुरली बजाना भूल गए, राधारानी ने तुरन्त घूंघट कर लियो।

⇒ राधारानी कहती, जब भी राधारमण, राधा वल्लभ, बांकेबिहारी जाओ तो बिहारी जी को देखो, मुझे (राधारानी) न देखो, अगर हम बिना घूंघट के बिहारी के पास खड़ी रहेगी तो बिहारी जी तो हमे देखेगें, आप सभी भक्तों पर कृपा कैसे करेगें, आप सभी को बिहारी जी कृपा प्राप्त हो, इसलिए आज भी राधारानी घूंघट मे रहती है।

⇒ बन्धुओ हमारी राधारानी बड़ी कृपालु, दयालु, हैं। वृन्दावन आकर यदि आपको श्रीजी से प्रेम नही हुआ, इसका मतलब आपका वृन्दावन जाना व्यर्थ रहा। राधा रानी को देखकर यदि वापस घर आने का मन कर जाये, तो इसका मतलब आपने राधा रानी देखी ही नही, राधारानी जिस दिन दिख गई, वृन्दावन छोड़ नही पाओगे। जब कभी किशोरी जी की चर्चा प्रारम्भ हो जाती है तो अन्य कोई चर्चा करने का मन ही नही करता।

⇒ हमारी राधा रानी कितनी करुणामय हैं, आपको एक दृष्टान्त के माध्यम से समझाते हैं।

Date:
Page: 79

⇒ एक भक्त हुए श्रीकृष्णदास, ठाकुर जी के बहुत बड़े उपासक थे। कृष्णदास जी का नियम था, नित्यप्रति ठाकुर जी को पुष्पो की माला पहनाते थे, क्यो कि उन्होने कही कथा मे सुना था, १२ वर्ष तक यदि कोई व्यक्ति एक नियम का पालन कर लेता हैं, तो १२ वर्ष बाद वो नियम इतना सिद्ध हो जायेगा कि उस नियम के बदले वो भगवान का दर्शन कर सकता हैं।

⇒ इसका अर्थ यह हैं, यदि आपने १२ वर्ष तक कोई नियम का पालन किया तो तेरहवे वर्ष के पहले दिन आप इतने सिद्ध हो जाओगे, कि आप जो चाहोगें वो प्राप्त कर सकते हो, बस नियम ये हैं कि बिना गैप किए १२ वर्षो तक आपको उस नियम का पालन करना हैं। कृष्णदास जी ने नियम क्या रखा? वो नित्य ठाकुर जी के पास जाकर उनको पुष्पो की माला अपने हांथ से बनाकर के पहनाते, और ठाकुर जी के कान मे कहते, ठाकुर जी जब तेरहवे वर्ष का पहला दिन हो, तब मैं आपको माला पहनाने नही आऊ, आप मेरी कुटियाँ मे आना वहाँ माला पहनाऊंगा।

⇒ कृष्णदास जी नित्य ठाकुर जी को माला पहनाने के लिए नन्दगाँव जाते और ठाकुरजी के कान मे कहते, अब तो ११ वर्ष रह गए बस, अब तो १० वर्ष ही रह गए, अब तो 5 वर्ष ही रह गए, अब तो तीन साल, अब तो एक वर्ष, नृत्य करते हुए जाते कृष्णदास जी लाला अब ६ महीने ही रह गए बस,

Date:
Page: 80

⇒ अब तो दो महीने रह गए, अब तो दस दिन रह गए, अन्तिम दिन था बारहवें वर्ष का कृष्णदास जी रोते हुए गए और बोले लाला आज अन्तिम दिन है। माला गले मे पहनाई, और कहा अब मैं कभी नही आऊंगा बस तेरी प्रतीक्षा करूगा, कल तू आ जाना,

⇒ कृष्णदास जी लौटकर के अपनी कुटियां मे गए छप्पन भोग बनाए, सुन्दर माला बनाई और बैठ गए नन्दभवन के रास्ते, मेरा कन्हैया आ रहा होगा, प्रतीक्षा करने लगे जैसे ही तेरहवे वर्ष का पहला दिन प्रारम्भ हुआ, कृष्णदास जी कन्हैया के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

⇒ पूरा दिन निकल गया किन्तु ठाकुर जी नही आए, तब कृष्णदास जी खुद को कोसने लगे और कहने लगे, अरे मूर्ख तूने विचार कैसे कर लिया ये कपटी तेरे पास आयेगा, जो ब्रजवासियों को अकेला छोड़कर चला गया, रोते हुए यशोदा मैया को छोड़कर चला गया वो तेरे आँसू पोछने आयेगा, तूने गलती की जो इसकी शरण मे आ गया। चल अभी बांध अपना बोरिया, बिस्तर, चल श्यामा जी की शरण मे, वो ही कृपालु है, वो ही दयालु है, ये कन्हैया तो सम्बन्ध बनाने योग्य है ही नही, कृष्णदास अपना सारा सामान पोटली मे बांधकर छप्पन भोग साथ लेकर, जाने लगे बरसाने की ओर, इतने मे ही असंख्य गायों का झुण्ड़ बीच मार्ग मे दिखाई दिया, कृष्णदास जी खड़े हो गए

Date:
Page: 81

⇒ इतनी सारी गैया कहाँ से आ रही हैं? इतने मे ही कृष्णदास जी ने देखा एक ग्वारियाँ ऊँची धोती पहनकर के, कुछ गुनगुनाता हुआ आ रहा हैं, कृष्णदास जी बोले ओ ग्वारियाँ किसकी गैया है ये? ग्वारियाँ बोला बाबा राम-राम, ये सब हमारे नन्दबाबा की गैया हैं।

⇒ बाबा अब तो तुम यहाँ से आगे तभी जा पाओगे जब ये सभी गैया पार हो जायेगी यहाँ से, बीच मे घुसोगे यदि, तो तुम्हारे ऊपर चढ़ जायेगी ये गैया, कृष्णदास जी बोले एक तो सुबह से कुछ खाया नही, ऊपर से यह बाधा और आ गई बीच मे, ग्वारियाँ बोला बाबा सुबह से भूखे तो हम भी हैं, कुछ भोजन पानी हो तो निकाल लो, दोनो साथ बैठकर के खायेगे।

⇒ कृष्णदास जी बोले बैठ जाओ, ग्वारियाँ को बैठाकर के पोटली खोली छप्पन भोग, सजा लिया, कृष्णदास जी पाने लगे, ग्वारियाँ से बोले तू भी पा ले, ग्वारियाँ बोला बाबा मेरे हांथो मे गोबर लगा हैं, आप अपने हांथ से पवा दो, कृष्णदास जी बोले ऐसो ही तो वो तेरो लाला, जीवन भर बाने सेवा कराई, अब भी चैन से जाने नही दे रहा, अब तेरी सेवा करु मैं, आ पास मे बैठ, पास मे बैठाकर के अपने हांथ से खिलाने लगे कृष्णदास जी, खिलाते-खिलाते देखा, उस ग्वारियाँ के नेत्र सजल हो गए, कृष्ण दासजी बोले, भैया रो क्यों रहा हैं? ग्वारियाँ बोला आज तुमने मुझको माला नही पहनाई

Date:
Page: 82

⇒ इसलिए मेरे नेत्र सजल हो गये, जैसे ही कहा तुमने मुझको माला नही पहनाई, कृष्णदास जी खड़े हो गए, और बोले कौन हो तुम, इतने मे ही ठाकुर जी प्रगट हो गये, और बोले बाबा, मैने अपना नियम पूर्ण किया, आज तेरहवें वर्ष का पहला दिन है, और मैं आ गया तेरे पास, कृष्णदास जी नीचे झुके, पोटली उठाई, और दौड़ पड़े बरसाने की ओर।

⇒ ठाकुर जी बोले अब क्यों जा रहे हो? अब तो मैं आ गया, अब तो मैं मिल गया, कृष्णदास जी बोले लाला मैं सब जानता हूँ, बरसाने की तरफ मुख क्या किया कि तुम मिलने आ गए, यदि बरसाने जाकर किशोरी जी की शरण मे रहूंगा, तो तुम तो मेरी सेवा करोगे, हम तो किशोरी जी के हैं, अब तो उन्ही के पास रहेगें, कृष्णदास जी बरसाने जाकर रहने लगे और उन्होने कृष्णदास से बदलकर अपना नाम राधादास रख लिया।

॥ बोलिए राधा रानी सरकार की जय ॥

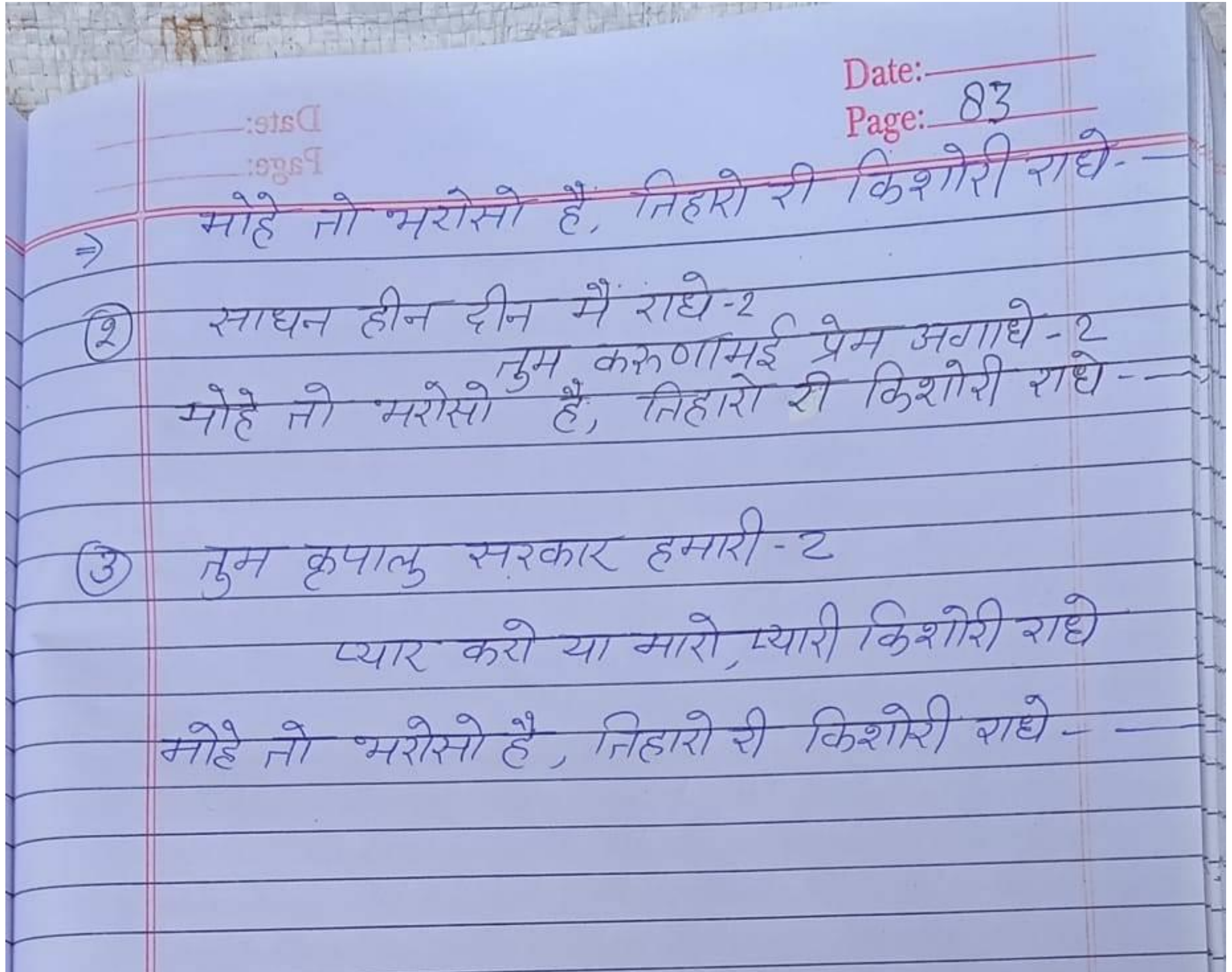
⇒ आइए बन्धुओं दो मिनट हम भी करुणामयी सरकार का नाम गाते हैं। प्रेम से कहिए-

-: भजन :-

मोहे तो भरोसो है, तिहारो री किशोरी राधे -2

① भुक्ति - मुक्ति न मांगत केवल -2

अपनो जान संभालो किशोरी राधे -2


Date:
Page: 83
⇒ मोहे तो भरोसो है, तिहरो री किशोरी राधे- —
② साधन हीन दीन मैं राधे-2
तुम करुणामई प्रेम अगाधे-2
मोहे तो भरोसो है, तिहारो री किशोरी राधे- —
③ तुम कृपालु सरकार हमारी-2
प्यार करो या मारो, प्यारी किशोरी राधे
मोहे तो भरोसो है, तिहारो री किशोरी राधे- —

:- सुदामा चरित :-

Date:
Page: 84

⇒ राजन परीक्षित ने शुकदेव जी से कहा, गुरुदेव आप ने जितनी भी कथायें सुनाई सब बहुत सुन्दर थी, भगवान की कथा सुनकर मन कभी तृप्त होता ही नही हैं बस ऐसा लगता हैं आप कथा सुनाते रहो और मैं बैठकर सुनता रहूँ।

⇒ गुरुदेव हमने सुना हैं, एक नाम भगवान का दीनबन्धु हैं। क्या भगवान ने किसी दीन पर कभी कृपा की है? अगर की हैं, तो किस पर? विस्तार से बताइये।

⇒ तब शुकदेव जी महाराज ने राजन परीक्षित को सुदामा चरित की कथा श्रवण कराई, शुकदेव जी कहते -

श्लोक :- कृष्णस्यासीत् सखा कश्चिद् ब्राह्मणो ब्रह्मवित्तमः।
विरक्त इन्द्रियार्थेषु प्रशान्तात्मा जितेन्द्रियः ॥

⇒ श्रीमद् भागवत महापुराण मे सुदामा नाम नही हैं, अन्य पुराणों मे सुदामा नाम हैं, यहाँ सुदामा उनका नाम नही हैं, यहाँ भागवतकार लिखते हैं, भगवान श्री कृष्ण के एक परमप्रिय सखा थे। यहाँ पर मित्र नही लिखा, (सखा कश्चिद) सखा लिखा हैं। सुदामा जी भगवान श्रीकृष्ण के परमप्रिय सखा थे। बन्धुओ मित्र और सखा दोनों मे अन्तर हैं।

⇒ मित्र किसे कहते हैं?

⇒ यदा, कदा मिलति, जो कभी - कभी मिले

Date:
Page: 85

- उसे मित्र कहते हैं।
⇒ सखा किसे कहते हैं?
⇒ सह खादति, सह खेलति, जो संग खाये, संग खेले, संग रहे, उसे सखा कहते हैं।

⇒ नवधा भक्ति मे 2 भक्ति ऐसी हैं, जो भगवान की इच्छा के बिना नही होती।
(1) पादसेवनम - चरण सेवा
(2) सख्य - सखा

⇒ ठाकुर जी की इच्छा के बिना न तो हमे उनकी चरण सेवा प्राप्त हो सकती हैं, और न ही हम उन्हे अपना सखा बना सकते हैं।

Note- हम कहे भारत के प्रधानमन्त्री जी हमारे सखा हैं, और प्रधानमन्त्री जी हमारा नाम तक नही जानते, तो प्रधानमन्त्री जी हमारे सखा कहाँ से हो गये? जब तक प्रधानमन्त्री जी न कहे कि हाँ हम उनके सखा हैं, तबतक कोई हमारी बात नही मानेगा, कि प्रधानमन्त्री जी हमारे सखा हैं।

⇒ ठीक इसी प्रकार जबतक ठाकुर जी हमे अपना सखा स्वीकार न करे तबतक ठाकुर जी हमारे सखा कैसे बन सकते हैं। भगवान के सखा बनने के लिए कुछ गुण बताए गये हैं, यदि वह गुण आपमे हैं, तो ठाकुर जी आपको भी अपना सखा बना लेगे। कौन- कौन से गुण होने चाहिए?

Date:
Page: 86

भागवतकार कहते हैं, भगवान का सखा बनने के लिए तीन गुण होने चाहिए -

(1) विरक्त इन्द्रियार्थेषु - इन्द्रियों से विरक्त

(2) प्रशान्तात्मा - राग, द्वेष से रहित, शान्त हृदय वाला

(3) जितेन्द्रियः - इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाला इन्द्रियों को ठाकुर जी की सेवा मे लगाने वाला,

⇒ ये तीन गुण जिसके अन्दर हैं, ठाकुर जी कहते वो मेरा सखा हैं इसलिए ये तीन गुण जीवन मे ले आओ, ठाकुर जी आपके सखा बन जायेगें।

⇒ सुदामा जी भगवान के परमप्रिय सखा हैं, ब्राह्मण हैं, सुदामा जी केवल जाति से ब्राह्मण नही थे, (ब्रह्मवित्तमः) वेदो को जानने वाले वेदज्ञ ब्राह्मणों मे भी, श्रेष्ठ विद्वान थे।

⇒ कुछ लोग कहते हैं, सुदामा जी दरिद्र थे, सुदामा जी दरिद्र नही थे। सुदामा जी विरक्त थे, दरिद्र और विरक्त देखने मे एक जैसे होते हैं, लेकिन भाव मे अन्तर होता है। दरिद्र के पास भी कुछ नही होता हैं, खाने पीने को, और विरक्त के पास भी नही होता,

⇒ लेकिन दरिद्र के पास खाने, पीने की कोई वस्तु नही इसलिए वो दुःखी होता हैं, और विरक्त के पास कुछ भी नही, फिर भी वह

Date:
Page: 87

⇒ आनन्द मे, प्रसन्न रहता हैं। इसलिए सुदामा जी दरिद्र नही (विरक्त इन्द्रियार्थेषु) विरक्त थे। सुदामा जी के जीवन मे, सन्तोष था।

⇒ दरिद्र कौन होता हैं? दरिद्र की परिभाषा क्या हैं? भगवान् शंकराचार्य कहते हैं-

⇒ को वा दरिद्रो हि विशाल तृष्णः

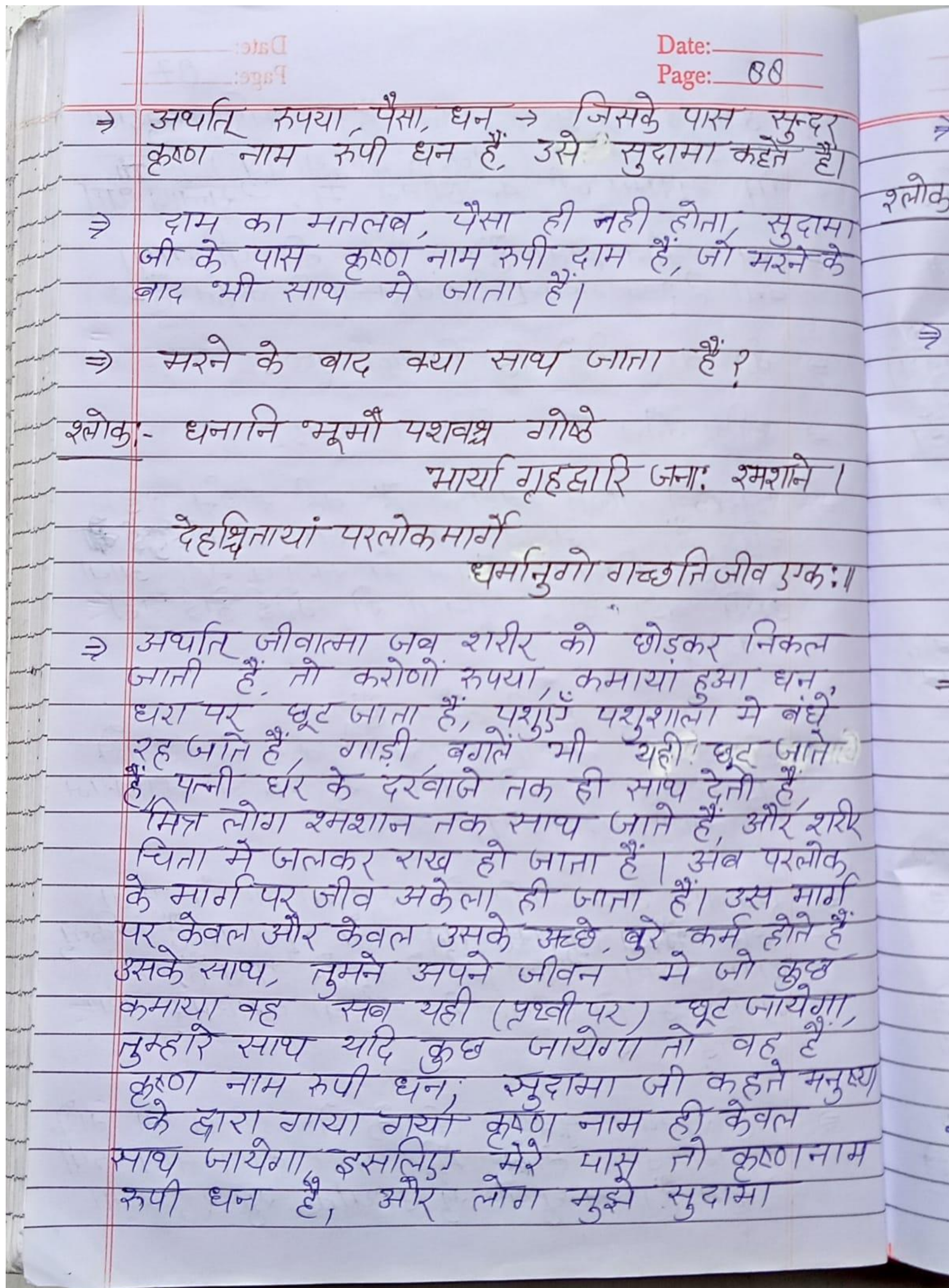
⇒ दरिद्र कौन हैं? विशाल तृष्णः।

⇒ जिसकी तृष्णा विशाल हैं, वही सबसे बड़ा दरिद्र हैं, जिसकी तृष्णा समाप्त नही हुई वो दरिद्र हैं, जिसके जीवन मे सन्तोष नही आया उससे बड़ा दरिद्र दुनियाँ मे कोई होई नही सकता,

= सबसे बड़ा धनी कौन हैं?
⇒ जो अपनी तृष्णा का शमन कर ले, उससे बड़ा कोई धनी नही, सुदामा जी महाराज ऐसे त्यागी पुरुष थे।

⇒ एकबार कुछ लोगों ने सुदामा जी से पूछा अरे! भैया तुम्हारा नाम तो सुदामा हैं, किन्तु दाम (रुपया, पैसा) तो तुम्हारे पास है नही, तुमने अपने जीवन मे क्या कमाया? क्या जोड़कर रखा?

⇒ यह सुनकर सुदामा जी के नेत्र सजल हो गये, सुदामा जी बोले मेरे पास कृष्ण नाम रुपी दाम हैं। बन्धुओं सु अर्थात् सुन्दर, दामा



Date:
Page: 88

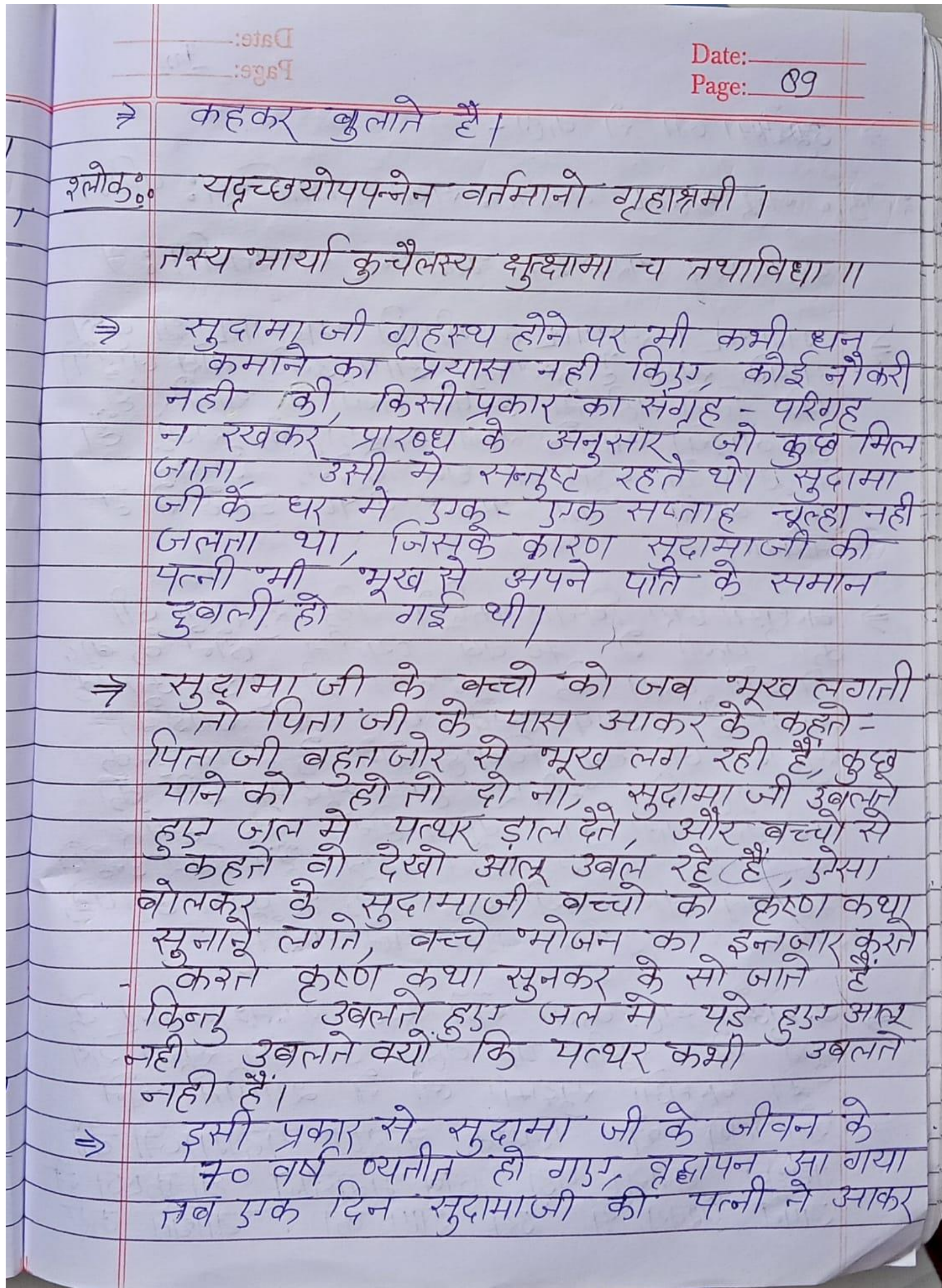
⇒ अर्थात् रुपया, पैसा, धन → जिसके पास सुन्दर कृष्ण नाम रुपी धन हैं, उसे सुदामा कहते हैं।

⇒ दाम का मतलब, पैसा ही नही होता, सुदामा जी के पास कृष्ण नाम रुपी दाम हैं, जो मरने के बाद भी साथ मे जाता हैं।

⇒ मरने के बाद क्या साथ जाता हैं?

श्लोक :- धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे
भार्या गृहद्वारि जनाः श्मशाने।
देहश्चितायां परलोकमार्गे
धर्मानुगो गच्छति जीव एकः॥

⇒ अर्थात् जीवात्मा जब शरीर को छोड़कर निकल जाती हैं तो करोणो रुपया, कमाया हुआ धन, धरा पर छूट जाता हैं, पशुएँ पशुशाला मे बंधे रह जाते हैं, गाड़ी बगले भी यही छूट जाते हैं पत्नी घर के दरवाजे तक ही साथ देती हैं, मित्र लोग श्मशान तक साथ जाते हैं, और शरीर चिता मे जलकर राख हो जाता हैं। अब परलोक के मार्ग पर जीव अकेला ही जाता हैं। उस मार्ग पर केवल और केवल उसके अच्छे, बुरे कर्म होते हैं उसके साथ, तुमने अपने जीवन मे जो कुछ कमाया वह सब यही (पृथ्वी पर) छूट जायेगा, तुम्हारे साथ यदि कुछ जायेगा तो वह है कृष्ण नाम रुपी धन; सुदामा जी कहते मनुष्य के द्वारा गाया गया कृष्ण नाम ही केवल साथ जायेगा, इसलिए मेरे पास तो कृष्णनाम रुपी धन है, और लोग मुझे सुदामा


Date:
Page: 89

⇒ कहकर बुलाते है।

श्लोकः यदृच्छयोपपन्नेन वर्तमानो गृहाश्रमी।
तस्य भार्या कुचैलस्य क्षुत्क्षामा च तथाविधा॥

⇒ सुदामा जी गृहस्थ होने पर भी कभी धन कमाने का प्रयास नही किए, कोई नौकरी नही की, किसी प्रकार का संग्रह - परिग्रह न रखकर प्रारब्ध के अनुसार, जो कुछ मिल जाता, उसी मे सन्तुष्ट रहते थे। सुदामा जी के घर मे एक - एक सप्ताह चूल्हा नही जलता था, जिसके कारण सुदामाजी की पत्नी भी भूख से अपने पति के समान दुबली हो गई थी।

⇒ सुदामा जी के बच्चो को जब भूख लगती तो पिता जी के पास आकर के कहते - पिता जी बहुत जोर से भूख लग रही है, कुछ खाने को हो तो दो ना, सुदामा जी उबलते हुए जल मे पत्थर डाल देते, और बच्चों से कहते वो देखो आलू उबल रहे हैं, ऐसा बोलकर के सुदामाजी बच्चो को कृष्ण कथा सुनाने लगते, बच्चे भोजन का इन्तजार करते करते कृष्ण कथा सुनकर के सो जाते है किन्तु उबलते हुए जल मे पडे हुए आलू नही उबलते क्यों कि पत्थर कभी उबलते नही हैं।

⇒ इसी प्रकार से सुदामा जी के जीवन के 70 वर्ष व्यतीत हो गए, वृद्धापन आ गया तब एक दिन सुदामाजी की पत्नी ने आकर

Date:
Page: 90

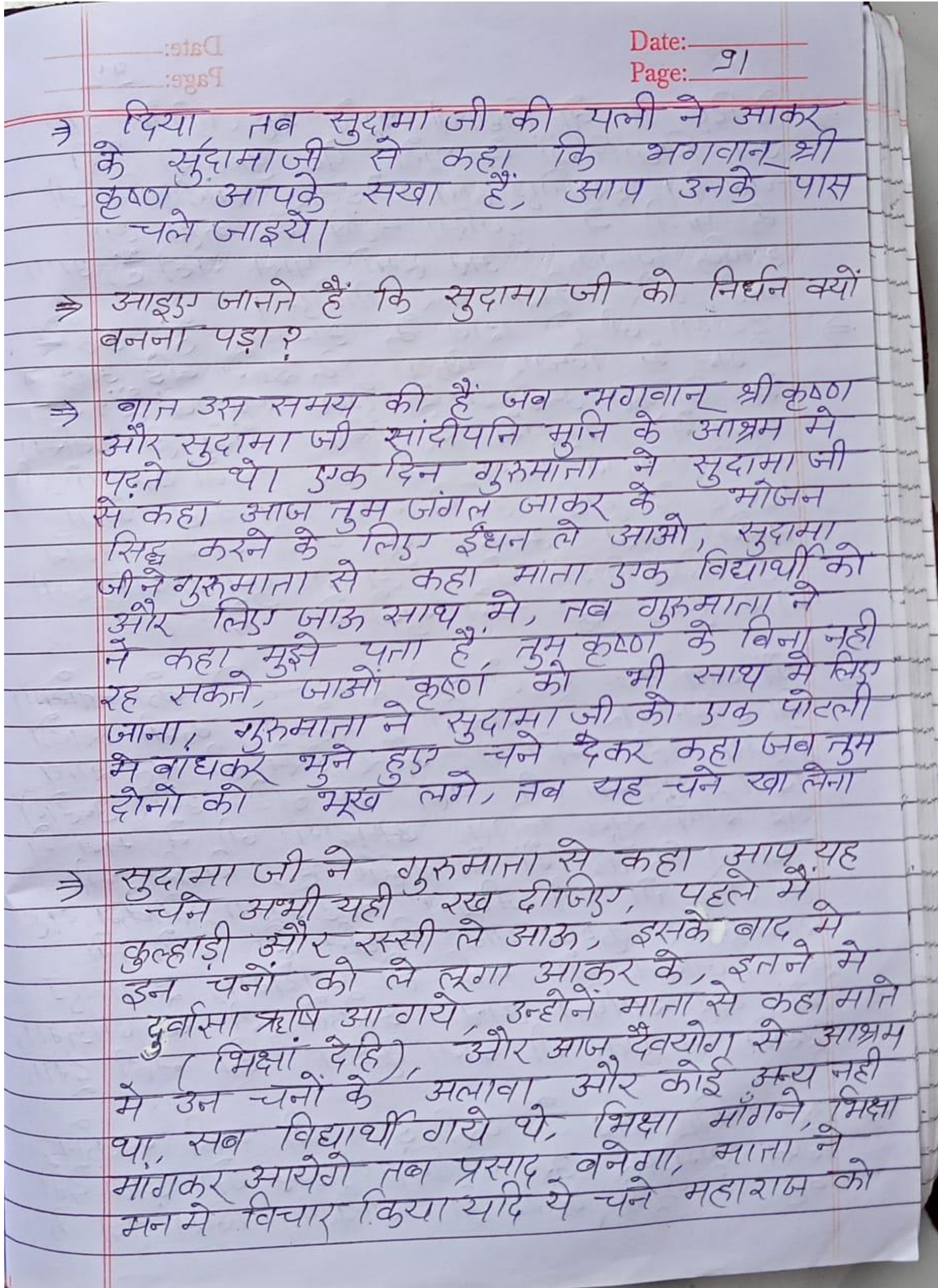
⇒ सुदामा जी से कहा-

श्लोकः- ननु ब्रह्मन् भगवतः सखा साक्षाच्छ्रियः पतिः।
ब्रह्मण्यश्च शरण्यश्च भगवान् सात्वतर्षभः॥

⇒ भगवन! साक्षात लक्ष्मीपति भगवान श्री कृष्ण आपके सखा हैं, इसलिए आप उनके पास जाइये। मेरे लिये नही तो अपने बच्चों के खातिर ही चले जाइये। आपके सखा द्वारका के राजा हैं। वो आपको बहुत सा धन दे देंगे, जिससे हमारे बच्चो का पालन, पोषण अच्छे से हो जायेगा।

⇒ बन्धुओं जरा विचार करिये, कि सुदामा जी की पत्नी ने ७० वर्ष व्यतीत होने के बाद ही क्यों कहा कि भगवान श्री कृष्ण आपके सखा हैं, आप उनके पास चले जाइये, सुदामा जी का विवाह होने के बाद एक सप्ताह के भीतर ही सुदामा जी की पत्नी को पता चल गया होगा कि हमारे पति के कौन-कौन मित्र हैं। फिर उन्होंने ७० वर्ष बाद क्यों कहा कि श्री कृष्ण आपके सखा हैं, उनके पास चले जाइये?

⇒ बन्धुओं यह कथा मैंने एक सन्त भगवान के मुख से सुनी थी वही आपको सुना रहा हूँ। बन्धुओं सुदामा जी ने शापित चने खा लिये थे, जिसके कारण सुदामा जी को निर्धन बनना पड़ा, जब भगवान श्री कृष्ण ने अपने ऐश्वर्य से उस शाप को बाधित कर



Date:
Page: 91

⇒ दिया तब सुदामा जी की पत्नी ने आकर के सुदामाजी से कहा कि भगवान श्री कृष्ण आपके सखा हैं, आप उनके पास चले जाइये।

⇒ आइए जानते हैं कि सुदामा जी को निर्धन क्यों बनना पड़ा?

⇒ बात उस समय की हैं जब भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा जी सांदीपनि मुनि के आश्रम मे पढ़ते थे। एक दिन गुरुमाता ने सुदामा जी से कहा आज तुम जंगल जाकर के भोजन सिद्ध करने के लिए ईंधन ले आओ, सुदामा जी ने गुरुमाता से कहा माता एक विद्यार्थी को और लिए जाऊ साथ मे, तब गुरुमाता ने ने कहा मुझे पता हैं, तुम कृष्ण के बिना नही रह सकते, जाओ कृष्ण को भी साथ मे लिए जाना, गुरुमाता ने सुदामा जी को एक पोटली मे बांधकर भुने हुए चने देकर कहा जब तुम दोनो को भूख लगे, तब यह चने खा लेना

⇒ सुदामा जी ने गुरुमाता से कहा आप यह चने अभी यही रख दीजिए, पहले मै कुल्हाड़ी और रस्सी ले आऊ, इसके बाद मे इन चनो को ले लूगा आकर के, इतने मे दुर्वासा ऋषि आ गये, उन्होने माता से कहा माते (भिक्षां देहि), और आज दैवयोग से आश्रम मे उन चनो के अलावा और कोई अन्य नही था, सब विद्यार्थी गये थे, भिक्षा मांगने, भिक्षा मांगकर आयेगे तब प्रसाद बनेगा, माता ने मन मे विचार किया यदि ये चने महाराज को

Date:
Page: 92

⇒ दे दिए तो वो विद्यार्थी भूखे रह जायेंगे, और उन विद्यार्थियों से भूखे पेट कुल्हाड़ी कैसे चलेगी। इसलिए हाथ जोड़कर सांदीपनि जी की पत्नी ने दुर्वासा ऋषि से कहा आज आपके लायक अन्न हमारे पास नही हैं, आप कही और भिक्षा कर लीजिए।

⇒ दुर्वासा जी तो शिव के अवतार हैं, उन्होने मन मे विचार किया कि इतने बड़े आश्रम मे बिल्कुल अन्न न हो ऐसा सम्भव है? क्या माता ने मुझसे झूठ बोला, जैसे ही दुर्वासा जी ने चिन्तन किया तो उन्हे चनो की पोटली दिखाई दे गई, उन्होने माता से कहा- मैया, तुमने मुझे अपना पुत्र नही माना, तुमने उन विद्यार्थियों को अपना पुत्र माना, इसी मे से एक मुट्ठी चने मुझे दे देती।

⇒ मैं शाप देता हूँ, जो भी इन चनो को खायेगा वो जीवनभर निर्धन रहेगा, कभी उसको ऐश्वर्य नही मिलेगा, और जैसे ही यह शाप दिया, सुदामा जी वहाँ आ गये, और उन्होने यह शाप सुन लिया, सुदामा जी ने मन मे विचार किया, मैं तो ब्राह्मण हूँ, निर्धन भी हो जाऊ, तो भी जीवन काट लूगा, लेकिन यह राजकुमार कृष्ण यदि निर्धन हो गये तो इनका जीवन तो नर्क हो जायेगा, इसलिए मैं, यह शापित अन्न अकेले ही खा जाऊगा, इसमे से एक भी दाना कृष्ण को नही दूंगा,

⇒ उस शापित अन्न को कही डाल भी नही सकते, जिस भूमि पर उस शापित अन्न को डाल देगे वह भूमि बंजर हो जायेगी, जिस वृक्ष के

Date:
Page: 93

⇒ नीचे उस शापित अन्न को डाल देंगे वह वृक्ष बंध्या हो जायेगा, इसलिए वह शापित अन्न अकेले सुदामा जी खा गये।

⇒ जब-जब भगवान् श्रीकृष्ण के सामने भोजन की थाली आती थी, तब-तब उनको सुदामा की याद आती थी।

⇒ जब 70 वर्ष के सुदामा जी हो गये, वृद्धावस्था आ गई, तब भगवान् श्री कृष्ण ने भुजा उठाकर के कहा, बस यहाँ तक तो मैंने दुर्वासा के शाप का निर्वाह कर दिया, लेकिन आज मैं अपने ऐश्वर्य से दुर्वासा जी के शाप को बाधित करता हूँ, आज के बाद यह शाप नही लगेगा। जिस दिन शाप हटा उसी दिन सुदामा जी की पत्नी ने आकर के सुदामा जी से कहा-

⇒ ननु ब्रह्मन् भगवतः - - - -

⇒ हमने सुना है द्वारकाधीश भगवान् श्रीकृष्ण आपके सखा हैं, आप उनके पास चले जाइए। बन्धुओं शुकदेव जी ने सुदामा जी को विरक्त कहा और सुशीला को दरिद्री, सुशीला को दरिद्री इसलिए कहा क्यों कि उनके मन मे धन पाने की तृष्णा है। सुदामा जी ने सुशीला से कहा, धन की इच्छा से तो मैं कृष्ण से मिलने कभी नही जाऊगा, किन्तु हाँ अगर तुम द्वारकाधीश कृष्ण के पास जाने के लिए बोल रही हो तो-

श्लोक। - अयं हि परमो लाभ उत्तमश्लोकदर्शनम् ॥

Date:
Page: 94

⇒ मैं द्वारका अवश्य जाऊंगा, इसी बहाने मुझे अपने बचपन के सखा श्रीकृष्ण के दर्शन हो जायेगें।

⇒ ब्राह्मण देवता ने अपनी पत्नी से कहा, देवी, जब हम किसी रिश्तेदार के घर जाते हैं, तो खाली हांथ नही जाते हैं, कुछ न कुछ भेंट लेकर के जाते हैं। कन्हैया तो द्वारका का राजा है, उसको कुछ न कुछ तो भेंट मे देना चाहिए।

⇒ सुशीला ने कहा स्वामी आप दो मिनट यही बैठो मैं द्वारकाधीश श्री कृष्ण को भेंट देने के लिए कुछ न कुछ व्यवस्था करके लाती हूं।

⇒ सुशीला दौड़कर के अपने पड़ोसियों घर गई और चार मुट्ठी चिउड़े (धान को भून और कूटकर बनाया हुआ चिपटा दाना) माँगकर के ले आई,

श्लोकः॰ याचित्वा चतुरो मुष्टीन् विप्रान् पृथुकतण्डुलान् ।
चैलखण्डेन तान् बद्ध्वा भर्त्रे प्रादादुपायनम् ॥

⇒ और अपने साड़ी मे से एक सिरा फाड़कर के उसमे उन चिउड़ो को बांधकर, सुदामा जी को दे दिया, सुदामा जी ने सुशीला से कहा देवी श्रीकृष्ण द्वारका के राजा हैं, वो तुम्हारे इन चिउड़ों को खायेंगे, उनके लिए तो नित्य छप्पन प्रकार के व्यंजन बनते हैं, सुशीला ने कहा स्वामी आप चिन्ता न करो, आप ये पोटली श्रीकृष्ण दे देना, वो वस्त्र और चिउड़ों को देखकर हमारी स्थिति समझ जायेगें, और जब आप उनसे मिलना तो मेरा

Date:
Page: 95

- एक सन्देश अवश्य कह देना -

⇒ एक मास द्वै पाख मे,
दो एकादशी होंय ।
सो प्रभु दीनदयाल ने,
नितप्रति दीनी मोय ॥

⇒ सुदामा जी बगल मे पोटली दबाकर के द्वारका के लिए चल दिये, रास्ते मे सोचते हुए जा रहे, हम तो श्रीकृष्ण से बचपन मे मिले थे, बहुत वर्ष व्यतीत हो गए, श्रीकृष्ण से मिले नही, अब इतने वर्षों के बाद मिलने जा रहा हूँ, जाने कृष्ण मुझे पहचानेगे कि नही ?

⇒ चलते - चलते सुदामा जी थक गये, उनके पैरों मे छाले पड़ गये, फिर भी वह कृष्ण-कृष्ण कहते हुए द्वारकाधीश से मिलने के लिए चलते चले जा रहे -

:: गजल ::

रस्ते भर रो रो के हमसे पूछा पांव के छालों ने,
बस्ती कितनी दूर बसा ली, दिल में बसने वालों ने
रस्ते भर - - - - -

① कौन हमारा दर्द पढ़ेगा, इन जख्मी दीवारों पर
अपना, अपना नाम लिखा हैं, सारे आने वालो ने
रस्ते भर रो-रो के हमसे - - -

सुदामा जी मन मे सोच रहे हैं -

→ प्रेम पयोधि समझते हो, यह पपीहा प्यासा आया हैं,
करुनानिधि यही समझ लेना, द्विज दर्शन करने आया हैं॥

Date:
Page: 96

⇒ चलते-चलते सुदामा जी थककर एक वृक्ष के नीचे आराम करने लगे। आराम करते-करते सुदामा जी को नींद आ गयी। भगवान् द्वारकाधीश ने विचार किया मेरा सखा सुदामा मुझसे मिलने आ रहा हैं। उन्होने विचार किया कि ऐसा निष्ठावान, सदाचारी, अयाचक, तपस्वी को पैदल चलाना शोभा नही दे रहा हैं।

⇒ भगवान् ने गरुड़ जी को बुलाकर सुदामा जी को आकाश मार्ग से द्वारकापुरी पहुँचाने का आदेश दिया। बन्धुओं मेरे परमात्मा का नियम हैं कि जब कोई भक्त उनसे मिलने के लिए एक कदम बढ़ाता हैं तो मेरे गोविन्द सौ कदम आगे बढ़कर उसे स्वीकार करते हैं।

⇒ सुदामा जी वृक्ष के नीचे बैठे सो रहे थे, सोते हुए सुदामा जी को गरुड़ जी ने द्वारका मे पहुँचा दिया। सुबह सुदामा जी की आँख खुली तो उन्होने देखा कि वह किसी सुन्दर नगर मे आ गये हैं, जहाँ चारो ओर सुन्दर, सुन्दर अट्टालिकायें दिखाई दे रही थी।

⇒ इतने मे सामने से दो पहरेदार आते दिखाई दिए सुदामा जी को, सुदामा जी ने उनसे पूछा भैया, मुझे द्वारका जाना है, क्या तुम बता सकते हो, यहाँ से द्वारका कितनी दूर है?

⇒ पहरेदार हँसते हुए बोले- आप द्वारका मे खड़े होकर पूछ रहे हैं, द्वारका कितनी दूर हैं। अरे! ब्राह्मणदेव आप द्वारका मे ही खड़े हैं।

Date:
Page: 97

=> सुदामा जी आश्चर्य चकित, अरे भैया इतनी जल्दी द्वारकापुरी आ गये? पहरेदारो ने पूछा आप यह बताओ आपको द्वारका मे किसके घर जाना हैं?

=> सुदामा जी बोले भैया मुझे अपने बचपन के सखा कन्हैया के घर जाना हैं। पहरेदारों ने पूछा ये कन्हैया कौन हैं? पूरा पता बताओ? मकान नम्बर, मुहल्ला का नाम?

=> सुदामा जी बोले अरे भैया तुम कन्हैया को नही जानते? मेरे बचपन का सखा है कन्हैया, वैसे उनका पूरा नाम श्री कृष्णचन्द्र है।

=> पहरेदार तो नाम सुनते ही चौंक पड़े। अरे! आप तो हमारे महाराज का नाम ले रहो हो। अरे ब्राह्मण देवता उनका नाम लेने से पहले पता हैं कितने विशेषण लगाये जाते हैं?

=> सर्वेश्वर, सर्वत्र, स्वतन्त्र, दीनबन्धु, दीनानाथ, राजाधिराज, गो विप्र पालक, विश्ववन्द्य, द्वारकाधीश भगवान श्री कृष्ण, और आप न जाने ये कैसा नाम ले रहे हैं? ये नाम तो हमने पहली बार सुना हैं।

=> सुदामा जी इतने लम्बे चौड़े विशेषण सुनकर चक्कर मे पड़ गये, और बोले भैया कन्हैया ने इतना लम्बा चौड़ा नाम रख लिया? अच्छा अगर आप जान गये हो तो मुझे बताओ उनका महल कहाँ है?

Date:
Page: 98

⇒ पहरेदार ने सुदामा जी से कहा, महाराज बिल्कुल सीधे चले जाइये, सामने जो बड़े-बड़े विशाल भवन दिख रहे हैं, वह सब द्वारकाधीश श्री कृष्णचन्द्र के ही हैं।

⇒ पहरेदार से पता पूँछकर सुदामा जी भगवान् के अन्तःपुर, रुक्मिणी जी के महल मे प्रवेश कर गये, द्वार पर खड़े सेवकों ने सुदामा जी का स्वागत किया और उनसे पूछा आपको किससे मिलना हैं?

⇒ सुदामा जी ने कहा - भैया मुझे अपने बचपन के सखा श्रीकृष्णचन्द्र से मिलना हैं, जाकर अपने महाराज से कह दो, तुम्हारे बचपन का सखा सुदामा तुमसे मिलने आया हैं।

⇒ सेवकों ने द्वारकाधीश के पास आकर के कहा महाराज एक ब्राह्मण देवता आए हैं, वह आपसे मिलना चाहते हैं,? भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा ब्राह्मण देवता का नाम क्या हैं? पूरा परिचय दो उनका-

⇒ सेवकों ने कहा -

सीस पगा न झँगा तन मे,
प्रभु! जानै को आहि बसे केहि ग्रामा।
धोती फटी सी लटी-दुपटी अरु,
पाँय उपानह की नहिं सामा॥
द्वार खड्यो द्विज दुर्बल एक,
रह्यौ चकिसौं वसुधा अभिरामा।
पूछत दीन दयाल को धाम
बतावत आपनो नाम सुदामा॥

सुदामा नाम सुनते ही भगवान् दौड़ पड़े-

Date:
Page: 99

नाम सुदामा का सुनते ही तज
आसन धाये द्वार कि ओरा।
मुकुट कहीं तो कही पट उलझा
मिलने को व्याकुल धीर न धेरा॥

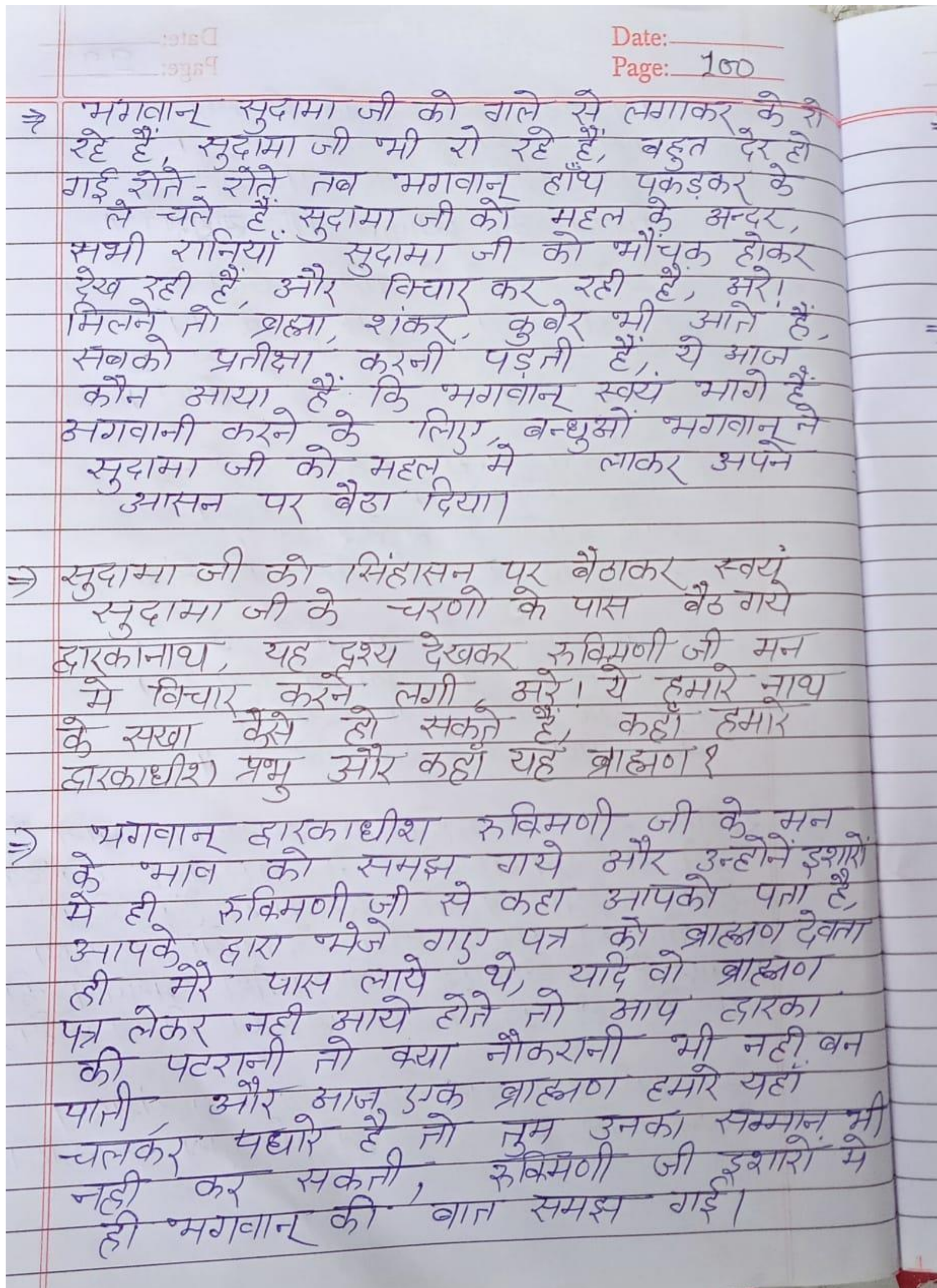
ऐसी उतावली है गति मे जैसे
बावली वायु का मन्द झकोरा।
मित्र से भेंट को मित्र चले ज्यो
धावत चाँद की ओर चकोरा॥

दीनों के बन्धु करुणा के सिन्धु
लेकर नैनों मे जल बिन्दु।
सारे नातों से बढ़के एक
स्नेह का नाता निभाने चले हैं॥

भ्रमण करते जो फूलों के रथ पे
चलते हैं वो पथरीले पथ पे।
नंगे पाँव जो आया उसको
नंगे पाँव बुलाने चले हैं॥

⇒ सुदामा - सुदामा कहते हुए भगवान भागे है, जैसे ही सुदामा जी ने भगवान को देखा कन्हैया - कन्हैया कहते हुए भागे हैं। दोनों सखाओं का मिलन हुआ, देवताओं ने पुष्प बरसाए हैं। बोलिए द्वारकाधीश भगवान की जय हो, श्री सुदामा जी महाराज की जय हो,

प्रेम भरी इस भेंट को, देख रहा संसार।
देखने वाले कर रहे, हरि की जय-जयकार॥

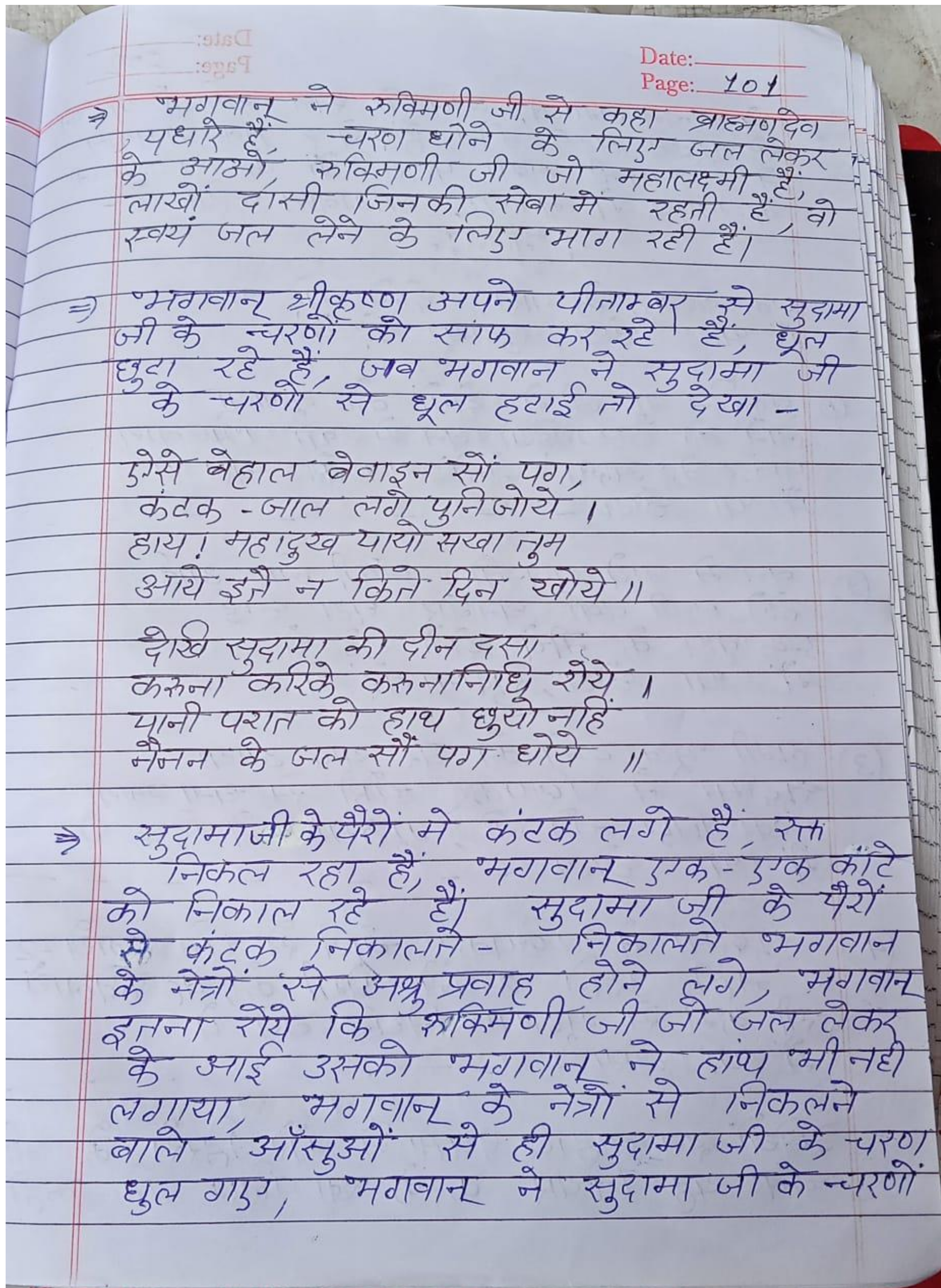


Date:
Page: 100

⇒ भगवान् सुदामा जी को गले से लगाकर के रो रहे हैं, सुदामा जी भी रो रहे हैं, बहुत देर हो गई रोते-रोते तब भगवान् हाँथ पकड़कर के ले चले हैं सुदामा जी को महल के अन्दर, सभी रानियाँ सुदामा जी को भौंचक होकर देख रही हैं, और विचार कर रही हैं, अरे! मिलने तो ब्रह्मा, शंकर, कुबेर भी आते हैं, सबको प्रतीक्षा करनी पड़ती हैं, ये आज कौन आया हैं कि भगवान् स्वयं भागे हैं अगवानी करने के लिए, बन्धुओ भगवान् ने सुदामा जी को महल मे लाकर अपने आसन पर बैठा दिया।

⇒ सुदामा जी को सिंहासन पर बैठाकर स्वयं सुदामा जी के चरणो के पास बैठ गये द्वारकानाथ, यह दृश्य देखकर रुक्मिणी जी मन मे विचार करने लगी, अरे! ये हमारे नाथ के सखा कैसे हो सकते हैं, कहाँ हमारे द्वारकाधीश प्रभु और कहाँ यह ब्राह्मण?

⇒ भगवान् द्वारकाधीश रुक्मिणी जी के मन के भाव को समझ गये और उन्होंने इशारों मे ही रुक्मिणी जी से कहा आपको पता है, आपके द्वारा भेजे गए पत्र को ब्राह्मण देवता ही मेरे पास लाये थे, यदि वो ब्राह्मण पत्र लेकर नही आये होते तो आप द्वारका की पटरानी तो क्या नौकरानी भी नही बन पाती और आज एक ब्राह्मण हमारे यहाँ चलकर पधारे है तो तुम उनका सम्मान भी नही कर सकती, रुक्मिणी जी इशारों मे ही भगवान् की बात समझ गई।



Date:
Page: 101

⇒ भगवान ने रुक्मिणी जी से कहा ब्राह्मणदेव पधारे हैं, चरण धोने के लिए जल लेकर के आओ, रुक्मिणी जी जो महालक्ष्मी हैं, लाखों दासी जिनकी सेवा मे रहती हैं, वो स्वयं जल लेने के लिए भाग रही हैं।

⇒ भगवान श्रीकृष्ण अपने पीताम्बर से सुदामा जी के चरणों को साफ कर रहे हैं, धूल धुला रहे हैं, जब भगवान ने सुदामा जी के चरणों से धूल हटाई तो देखा -

ऐसे बेहाल बेवाइन सों पग,
कंटक -जाल लगे पुनि जोये।
हाय! महादुख पायो सखा तुम
आये इतै न किते दिन खोये॥

देखि सुदामा की दीन दसा,
करुना करिके करुनानिधि रोये।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं
नैनन के जल सौं पग धोये॥

⇒ सुदामाजी के पैरों मे कंटक लगे हैं, रक्त निकल रहा हैं, भगवान एक-एक काँटे को निकाल रहे हैं सुदामा जी के पैरों से कंटक निकालते - निकालते भगवान के नेत्रों से अश्रु प्रवाह होने लगे, भगवान इतना रोये कि रुक्मिणी जी जो जल लेकर के आई उसको भगवान ने हाथ भी नही लगाया, भगवान के नेत्रों से निकलने वाले आँसुओं से ही सुदामा जी के चरण धुल गए, भगवान ने सुदामा जी के चरणों

मे चन्दन लगाया, अब तो सब रानियाँ भगवान् से पूछने लगी कौन हैं ये? तब भगवान् ने अपनी सभी पटरानियों को सुदामा जी के विषय मे बताया, भगवान कहते हैं-

:: भजन ::

एक ही गुरु के पास, दोनो पढ़े थे।
मैं था छोटा, सुदामा बड़े थे ॥

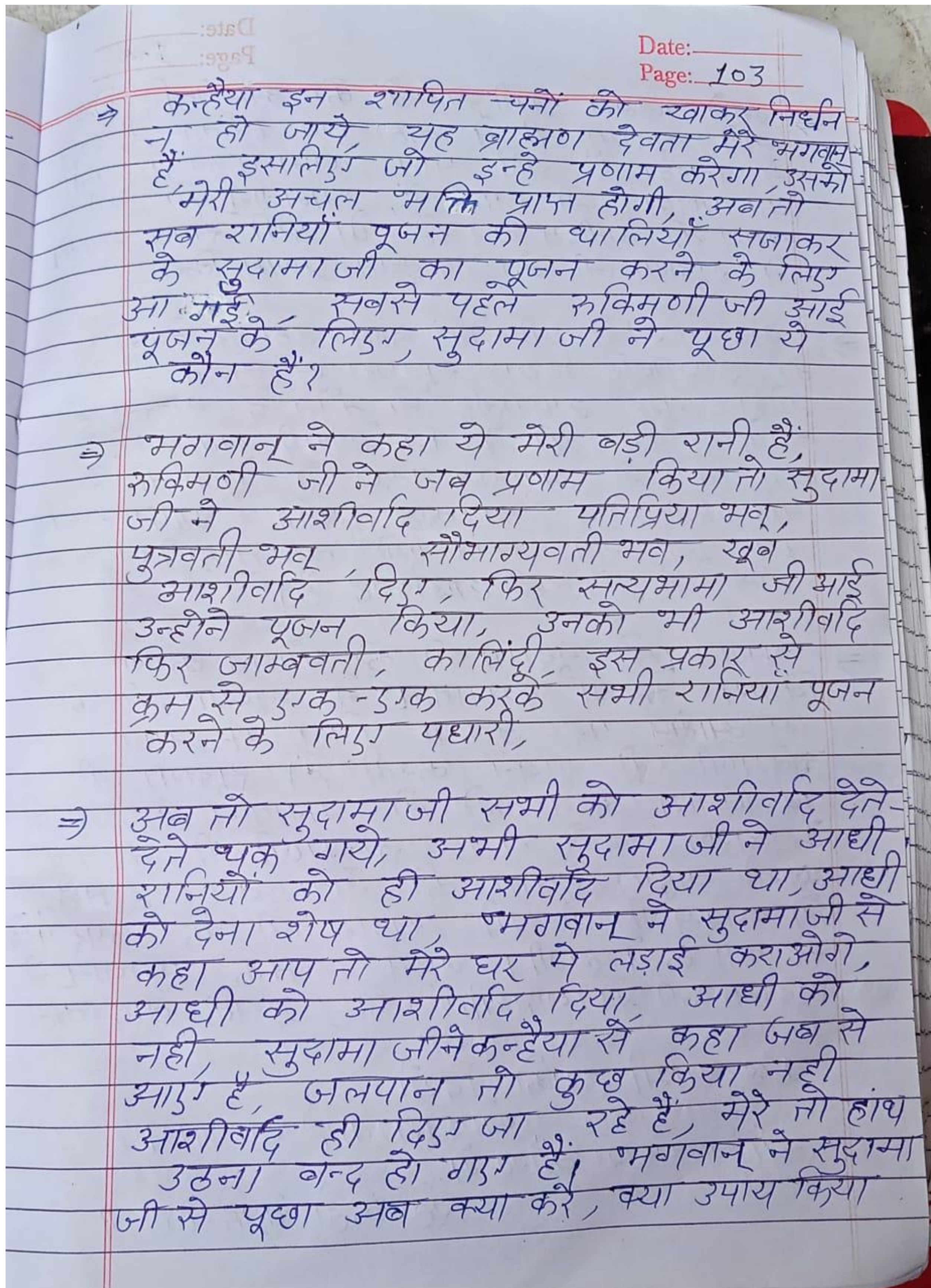
① एक दिन गुरु जी ने दोनों को बुलाया
लाने को लकड़ियाँ वन मे था भिजवाया
पाकर के आज्ञा दोनों, वन को चले थे
मैं था छोटा - - - - - -

② वन मे गये जब वो, आंधी जोर आई
होने लगी वर्षा घनघोर घटा छाई
एक वृक्ष के नीचे दोनों खड़े थे
मैं था छोटा, सुदामा बड़े थे - - - -

③ लगी भूख दोनों को घर याद आया
सुदामा ने छिपकर चोरी से चना खाया
खा लिए चने जो, गुरुमाता ने दिए थे
मैं था छोटा - - - - - - -

④ सुदामा ने छिपकर चोरी से चने खाये -2
नही उसने अपने प्रेमी को, वह खिलाये
इसी कर्म से सुदामा निर्धन बने थे
मैं था छोटा - - - - - -

देवियों इन ब्राह्मण देवता ने मेरे हिस्से के भी चने यह विचार करके खा लिए, कि कहीं



Date:
Page: 103

⇒ कन्हैया इन शापित चनों को खाकर निर्धन न हो जाये, यह ब्राह्मण देवता मेरे भगवान् हैं इसलिए जो इन्हे प्रणाम करेगा, उसको मेरी अचल भक्ति प्राप्त होगी, अब तो सब रानियाँ पूजन की थालियाँ सजाकर के सुदामा जी का पूजन करने के लिए आ गई, सबसे पहले रुक्मिणी जी आई पूजन के लिए, सुदामा जी ने पूछा ये कौन हैं?

⇒ भगवान् ने कहा ये मेरी बड़ी रानी हैं, रुक्मिणी जी ने जब प्रणाम किया तो सुदामा जी ने आशीर्वाद दिया पतिप्रिया भव, पुत्रवती भव, सौभाग्यवती भव, खूब आशीर्वाद दिए, फिर सत्यभामा जी आई उन्होने पूजन किया, उनको भी आशीर्वाद फिर जाम्बवती, कालिंदी इस प्रकार से क्रम से एक-एक करके सभी रानियां पूजन करने के लिए पधारी,

⇒ अब तो सुदामा जी सभी को आशीर्वाद देते-देते थक गये, अभी सुदामा जी ने आधी रानियों को ही आशीर्वाद दिया था, आधी को देना शेष था, भगवान ने सुदामा जी से कहा आप तो मेरे घर से लड़ाई कराओगे, आधी को आशीर्वाद दिया, आधी को नही, सुदामा जीने कन्हैया से कहा जब से आए है, जलपान तो कुछ किया नही आशीर्वाद ही दिए जा रहे हैं, मेरे तो हाथ उठना बन्द हो गए हैं, भगवान ने सुदामा जी से पूछा अब क्या करें, क्या उपाय किया

Date:
Page: 104

⇒ जाये, जिससे सभी रानियों को आशीर्वाद मिल जाये, सुदामा जी ने कहा एक तरीका हैं, शास्त्र मे लिखा हैं, यदि पति प्रणाम करले तो पत्नी का प्रणाम हो जाता हैं, भगवान तो इसी समय की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसी समय भगवान ने सुदामा जी को दण्डवत प्रणाम किया,

⇒ सुदामा जी ने भी दोनों हाथ उठाकर के गोविन्द को आशीर्वाद दिया, सुदामा जी कहते हैं, हे गोविन्द तुम्हे आशीर्वाद तो कौन दे सकता हैं, बाकि जिन्दगी मे जितने भी एकादशी के व्रत किये हो, अनुष्ठान किए हो, पूजा की हो, पाठ किये हो, सबकुछ तुमको प्राप्त होजाये तुम सुखी रहो, अनंत युगो तक तुम्हारी जयजयकार होती रहे, यही आशीर्वाद हैं।

⇒ भगवान ने सुदामा जी को भोजन कराया फिर विश्राम कराया, भगवान ने सुदामा जी को उस पलंग पर सुलाया जिस पर माता रुक्मिणी जी शयन करती हैं। सुदामा जी जब विश्राम करने लगे तो भगवान सुदामाजी के चरण दबाने लगे, रुक्मिणी जी ने देखा स्वामी ब्राह्मण देवता की सेवा कर रहे हैं तो रुक्मिणी जी भी सुदामा जी के ऊपर पंखे से हवा करने लगी। बहुत देर तक भगवान ने सुदामा जी से बातचीत की, इसके बाद कहा-

कछु भाभी हमको दियौ
सो तुम काहे न देत।
चाँपि पोटरी काँख मे,
रहे कहौ केहि हेत ॥

Date:
Page: 105

⇒ ब्राह्मण देवता आप अपने घर से मेरे लिए क्या उपहार लाये हैं? भगवान बोले ब्राह्मण देवता विवाह कर लिया कि नही? सुदामा जी बोले भैया न चाहते हुए भी हो गया, भगवान बोले फिर तो भाभी जी ने हमारे लिए कुछ अवश्य भेजा होगा?

⇒ सुदामा जी ने विचार किया यदि मैंने चिउड़ो की पोटली रुक्मिणी जी के सामने भगवान को दी तो, रुक्मिणी जी क्या सोचेगी? इसलिए सुदामा जी ने वह पोटली भगवान को नही दी और लज्जावश अपना मुंह नीचे कर लिया। और भगवान से बोले -

⇒ हे गोविन्द -

जाको भरै नही पेट।
वापे धरी हैं क्या भेंट

⇒ हे गोविन्द जो अपना पेट नही भर पाता वो आपको क्या भेंट देगा? इतने मे भगवान की दृष्टि उस पोटली पर गई, जो सुदामा जी छुपा रहे थे, भगवान ने सुदामा जी से पूछा इसमे क्या हैं? और इतना पूछते ही भगवान ने सुदामा जी के हाथ से वह पोटली छीन ली,

श्लोक - स्वयं जहार किमिदमिति पृथुकतण्डुलान्।

और बड़े आदर से कहने लगे - प्यारे सखा! यह तो तुम मेरे लिये अत्यन्त प्रिय भेंट ले आये हो। ये चिउड़े न केवल मुझे, बल्कि

Date:
Page: 106

⇒ सारे संसार को तृप्त करने के लिए पर्याप्त हैं। ऐसा कहकर भगवान ने उसमे से एक मुट्ठी चिउड़ा भरे और प्रेम से खाने लगे-

प्रेम के भूखे, प्रेम के तंदुल
प्रेम के भाव से खाने लगे हैं -2

तंदुल के दानो मे प्यारे विप्र का
दैन्य, दरिद्र चबाने लगे हैं

श्लोकः॰ इति मुष्टिं सकृज्जग्ध्वा द्वितीयां जग्धुमाददे।
तावच्छ्रीर्जगृहे हस्तं तत्परा परमेष्ठिनः ॥

⇒ ज्यों ही दूसरी मुट्ठी भरी भगवान ने त्यों ही रुक्मिणी जी ने भगवान श्रीकृष्ण का हाथ पकड़ लिया। लोग कहते हैं भगवान ने दो मुट्ठी चावल खा लिये, तीसरी मुट्ठी खाने चले तो रुक्मिणी जी ने हाथ पकड़ लिया, जबकि भागवत जी मे स्पष्ट रूप से यह लिखा हैं कि ज्यो ही भगवान ने दूसरी मुट्ठी भरी त्यों ही रुक्मिणी जी ने हांथ पकड़ लिया। रुक्मिणी जी ने भगवान का हांथ क्यों पकड़ लिया ?

→ रुक्मिणी जी ने भगवान का हांथ इसलिए पकड़ लिया, रुक्मिणी जी ने भगवान से कहा-

श्लोकः- एतावतालं विश्वात्मन् सर्वसम्पत्समृद्धये। सुदामा जी को सम्पत्ति देने के लिए उन पर कृपा करने के लिये ये एक मुट्ठी ही

Date:
Page: 107

⇒ पर्याप्त हैं, अगर दूसरी मुट्ठी आप खा लेंगे तो उसके बदले मे सुदामा जी को देंगे क्या? एक मुट्ठी खाकर के आप सबकुछ देदे लेकिन दूसरी मुट्ठी खाने के बाद आपके पास कुछ बचेगा नही, केवल मैं बचूंगी, क्या मुझको भी इस ब्राह्मण के साथ विदा कर दोगे?

एक ही मुट्ठी मे एक-एक लोक
सुदामा के भाग्य मे जाने लगे हैं

त्रिभुवन पति की देख उदारता,
तीनो भवन थर्राने लगे हैं

पहली मुट्ठी मे ही स्वर्ग और पृथ्वी
सुदामा विप्र को सौंप दिया हैं

दूसरी मुट्ठी मे देने लगे है जो
वैकुण्ठ तो लक्ष्मी ने रोक लिया हैं

अपना निवास भी दान मे दे रहा
कैसा दानी ये मेरा पिया है

और दूसरा भाव यह हैं कि रुक्मिणी जी ने मानो भगवान् से कहा यह ब्राह्मण के घर से आया अन्न है, और ब्राह्मण के घर का अन्न सबसे पवित्र होता हैं। एक मुट्ठी तो आपने अकेले खा लिया आपके पीछे सोलह हजार एक सौ आठ पटरानियाँ हैं, कम से कम इनको एक-एक चावल तो मिल जाये, इसलिए बाकी प्रसाद तो छोड़ दो, तो हम लोगों को भी मिल जाये, इसलिए रुक्मिणी जी ने हाथ पकड़ लिया।

Date:
Page: 108

⇒ इसके बाद जो तीन मुट्ठी चावल शेष रह गया, उसको रुक्मिणी जी ने (एक-एक - चावल) सभी को प्रसाद के रूप मे बाँट दिया।

⇒ सुदामा जी सात दिन तक द्वारका रहे थे, वो सात दिन कैसे बीत गये पता नही पड़ा, अंत मे सुदामा जी चलने की कहने लगे, भगवान ने बहुत रोका, सुदामा जी ने कहा नही अब मुझे जाना हैं।

⇒ चल पड़े सुदामा जी, भगवान दरवाजे तक छोड़ने आये, चलते समय भगवान ने सुदामा जी को कुछ नही दिया। लोग कहते हैं, सुदामा जी रास्ते मे कहते हुए जा रहे थे, कुछ दिया नही कन्हैया ने, ऐसी बात नही हैं, लोगों को हँसाने के लिए शास्त्र से अन्याय नही करना चाहिए।

⇒ सुदामा जी ये कहेंगे कि भगवान ने मुझे कुछ दिया नही, कैसी भद्दी बात हैं अरे! सुदामा जी तो रोते जा रहे हैं, कि मुझ जैसे ब्राह्मण को भगवान ने गले से लगाया इतना सम्मान दिया, उनके जैसा दयालु कौन होगा?

⇒ जब सुदामा जी चलते-चलते अपनी पुरी मे पहुँचे, तो सुदामा जी को भ्रम होगया कि कही मैं इसरे नगर मे तो नही आ गया। ऊँचे, ऊँचे महलों को देखकर सुदामा जी को लगा कि कही मैं वापस लौटकर

Date:
Page: 109

⇒ द्वारका तो नही आ गया, सुदामा जी विचार करने लगे यहाँ तो मेरी छोटी सी झोपड़ी थी, ये इतना बड़ा महल कहाँ से बन गया?

सुदामा मन्दिर देख डरे
सुदामा मन्दिर देख डरे

यहाँ तो थी मेरी टूटी झुपड़ियाँ-२
अब कंचन महल खड़े -२
सुदामा मन्दिर — — —
सुदामा मन्दिर — — —

⇒ इतने मे सुदामा जी की पत्नी सुशीला देवी आरती का थाल हाथ मे लेकर के पधारी हैं जिसको भर पेट भोजन नही मिलता था, नख से सिर तक आभूषणों से लदी थी, जैसे ही सुशीला देवी ने प्रणाम किया, सुदामा जी तो सुशीला देवी को पहचान ही नही पाए, पूछा देवी आप कौन हो? तब सुशीला देवी ने कहा महाराज मैं आपकी पत्नी हूँ।

⇒ सुदामा जी ने पूछा देवी यह सब कैसे हो गया? तब सुशीला देवी ने कहा स्वामी, द्वारकाधीश श्री कृष्ण ने हमारे दारिद्रय हर लिये, भक्तमाल मे तो लिखा हैं, सुनकर सुदामा जी मूर्छित हो गए मैं लुट गया, मैं लुट गया, मेरी भक्ति का मोल लगा दिया, द्वारकाधीश ने, तभी द्वारकाधीश प्रगट हो गये, गोद मे लिया, सुदामा जी को, भगवान् से कहा सुदामा जी ने क्यों इतनी संपत्ति देदी, ये माया बड़ी ठगनी हैं, माया मे पड़कर जीव मायापति को भूल जाता हैं। भगवान् ने कहा

⇒ भाभी ने माया माँगी थी, भाभी को माया दे दी, अब तुम माला पकड़े रहो, झगड़े की क्या बात है। सुदामा जी ने भगवान् से कहा कन्हैया पहले मुझे वचन दो कि तुम्हारी माया मुझे नही सतायेगी, भगवान् ने कहा मैं वचन देता हूं, मेरी माया तुम्हे नहीं सतायेगी।

⇒ सुदामा जी की समस्या का समाधान हो गया, और श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त हुई। ये जो कथा है, दारिद्रय को हरने वाली कथा है, गोविन्द कृपा करे, और जैसे सुदामा जी के दारिद्रय को हर लिया ऐसे ही हमारे सभी दारिद्रय को हर ले। सुदामा जी पर भगवान् ने किस प्रकार कृपा की शुकदेव जी ने राजन् परीक्षित को विस्तार पूर्वक श्रवणपान कराया।

⇒ इसके बाद शुकदेव जी ने कृष्णपटरानियों और द्रौपदी के मध्य क्या बातचीत हुई इस कथा को कहा, फिर वेदो ने आकर भगवान् की स्तुति की इस कथा को कहा, फिर त्रिपुरासुर वध की कथा सुनाई, फिर दशम स्कन्ध को विराम दिया।

⇒ ग्यारहवे स्कन्ध मे विशेष रूप से शुकदेव जी ने भगवान् के स्वधाम गमन एवं नवयोगेश्वर संवाद और दत्तात्रेय जी के 24 गुरुओं की चर्चा की,

⇒ शुकदेव जी ने राजन् परीक्षित से कहा - परीक्षित अब तुम क्या सुनना चाहते हो ? परीक्षित जी ने कहा महाराज ये बताओ भगवान् ने अपनी लीला का संवरण कैसे किया ? भगवान् अपनी

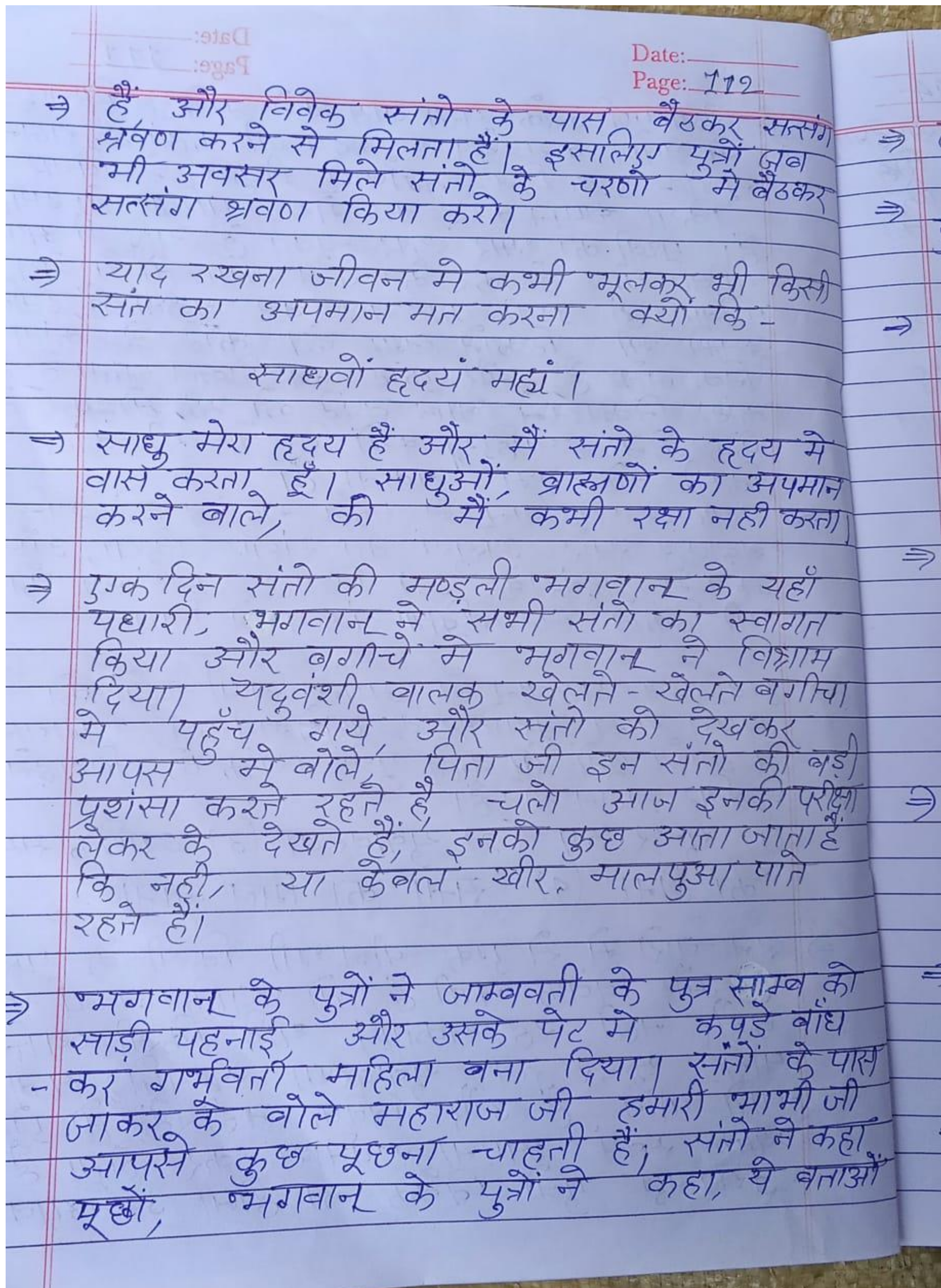
Date:
Page: 111

⇒ लीला पूर्ण करके परम धाम कैसे गये ? विस्तार से श्रवण कराइये। शुकदेव जी कहते हैं- राजन सुनो- एक दिन भगवान् श्रीकृष्ण ने विचार किया छप्पन करोड़ का मेरा परिवार हो गया है। पृथ्वी का भार उतर चुका हैं, यदि मैं अपने परिवार को छोड़कर के चला गया, तो ये मेरा परिवार ही पृथ्वी का भार बन सकता हैं, इसलिए इसको भी ठिकाने लगा दो। कांटे से कांटा निकालते हैं, और कांटा जब निकल जाता हैं, तो कांटा निकालने वाले कांटे को भी, तोड़कर के फैंक देना चाहिए, क्योंकि वो भी कांटा किसी को चुभ सकता हैं।

⇒ इसलिए भगवान् ने पहले यदुवंश की शक्ति को बढ़ाकर सारे असुरों का संघार किया, और अन्त मे यदुवंश के उस विशाल जनसंख्या को भी ठिकाने लगाने का संकल्प ले लिया।

⇒ एक दिन भगवान् ने अपने सभी पुत्रों को अपने पास बुलाकर के उपदेश दिया, भगवान् ने अपने पुत्रों से कहा पुत्रों व्यक्ति को बिगड़ने के चार साधन होते हैं।
(1) सुन्दर रुप (2) युवावस्था (3) अधिक सम्पत्ति का होना (4) सत्ता का मिल जाना

⇒ इन चारो मे से एक चीज भी किसी के पास मे हैं और विवेक नही हैं, तो व्यक्ति अनर्थ किये बगैर नही रह सकता। यदि किसी व्यक्ति के पास सुन्दर रुप, युवावस्था, सम्पत्ति, सत्ता चारो चीजे हैं और विवेक नही हैं, तो ऐसा व्यक्ति स्वयं अपना सर्वनाश कर लेता हैं। इसलिए पुत्रों विवेक का होना अतिआवश्यक


Date:
Page: 112

⇒ है और विवेक संतो के पास बैठकर सत्संग श्रवण करने से मिलता हैं। इसलिए पुत्रों जब भी अवसर मिले संतो के चरणों मे बैठकर सत्संग श्रवण किया करो।

⇒ याद रखना जीवन मे कभी भूलकर भी किसी संत का अपमान मत करना क्यों कि -

साधवों हृदयं मह्यं।

⇒ साधु मेरा हृदय हैं और मैं संतो के हृदय मे वास करता हूँ। साधुओं, ब्राह्मणों का अपमान करने वाले, की मैं कभी रक्षा नही करता।

⇒ एक दिन संतो की मण्डली भगवान के यहाँ पधारी, भगवान ने सभी संतो का स्वागत किया और बगीचे मे भगवान ने विश्राम दिया। यदुवंशी बालक खेलते-खेलते बगीचा मे पहुँच गये, और संतो को देखकर आपस मे बोले, पिता जी इन संतो की बड़ी प्रशंसा करते रहते है चलो आज इनकी परीक्षा लेकर के देखते हैं, इनको कुछ आता जाता है कि नही, या केवल खीर, मालपुआ पाते रहते हैं।

⇒ भगवान के पुत्रों ने जाम्बवती के पुत्र साम्ब को साड़ी पहनाई और उसके पेट मे कपड़े बाँध - कर गर्भवती महिला बना दिया। संतो के पास जाकर के बोले महाराज जी हमारी भाभी जी आपसे कुछ पूछना चाहती हैं, संतो ने कहा पूछो, भगवान के पुत्रों ने कहा, ये बताओ

Date:
Page: 113

⇒ हमारे भाभी जी को बेटा होगा या बिटियाँ ? आप तो त्रिकालज्ञ हो, जरा बताओ ?

⇒ संतो की मण्डली मे दुर्वासा जी भी बैठे थे, दुर्वासा जी ने कहा - बालको इधर आओ मैं बताऊ बेटा होगा या बिटियाँ?

⇒ दुर्वासा जी ने कहा - अरे, दुष्टों कृष्ण के पुत्र के पेट पर कपड़ा बाँधकर लाये हो, हमारा उपहास करने के लिये। जाओ मैं शाप देता हूँ जिस बालक को तुम स्त्री बनाकर के मेरे पास लाये हो, इसके गर्भ से ऐसा लोहे का मूसल पैदा होगा, जो तुम्हारे वंश को नष्ट कर देगा।

⇒ बच्चे डर गये, तुरन्त साम्ब की साड़ी उतारी, उसमे से लिपटा हुआ मूसल पैदा हो गया, अब सबके होश उड़ गये, मूसल तो था ही नही, ये कहाँ से आ गया, रोते-रोते सभी बालक भागकर उग्रसेन महाराज के पास गये और सारी घटना सुनाई।

⇒ सुनकर के उग्रसेन महाराज ने सभी बालकों को डाँटा तुम्हे शर्म नही आई, संतो के साथ इतना गन्दा मजाक किया, प्रभु ने तुम्हे कितना समझाया, फिर भी समझ नही आया।

⇒ कृष्णपुत्रों ने कहा सरकार गलती हो गई अब जिन्दगी मे ऐसा कभी नही होगा, किन्तु अब जो होना था सो हो गया, हमे तो इस मूसल से बड़ा डर लग रहा है, इस मूसल का क्या करे ?

⇒ उग्रसेन महाराज ने कहा, एक कार्य करो, इस मूसल को पीसो, और घिस-घिस के, पीस-

Date:
Page: 114

⇒ -पीस के समुद्र मे फेंक दो, जो होना होगा, सो होगा, पर किसी को बताना मत, यदि अपराध सिद्ध हो गया, तो मृत्युदण्ड मिलेगा तुम्हे, क्यों कि हमारे द्वारकाधीश सन्तद्रोही, विप्रद्रोही को कभी स्वीकार नही करते।

⇒ भगवान् के पुत्रों ने किसी को नही बताया, और चुपचाप उस मूसल को घिसकर के पानी में बहा दिया, उस मूसल के चूर्ण से समुद्र तट पर एरका नाम की पैनी घास उग आयी।

⇒ इधर उद्धव जी भगवान् के पास आकर के बोले प्रभु मैं समझ गया आप जाने की तैयारी कर रहे हो, गोविन्द मुझे भी अपने साथ लेकर चलो मैं आपके बिना नही रह सकता।

⇒ भगवान् बोले नही मित्र तुम्हे तो मेरे भक्तों का सहारा बनके रहना पड़ेगा, उद्धव जी ने कहा गोविन्द मैं आपके बिना कैसे रहूँगा ?

⇒ भगवान् बोले सन्यासी बनके रहो, उद्धव जी ने कहा- गोविन्द सन्यासी किसे कहते हैं ? सन्यासी के लक्षण क्या हैं ?

⇒ तब भगवान ने कहा - उद्धव जो प्रश्न तुम हमसे कर रहे हो, यही प्रश्न एकबार महाराज यदु ने दत्तात्रेय जी से किया था। तब दत्तात्रेय जी ने महाराज यदु को क्या उत्तर दिया था ? वही मैं तुम्हे सुना रहा हूं, ध्यान से सुनो,

Date:
Page: 115

→ एकबार महाराज यदु जंगल मे कही जा रहे थे, एक अवधूत को उन्होने पड़े देखा, न रहने को घर, न पहनने को कपड़ा न खाने को **अन्न** महाराज यदु ने उन अवधूत से पूछा आपके पास कुछ नही हैं फिर भी आप इतने आनन्द मे क्यों हैं? तो उस महापुरुष ने कहा- मैंने, मेरे जीवन मे चौबीस (24) गुरुओं का आश्रय किया।

→ उनसे मैंने जो सीखा, उस आनन्द के कारण, उस ज्ञान के कारण, मैं सुख मे हूं, आनन्द मे हूं।

श्लोक- पृथ्वी वायुराकाशमापोऽग्निश्चन्द्रमा रविः

कपोतोऽजगरः सिन्धुः पतंगोमधुकृद् गजः ॥

मधुहा हरिणो मीनः पिंगलाकुररोऽर्भकः ।

कुमारी शरकृत् सर्प ऊर्णनाभिः सुपेश कृत ॥

1 → पहला गुरु मैंने पृथ्वी को बनाया, और पृथ्वी को गुरु बनाकर पृथ्वी से दो बाते सीखी,
① क्षमा ② सहनशीलता

→ व्यक्ति जीवन मे क्षमा जरुर रखे, हम लोगों को क्षमा करना सीखे, आजकल क्षमा करनेका जैसे प्रचलन ही समाप्त हो गया, हमसे स्वयं गलती हो जाये तो क्षमा मांग ले, कोई दूसरा गलती कर दे, उसे क्षमा करने का भाव जरुर आये।

Date:
Page: 116

⇒ दूसरी बात है सहनशीलता, सहनशीलता रहें पृथ्वी कितनी सहनशील है, जितने भी पाप, पुण्य जो कुछ भी होता हैं धरती पर ही होता हैं तो भी पृथ्वी सबको क्षमा करती जाती है।

4 ⇒

⇒ दूसरा गुरु मैंने वायु को बनाया और वायु से मैंने असंगता सीखी हैं वायु कहाँ से आती हैं और कहाँ चली जाती हैं दिखाई नही पड़ती, हमारी तपन को मिटाती हुई चली जाती हैं सुगन्ध हो सुगन्ध को भी ले जाती हैं, दुर्गन्ध हो, दुर्गन्ध को भी ले जाती हैं।

⇒ जीवन मे लोगों का भला करना हो तो वायु की तरह करना चाहिए, वायु अपना काम कर जाती हैं रुकती नही हैं। जीवन की यात्रा भी इसी प्रकार हो, सम्मान मिले, अपमान मिले, वन्दन मिले अभिनन्दन मिले, कुछ भी मिले सत्य के मार्ग पर चलना, ये स्वयं अपने आप मे एक बड़ा अनुष्ठान हैं। बदले मे क्या मिला? उस चक्कर मे पड़ोगे तो कुछ कर ही नही पाओगे।

⇒ तीसरा गुरु मैंने आकाश को बनाया, और आकाश से सीखा, जैसे आकाश अनंत हैं, वैसे ही भगवान अनंत हैं। न आकाश कही कम होता हैं, न आकाश कही ज्यादा होता हैं, वो जहाँ होता हैं, पूरा ही होता हैं, वैसे ही ये परमात्मा सब जगह बराबर मात्रा मे विद्यमान हैं, हाथी मे भी उतने हैं, चींटी मे भी उतने हैं, गाय में भी हैं, वे कुत्ता मे भी हैं इसलिए

Date:
Page: 117

सबके भीतर वह परमतत्व हैं, यह मानकर किसी को कष्ट न दिया जाये।

4⇒ चौथा गुरु मैंने जल को बनाया, और जल से मैंने सीखा, जैसे जल को गर्म करो, कुछ देर बाद वो ठण्डा हो जायेगा, और जल को यदि बर्फ बना दो, तो भी वह कुछ देर बाद पिघलकर अपने आकार मे आ जायेगा, कहने का अर्थ- जल कभी भी अपने स्वरुप को नही छोड़ता। जैसे जल कभी भी अपना स्वरूप और शीतलता नही छोड़ता वैसे ही आप भी अपना स्वरूप और हृदय की शीतलता मत छोड़ना, लोग कितना भी आपको बोले अरे यह धोती, कुर्ता क्यो पहनते हो, चन्दन क्यो लगाते हो, कण्ठी क्यों पहनते हो? आपकी कितनी भी मजाक बनाये लोग किन्तु आप अपने स्वरूप को दूसरो के लिए कभी मत छोड़ना, लोग कितनी भी गाली दे, बुरा बोले आपको, किन्तु आप अपने हृदय की शीतलता को मत छोड़ना।

5- अग्नि को गुरु बनाकर सीखा, अग्नि मे कुछ भी ड़ालो सब स्वाहा हो जाता है। इसी प्रकार हमारा कोई सम्मान करे तो स्वाहा, कोई हमारा अपमान करे तो स्वाहा, आप सम्मान अपमान को भस्म करते चलेंगे, तो जीवन मे आप तरक्की कर पायेगें, यदि सम्मान और अपमान मे उलझ गये तो आप स्थिर हो जायेगें। जैसे आग सबकुछ पचा लेती है, ऐसे ही आप मान, सम्मान सबकुछ पचा लो और प्रगति के मार्ग पर निरन्तर आगे बढ़ते रहो

Date:
Page: 118

6- चन्द्रमा को गुरु बनाकर सीखा जैसे चन्द्रमा कभी न छोटा होती है, न बड़ा, चन्द्रमा की कला छोटी और बड़ी होती है। उसी प्रकार हमारा शरीर तो चन्द्रमा के समान हैं, परन्तु हमारे शरीर की आकृति चन्द्रमा के कला के समान घटती और बढ़ती रहती है। जब हमारा जन्म हुआ तो हम बहुत छोटे थे, जवान हुए तो 5 फुट से 7 फुट के हो गए, बुढ़ापा आया तो शरीर सिकुड़ने लगे और मर कर चले गये।

⇒ हमारे शरीर की आकृति तो घटी, बढ़ी किन्तु आत्मा घटी बढ़ी नही, आत्मा तो जन्म के समय जितनी थी, बुढ़ापे मे भी उतनी ही हैं। यह मैने चन्द्रमा से सीखा।

(7) सूर्य को गुरु बनाकर के सीखा, जैसे सूर्य जब उदय होता हैं, तो ये कभी नही देखता कि मेरा प्रकाश मंदिर के शिखर पर जा रहा है, दरवाजे पर जा रहा हैं गंदी जगह पर जा रहा हैं या शुद्ध जगह पर जा रहा हैं। समान भाव से सूर्य सभी को प्रकाश देता हैं। इसी प्रकार संत को भी निष्काम भाव से प्रवचन करना चाहिए, अब चाँहे उस प्रवचन को दुष्ट सुन रहे हो या प्रेमी। ये मेरा भक्त हैं इसके घर सत्संग करूँगा, ये मेरा भक्त नही हैं, इसके घर सत्संग नही करूँगा, ऐसा संत को कभी नही करना चाहिए।

(8) कबूतर को गुरु बनाकर सीखा कि मोह मे न फँसे।
उदाहरण - एक कबूतर अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ

Date:

Page: 119

⇒ बड़े आनन्द से रहता था। एकदिन अपने बच्चों को छोड़कर कबूतर अपनी पत्नी के साथ जंगल मे चुग्गा लेने चला गया। पीछे से एक बहेलिया आया, उसने अन्न के दाने नीचे जमीन पर डाले। कबूतर के बच्चे दाना चुगने नीचे आये और बहेलिया ने सबको जाल मे फँसा लिया। कबूतरनी आकर रोने लगी, मेरे बच्चे फँस गये हैं, क्या करूँ? वो भी जाल मे फँस गयी।

⇒ कबूतर ने देखा मेरे बच्चे, मेरी पत्नी सब जाल मे फँस गये, मैं क्या करूँ इनके बिना। वो भी जाकर जाल मे फँस गया।

नोट- इस दृष्टान्त से हमे यह शिक्षा मिलती हैं कि गृहस्थी के प्रति यदि आकर्षण संत करेगा, तो कबूतर की तरह मोह के जाल मे फँस जायेगा। संत के लिए सारी दुनियाँ उसका घर हैं और कोई उसका अपना नही हैं।

9- अजगर को गुरु बनाकर सीखा, अजगर कभी किसी की नौकरी नही करता, पड़ा रहता हैं। मिल गया तो अच्छा, नही मिला तो बहुत अच्छा। ऐसे ही संत को कभी किसी की चाकरी नहीं करनी चाहिए।

10- सिंधु को गुरु बनाकर के सीखा, विशालता और उदारता जीवन में दो गुण होने चाहिए

11- पतंगे को गुरु बनाकर के सीखा, रूप की सुन्दरता मे न फँसे।

Date:
Page: 120

12- भौरें को गुरु बनाकर सीखा, भौरा किसी फूल पर बैठकर उसके रस को चूसता हैं। रस को चूस लेता हैं, फूल की गंदगी को नही लेता। इसीप्रकार आप किसी सत्संग मे जाये, किसी कथा में जाये, अच्छी बात जो भी आपको सुनने को मिले उसे तुरन्त गृहण कर ले, जो बात आपको गलत लगे, उसे बिल्कुल गृहण न करें।

13- मधुमक्खी को गुरु बनाकर के सीखा, ज्यादा संग्रह न करे, मधुमक्खी संग्रह करती हैं, आनन्द कोई और ले जाता हैं। इसलिए संत को कभी भी संग्रह नही करना चाहिए

14- हाथी को गुरु बनाकर सीखा, एक बार हाथी पकड़ने वाले ने एक गढ्ढा खोदा, और उसे घास, पत्तों से ढ़क दिया। एक काठ की हथिनी बनाकर के खड़ी कर दी उस गढ्ढे के पास, हाथी बहुत बुद्धिमान होता हैं, किन्तु जब उसी बुद्धिमान हाथी को काठ की हथिनी दिखाई देती हैं, तो दूर से ही उस हथिनी को देखकर उसकी बुद्धि एकदम शून्य हो जाती हैं। हाथी कामांध होकर के हाथिनी से मिलन के लिए दौड पड़ता हैं, और सीधा जाकर के गढ्ढे में गिरता हैं।

=> गढ्ढे मे गिरते ही महीनों तक उसे भोजन नही मिलता, मार-मार के घायल कर देते हैं। अन्त मे उस बेचारे को घर-घर का भिखारी बनना पड़ता हैं। इसलिए सन्यासी को काठ की स्त्री का भी स्पर्श नही करना चाहिए, और माताओं का कर्तव्य हैं, साधु, सन्यासियों को हमेशा

Date:
Page: 121

→ दूर से प्रणाम करना चाहिए।

15→ हिरण को गुरु बनाकर के सीखा, एक व्यक्ति ने बहुत प्यारी वंशी बजाई, मृग वंशी की तान पर मुग्ध होकर कान खड़े करके प्रेम से सुनने लग गया, उसी समय वंशी बजाने वाले व्यक्ति ने बाण मारकर उस मृग को मार डाला। क्यों कि वंशी बजाने वाला व्यक्ति शिकारी था। इसलिए साधु को श्रृंगार रस के गीतों का श्रवण नही करना चाहिए यदि साधु संगीत प्रेमी है, तो सुन्दर-सुन्दर पदावलियाँ है, जिनमे ठाकुर जी को रिझाया गया है, उनको सुनना चाहिए। श्रृंगारिक गीत सुनने से, काम बाण उसके चित्त को भेदन करके, संसार मे पतन करा देगा।

16- मछली को गुरु बनाकर सीखा, जीभ को वश मे करो। मछली क्यों पकड़ी जाती हैं? कांटे मे खाने की चीज लगाता हैं बहेलिया और कांटे को पानी मे डालता हैं। मछली कांटे पर लगी खाने की चीज को पकड़ने आती है और फँस जाती हैं। स्वाद के चक्कर मे, भोजन के चक्कर मे मछली को अपनी जान गंवानी पड़ती हैं। हम लोग भी कई बार स्वाद के चक्कर मे ही निपट जाते हैं। दत्तात्रेय जी ने कहा स्वाद की गुलामी न करना, हम लोग भी अच्छा-अच्छा खाते हैं और अच्छा-अच्छा खाने के लिए मरते हैं। कई बार खाने के लिए झगड़े हो जाते हैं। लोग मर जाते हैं। इसलिए हमे अपनी जीभ को वश मे रखना चाहिए।

Date:
Page: 122

17→ वेश्या को गुरु बनाकर के सीखा, एक वेश्या थी वह नित्य श्रृंगार करके कोठे पर जाकर बैठ जाती, और विचार करती लोग मेरे सौन्दर्य पर मोहित होकर मेरे पास आयेगें, मुझे बहुत सा धन मिलेगा, सुबह से रात्रि तक श्रृंगार करके बैठी रहती लेकिन कोई नही आता, तब उस वेश्या को मन मे बड़ी ग्लानि होती हैं, वह विचार करती मैने इन हाड़-मांस के पुतलों के लिए सुबह से रात्रि तक इन्तजार किया, इतना इन्तजार मैं गोविन्द से मिलने का करती, तो मेरा कल्याण हो जाता।

18→ कुरर पक्षी को गुरु बनाकर के सीखा, कुरर पक्षी जब मांस का टुकड़ा चोंच मे दबाकर के उड़ता हैं, तो उसके पीछे बहुत सारे बलवान पक्षी पड़ जाते हैं। किन्तु जब कुरर पक्षी उस मांस के टुकड़े को छोड़ देता हैं, तो वो सभी बलवान पक्षी उसका पीछा करना बन्द कर देते हैं। इसी प्रकार सन्त जब भजन करता हैं तो सिद्धि, सिद्धि बाधक बनती हैं। कीर्ति, प्रतिष्ठा उसके पीछे पड़ती हैं किन्तु सन्त को कीर्ति, प्रतिष्ठा को वहीं, की वही छोड़ देना चाहिए, नही तो वो उसके भजन को बर्बाद कर देगी।

19- बालक को गुरु बनाकर सीखा, छोटे बालक को आप मार दो, तो रोने लगता, प्रेम करदो तो सब भूल जाता, किसने क्या अपमान किया? हम एक-एक बात याद रखते हैं, किसने हमारा कब, कितनी बार अपमान किया, किन्तु बालक मन में कोई गांठ नही रखता, बालक की तरह जियो, बालक की एक बहुत अच्छी

⇒ आदत होती हैं वह मन मे कोई गांठ नही रखता, भूल जाता हैं। ऐसे ही आप गलत बातो को भूलना सीखो, अच्छी बातो को याद रखो, बालक से भोलापन, निर्दोषता सीखो।

२०⇒ कुमारी कन्या को गुरु बनाकर सीखा, एक बार एक कन्या का विवाह पक्का हो गया, सगाई हो गई, एकदिन अचानक उसके होने वाले ससुर जी उसके घर आ गये। कन्या के माता, पिता खेत पर गये थे। कन्या घर पर अकेली थी, कन्या ने अपने ससुर जी से कहा - पिता जी तो घर पर नही हैं। ससुर जी ने कहा कोई बात नही, मैं तो इधर से निकल रहा था, तो विचार किया तुम लोगों से मिलता चलूं। मैं तुम्हारे लिये चूड़ियाँ लाया हूँ, इनको पहन लो, कन्या ने ससुर जी से पूछा - मैं आपके लिये क्या बनाऊ, आप क्या पाओगे ?

⇒ ससुर जी ने कहा - बेटी यदि घर मे चावल हो तो भात बना लो, वही पाकर के चले जायेगें। अब कन्या ने अपने पूरे घर मे खोजा किन्तु चावल उसको कही नही मिले, अब उस कन्या को डर लगने लगा, कि कही ससुर जी को पता चल गया कि इनके घर मे चावल तक नही हैं, तो बनी, बनाई सब बात बिगड़ जायेगी। बहुत खोजने पर चावल तो नही मिले किन्तु धान मिल गये, उसको लगा चलो कोई बात नही, इस धान को ही कूटकर के फटाफट चावल निकाल लेती हूँ। फटाफट उसने

Date:
Page: 124

⇒ धान कूटना प्रारम्भ कर दिया मूसल से, किन्तु जब धान कूटने लगी, तो चूड़ियाँ खनखनाने लगी, कन्या ने विचार किया, अरे! ससुर जी को पता चल जायेगा, चूड़ियों की आवाज सुनकर के, ये तो धान कूट रही हैं। इसलिए कन्या ने सारी चूड़ियाँ उतार दी केवल दो-दो चूड़ी रखी, किन्तु फिर भी बजी, अबकी बार कन्या ने एक-एक चूड़ी रखी हाथ में, तो बिल्कुल आवाज नहीं हुई, दत्तात्रेय जी यह दृश्य देख रहे थे उन्होंने उस कुमारी कन्या को तुरन्त गुरु बना लिया, और उससे सीखा, साधु यदि समूह में रहेगे एक साथ, तो नित्यप्रति आपस में झगड़े होंगे, भजन कम होगा, इसलिए भजनानन्दी सन्त को जितना हो सके, एकान्त में रहकर अकेले भजन करना चाहिए।

२१ ⇒ **सर्प को गुरु बनाकर सीखा,** सर्प जब भी चलता हैं, टेढ़ा चलता हैं। पर जब भी वो बिल में घुसता है, टेढ़ा नहीं घुसता सीधा घुसता है। उसी प्रकार संसार में तुम भले टेढ़े-टेढ़े काम करो, किन्तु मुक्ति के द्वार पर जब पहुँचोगे मोक्ष के लिए, तो सीधा होना ही पड़ेगा, यदि सीधे नहीं हुये, तो मोक्ष होगा ही नहीं।

२२ ⇒ एक बाण बनाने वाले को गुरु बनाकर सीखा, वह अपने काम में इतना मग्न था कि रास्ते में धूम-धाम से किसी सवारी जा रही थी, लेकिन बाण बनाने वाले का ध्यान उधर नहीं

Date:
Page: 125

गया। उसे पता ही नही चला कि उसके सामने से सवारी कब निकल गई? दत्तात्रेय जी ने बाण बनाने वाले को तुरन्त गुरु बना लिया और उससे सीखा, जितनी एकाग्रता इस बाण बनाने वाले की अपने कार्य मे है, कि सवारी गुजर गई इसे पता नही चला, उसी प्रकार जिसदिन आपकी एकाग्रता भगवान् मे इतनी हो जायेगी, संसार मे क्या चल रहा हैं, चलने दो, आप तो एकाग्रचित्त होकर भगवान् का चिन्तन करे। जब हम भजन करने बैठे, तो कोई रो रहा हैं, कोई नृत्य कर रहा हैं, आपका उधर बिलकुल भी ध्यान नही जाना चाहिए।

23- मकड़ी को गुरु बनाकर के सीखा, जैसे मकड़ी जाल बुनती हैं। जाल मे खेलती हैं, और जब जाने लगती हैं तो मकड़ी अपने जाल को स्वयं निगल लेती हैं। उसी तरह भगवान् के भीतर से यह संसार निकला, और भगवान भी संसार मे अनेकों प्रकार की क्रीड़ाएं कर रहे हैं, समय आने पर भगवान् ही सम्पूर्ण संसार को अपने भीतर समा लेते हैं।

24- भृंगी कीट को गुरु बनाकर के सीखा, भृंगी किसी भी कीड़े को लाकर अपने बिल मे कैद कर देता हैं, और वो कीड़ा भृंगी के भय से उसी का चिन्तन करते-करते स्वयं भी भृंगी कीट बन जाता हैं। इसी प्रकार ब्रह्म की उपासना करते-करते जीव भी ब्रह्ममय हो जाता हैं।

Date:
Page: 126

25 ⇒ अन्त मे पच्चीसवां गुरु अपने शरीर को बनाकर सीखा, इस शरीर को हम अपना कहते हैं, पर न जाने इस शरीर पर कितने कब्जे हैं। माता-पिता कहते ये हमारा बच्चा है, इसको हमने जन्म दिया हैं, पत्नी कहती है, ये मेरा पति हैं सात फेरे मैंने इनके साथ लिये हैं। जिसके यहाँ नौकरी करते हैं वो मालिक कहता है, ये मेरा नौकर है, मैं जो कहूँगा, वो इसे करना पड़ेगा, कहने का भाव यह है, जिस शरीर को लेकर तुम पैदा हुये हो, इस पर भी तुम्हारा अधिकार नही हैं। जब हम अपने शरीर पर ही कब्जा न कर सके तो अन्य वस्तुओं पर हम क्या कब्जा करेगें।

⇒ सन्यास धर्म का जो उपदेश दत्तात्रेय जी ने महाराज यदु को दिया, वही उपदेश भगवान श्रीकृष्ण ने उद्धव जी को दिया, अन्त मे अपनी चरणपादुका देकर उद्धव जी को बद्रीनाथ भेज दिया। भगवान बोले उद्धव मेरे जाने के बाद घोर कलियुग आ जायेगा, इसलिए तुम भगवान नर, नारायण के साथ मे बद्रीनाथ मे रहो। उद्धव जी बद्रीनाथ चले गये। भगवान् अपने परिवार को लेकर प्रभास क्षेत्र चले गये, परिवार के लोगों ने मदिरापान करके आपस मे लड़ाई, झगड़ा करना प्रारम्भ कर दिया, देखते-देखते गृह युद्ध छिड़ गया, मूसल के चूर्ण से जो एरका नाम की घास उग आई थी, समुद्र तट पर, उस घास को उखाड़कर के यदुवंशी एक-दूसरे के ऊपर वार करने लगे।

Date:
Page: 127

⇒ गृह युद्ध मे छप्पन करोड़ यदुवंशी एक-दूसरे को मार-कॉट के समाप्त हो गये। सिर्फ चार-पाँच ही बचे, भगवान ने अपनी आँखो के सामने ही अपने वंश का उद्धार करा दिया।

⇒ बलराम जी ने अपना शेष रुप धारण किया, और भगवान को प्रणाम करके क्षीरसागर मे चले गये।

⇒ भगवान के पुत्रों ने जब मूसल को पीसकर के समुद्र मे फेंका था तो उसका एक टुकड़ा मछली निगल गई थी। मछली को मारकर के उस टुकड़े को एक बहेलिये ने अपने बाण पर रख लिया।

⇒ भगवान एक वृक्ष के नीचे बैठकर विश्राम कर रहे थे, उसी समय बहेलिये ने बाण भगवान के चरण मे मार दिया, फिर रोने लगा, प्रभु मेरे से भूल हो गई।

श्लोक- मा भैर्जरे त्वमुत्तिष्ठ काम एष कृतो हि मे।
याहि त्वं मदनुज्ञातः स्वर्गं सुकृतिनां पदम्॥

⇒ भगवान बोले तुम डरो मत, मेरी इच्छा से ही तुमने बाण चलाया है। जाओ तुम मेरे धाम मे जाकर के निवास करो। बहेलिया तो भगवान के धाम चला गया, इतने मे देवता आकाश मे आकर के बोले प्रभु पधारो हम आपके स्वागत मे खड़े हैं। भगवान ने दारुक सारथी को बुलाकर के कहा, द्वारका जाकर सभी को बता दो आज से ठीक सातवें

Date:
Page: 128

⇒ दिन मेरी पूरी द्वारकापुरी समुद्र मे डूब जायेगी, इसलिए सात दिन मे सभी लोग अपने - अपने घरों को खाली करके कही और चले जाओ, दारुक सन्देश लेकर द्वारका की ओर दौड़ा, भगवान श्री कृष्ण का श्रीअंग प्रकाश के रूप मे प्रकट हो गया,

⇒ सूत जी कहते हैं, वही तेजपुंज भगवान का श्रीमद् भागवत मे आकर के स्थापित हो गया। इसलिए-

श्लोक- तिरोधाय प्राविशदिदं श्रीमद्भागवतार्णवम् ।
तेनेयं वाङ्मयी मूर्तिः प्रत्यक्षा वर्तते हरेः ।

⇒ साक्षात भगवान की वाङ्मयी मूर्ति श्रीमद भागवत महापुराण हैं, जिसमे 18000 श्लोक हैं, 335 अध्याय हैं, 12 स्कन्ध हैं, जो सात दिन मे आप श्रवण किये।

⇒ द्वादश स्कन्ध मे कलियुग की कथा कही, आगे आने वाला समय कैसा समय होगा? शुकदेव जी कहते हैं, राजन - कलियुग मे पाप चरम पर होगा, ज्ञानी कष्ट पायेगे, ज्ञानी अभाव मे रहेगें मूर्खों की पूजा होगी, जिसके पास धन अधिक होगा, वो न्याय को अपने अनुकूल कर लेगा। समाज मे प्रतिष्ठित होने के लिए चरित्रवान होना जरुरी नही हैं, जिसके पास धन अधिक होगा उसकी ही समाज मे प्रतिष्ठा होगी।

⇒ कलियुग मे जब पाप अपने चरम पर होगा, तब -

Date:
Page: 129

श्लोक- सम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः।
भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति ॥

⇒ सम्भल नाम के ग्राम मे, विष्णुयशा नाम के ब्राह्मण के यहाँ भगवान अवतार लेके आयेगें। और भगवान के इस अवतार का नाम होगा श्री कल्कि अवतार, बोलो कल्किदेव भगवान की जय। जिस समय कल्कि भगवान अवतार लेकर आयेगें उसी समय सतयुग का प्रारम्भ हो जायेगा।

⇒ शुकदेव जी कहते हैं, राजन- कलियुग मे बड़े अवगुण हैं। पर एक गुण भी है-

श्लोक- कलेर्दोषनिधे राजन्नस्ति ह्येको महान् गुणः।
कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तसंगः परं व्रजेत ॥

कलियुग मे भगवान ने अपने भक्तों पर बड़ी कृपा की, चारो युगों मे कलियुग ही ऐसा हैं, जिसमे भगवान ने अपने भक्तो को आरक्षण दिया हैं। अन्यथा आप देखे-

श्लोक- कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरि कीर्तनात ॥

सतयुग मे भगवान का ध्यान करने से, त्रेता मे बड़े-बड़े यज्ञो द्वारा उनकी आराधना करने से और द्वापर मे विधि पूर्वक उनकी पूजा-सेवा करने से गोविन्द की कृपा और उनके दर्शन प्राप्त होते थे। किन्तु कलियुग मे भगवान के नाम का संकीर्तन करने मात्र से ही गोविन्द

⇒ की प्राप्ति हो जाती हैं।

⇒ शुकदेव जी महाराज कहते हैं- राजन् परीक्षित मैंने तुम्हें सात दिनों तक कथा सुनाई हैं। तुमने जितने भी प्रश्न मुझसे किये, मैंने सभी के उत्तर दिये, अब कथा विराम की ओर हैं। अब मैं एक प्रश्न तुमसे करना चाहता हूं, उसका उत्तर मुझे दो।

⇒ राजन् कुछ देर बाद तक्षक सर्प आयेगा और तुम्हे डस लेगा, सर्प के डसने से क्या तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी?

⇒ यदि तुम ऐसा विचार कर रहे हो कि तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी तो-

श्लोक ⇒ त्वं तु राजन् मरिष्येति पशुबुद्धिमिमां जहि।
न जातः प्रागभूतोऽद्य देहवत्वं नङ्क्षयसि ॥

⇒ ये जो बुद्धि तुम्हारी हैं, ये पशु बुद्धि हैं। इस पशु बुद्धि का त्याग करो। क्यों कि मरता तो शरीर हैं, आत्मा नहीं। आत्मा तो अजर अमर हैं। और गीता में भगवान ने स्वयं कहा हैं-

श्लोक - नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

⇒ आत्मा को न कोई शस्त्र काट सकता हैं

Date:
Page: 131

⇒ न अग्नि जला सकती है, न जल इसे भिगो सकता है और न वायु शोषण कर सकती है।

⇒ शुकदेव जी ने कहा राजन् - तुम आत्मरूप हो अपने आत्मा का स्मरण करो, अपने स्वरुप का स्मरण करो,

श्लोकः- अहं ब्रह्म परं धाम ब्रह्माहं परमं पदम्।

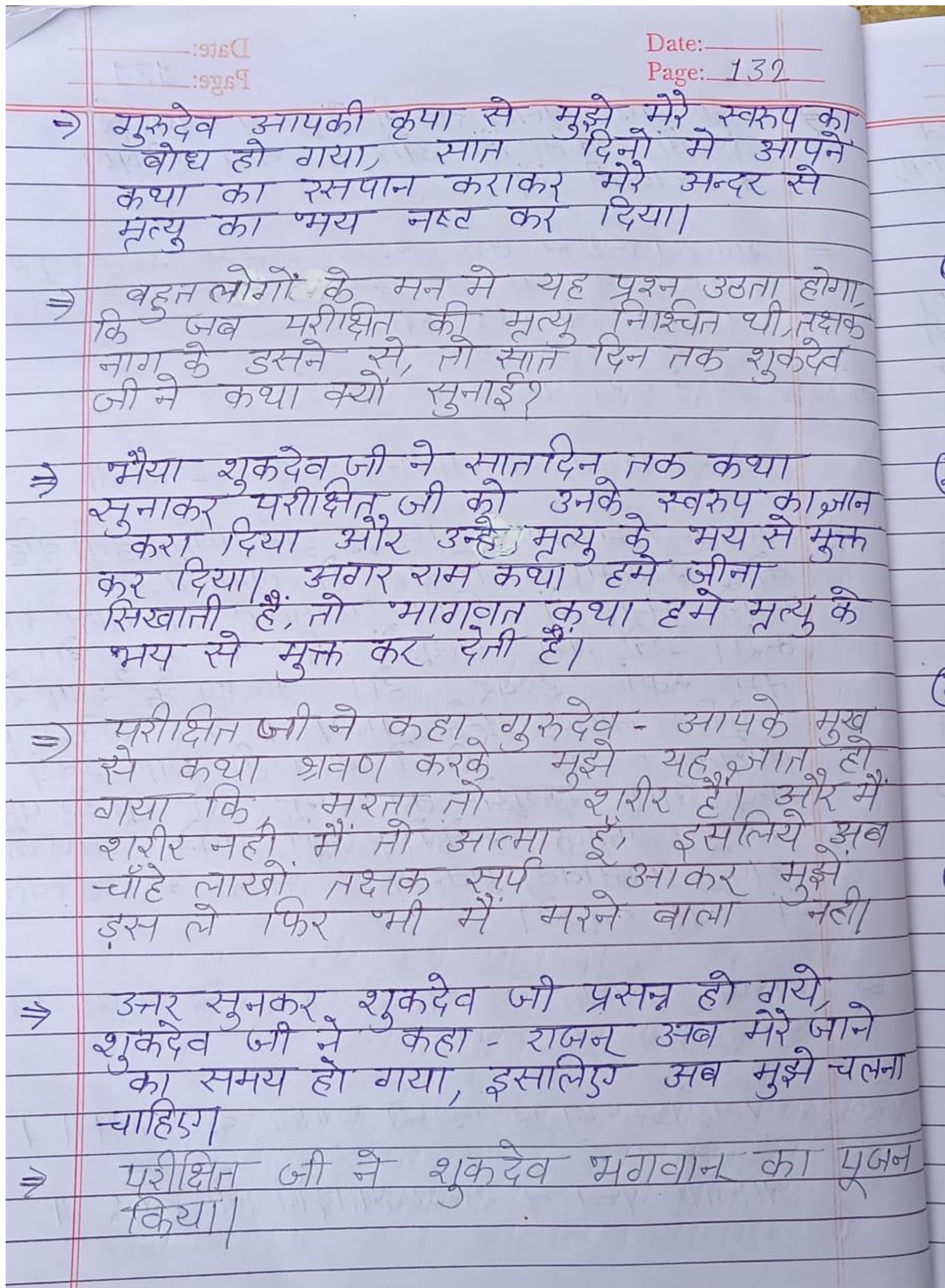
एवं समीक्ष्नात्मानमात्मन्याधाय निष्कले ॥

⇒ राजन् तुम अपनी विशुद्ध एवं विवेकवती बुद्धि को परमात्मा के चिन्तन में लगाओ, और अपने अन्तर में स्थित परमात्मा का साक्षात्कार करो। देखो तुम मृत्युओं की भी मृत्यु हो। तुम स्वयं ईश्वर हो। ब्राह्मण के शाप से प्रेरित तक्षक तुम्हे भस्म न कर सकेगा। परीक्षित - तक्षक की तो बात ही क्या, स्वयं मृत्यु और मृत्युओं का समूह भी तुम्हारे पास तक न फटक सकेंगे। तुम अपने आप को अपने वास्तविक एकरस अनन्त अखण्ड स्वरुप में स्थिर कर लो।

⇒ राजन् परीक्षित ने शुकदेव जी के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा -

श्लोकः- सिद्धोऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि भवता करुणात्मना।

श्रावितो यच्च मे साक्षादनादिनिधनो हरिः ॥


Date:
Page: 132

⇒ गुरुदेव आपकी कृपा से मुझे मेरे स्वरूप का बोध हो गया, सात दिनों मे आपने कथा का रसपान कराकर मेरे अन्दर से मृत्यु का भय नष्ट कर दिया।

⇒ बहुत लोगों के मन मे यह प्रश्न उठता होगा, कि जब परीक्षित की मृत्यु निश्चित थी, तक्षक नाग के डसने से, तो सात दिन तक शुकदेव जी ने कथा क्यों सुनाई?

⇒ भैया शुकदेव जी ने सात दिन तक कथा सुनाकर परीक्षित जी को उनके स्वरुप का ज्ञान करा दिया और उन्हे मृत्यु के भय से मुक्त कर दिया, अगर राम कथा हमे जीना सिखाती हैं, तो भागवत कथा हमे मृत्यु के भय से मुक्त कर देती है।

⇒ परीक्षित जी ने कहा, गुरुदेव - आपके मुख से कथा श्रवण करके मुझे यह ज्ञात हो गया कि मरता तो शरीर है। और मैं शरीर नही, मैं तो आत्मा हूँ, इसलिये अब चाँहे लाखों तक्षक सर्प आकर मुझे डस ले फिर भी मैं मरने वाला नही

⇒ उत्तर सुनकर, शुकदेव जी प्रसन्न हो गये, शुकदेव जी ने कहा - राजन् अब मेरे जाने का समय हो गया, इसलिए अब मुझे चलना चाहिए।

⇒ परीक्षित जी ने शुकदेव भगवान का पूजन किया।

Date:
Page: 133

:: भजन ::

हरि की कथा सुनाने वाले-2 तुमको लाखों प्रणाम

① हम ढूँढ रहे थे वन में, हम खो बैठे थे तन में
ओ राह बताने वाले, तुमको लाखों प्रणाम - 2
हरि का दरश कराने वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥

② हम लेकर विष का प्याला, जा रहे थे यम के गाला
ओ सुधा पिलाने वाले, तुमको लाखों प्रणाम - 2
हरि की कथा सुनाने - - - - - -

③ तुम घट-घट अन्तर्यामी, हम पतित और अज्ञानी
ओ कृष्ण मिलाने वाले, हरि की कथा सुनाने वाले
तुमको लाखो प्रणाम - - - -

④ हम पार तेरा क्या पावैं, बस शीश झुका यही गावैं
ओ गोविन्द मिलाने वाले, ओ प्रेम लुटाने वाले-2
तुमको लाखों प्रणाम - - - - -

⇒ इसके बाद शुकदेव जी - परीक्षित जी से विदा लेकर त्यागी, महात्माओं, भिक्षुओं के साथ, वहाँ से चले गये। शुकदेव जी के चले जाने के बाद महाराज परीक्षित बैठे भगवान का स्मरण कर रहे थे। तबतक तक्षक सर्प आया, तक्षक

Date:
Page: 134

⇒ सर्प के मुख का स्पर्श होते ही महाराज परीक्षित का शरीर जलकर भस्म हो गया,

⇒ तक्षक सर्प के मुख लगाने से पहले ही परीक्षित जी के शरीर से आत्मा का उत्क्रमण हो गया। ब्रह्मरंध्र का भेदन करके महाराज परीक्षित की आत्मा का उत्क्रमण हुआ। आत्मा जब शरीर से निकल जाती है तो शरीर का भी अन्तिम संस्कार करने की आवश्यकता होती हैं। परीक्षित जी का अन्तिमसंस्कार करने के लिए वहाँ कोई उपस्थित नही था। इसलिए मानो तक्षक सर्प ही राजा परीक्षित का अन्तिम संस्कार करने के लिए आ गया। क्यों कि तक्षक नाग के डसने से पूर्व ही महाराज परीक्षितजी की आत्मा ब्रह्मरंध्र का भेदन करके शरीर से निकल गई थी। इसके बाद तक्षक सर्प ने जैसे ही परीक्षित जी के शरीर मे मुख का स्पर्श किया, मानो तक्षक सर्प ने परीक्षित जी के शरीर को अग्नि समर्पित की, और महाराज परीक्षित जी का शरीर जलकर राख का ढ़ेर बन गया।

⇒ पास मे ही गंगा जी प्रवाहित हो रही थी। गंगा की एक लहर आई, और सम्पूर्ण राख को लेकर के चली गई। परीक्षित जी की राख को उनके फूल को उनकी अस्थियों को गंगा मे विसर्जित करने की भी आवश्यकता नही पड़ी। देवताओ ने आकाश मे प्रकट होकर के दुन्दुभी बजाई, पुष्पवृष्टि की, जय-जयकार की, महाराज परीक्षित को

Date:
Page: 135

⇒ मोक्ष की प्राप्ति हो गई। तपस्या से मुक्ति मिलती है। जप से मुक्ति मिलती, किन्तु श्रवण से भी मुक्ति मिलती है। इसबात के प्रमाण महाराज परीक्षित हैं।

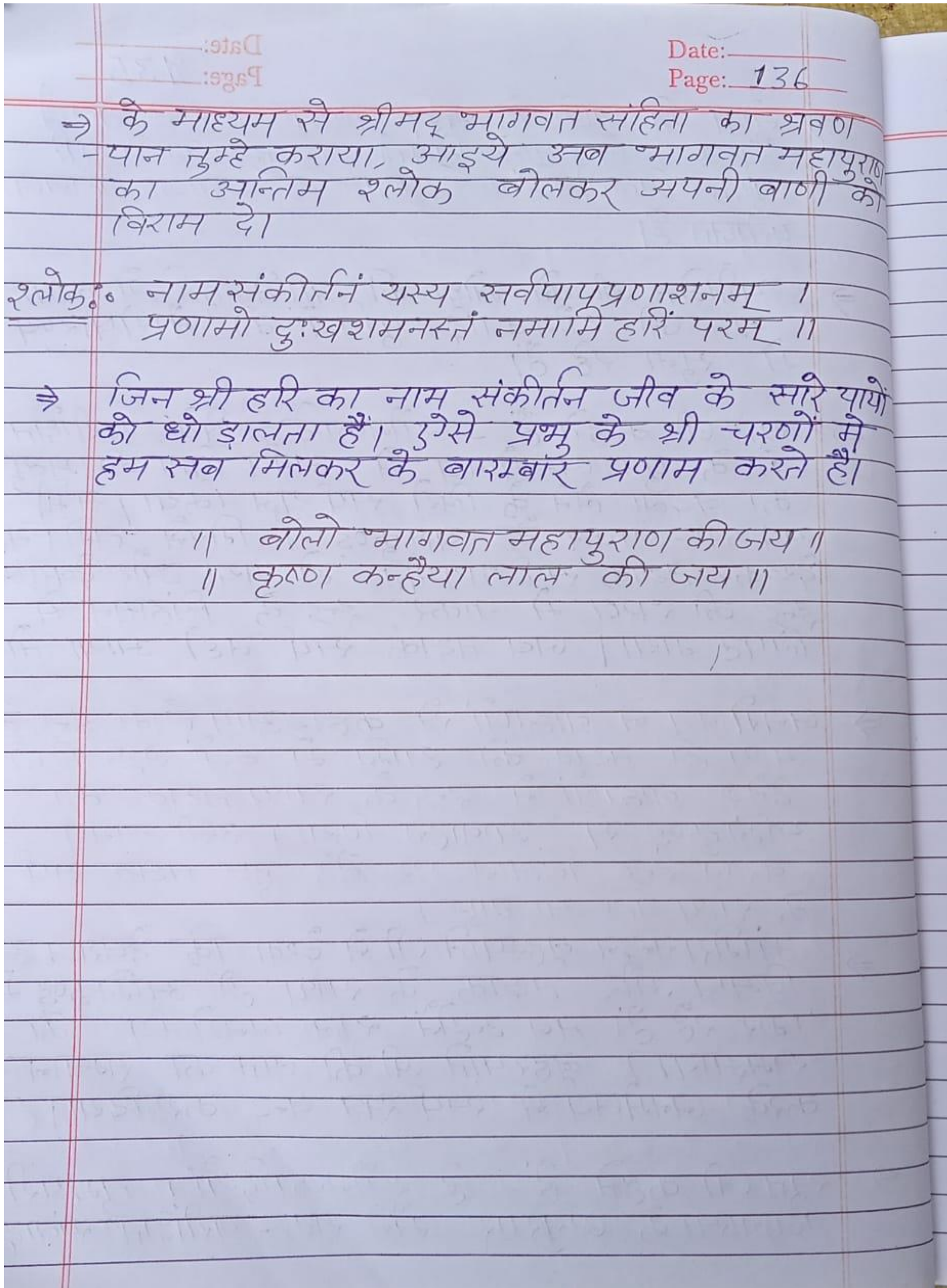
⇒ परीक्षित जी को मोक्ष की प्राप्ति हुई, ये कथा सूत जी शौनकादि मुनियों को नैमिषारण्य मे सुना रहे हैं।

⇒ सूत जी कहते हैं - शौनकादि ऋषियों, परीक्षित जी के पुत्र जनमेजय ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिये सर्प यज्ञ किया। सभी सर्प आ-आकर के यज्ञकुण्ड मे गिरने लगे। यह देखकर तक्षक सर्प भयभीत हो गया और देवराज इन्द्र की शरण मे जाकर, इन्द्र के सिंहासन से लिपट गया। जब तक्षक सर्प नहीं आया तो

⇒ जनमेजय ने ब्राह्मणों से कहा- आप लोग इन्द्र के साथ ही तक्षक को अग्नि मे क्यों नहीं गिरा देते? ब्राह्मणों ने इन्द्र के साथ तक्षक का अग्निकुण्ड मे आवाहन किया। उसी समय देवराज इन्द्र विमान पर बैठे हुए तक्षक सर्प के साथ वहाँ आ गए।

⇒ अंगिरानन्दन बृहस्पति जी ने देखा कि देवराज इन्द्र विमान और तक्षक के साथ ही अग्निकुण्ड मे गिर रहे हैं तब उन्होंने राजा जनमेजय को समझाया। बृहस्पति जी की बात का सम्मान करके जनमेजय ने सर्प सत्र बन्द कर दिया।

⇒ सूत जी कहते हैं - हे शौनकादियों! तुम्हारी जिज्ञासा के अनुसार मैंने शुक - परीक्षित संवाद



Date:
Page: 136

⇒ के माध्यम से श्रीमद् भागवत संहिता का श्रवण पान तुम्हे कराया, आइये अब भागवत महापुराण का अन्तिम श्लोक बोलकर अपनी वाणी को विराम दे।

श्लोकः- नामसंकीर्तनं यस्य सर्वपापप्रणाशनम् ।
प्रणामो दुःखशमनस्तं नमामि हरिं परम् ॥

⇒ जिन श्री हरि का नाम संकीर्तन जीव के सारे पापों को धो डालता है। उसे प्रभु के श्री चरणों में हम सब मिलकर के बारम्बार प्रणाम करते है।

॥ बोलो भागवत महापुराण की जय ॥
॥ कृष्ण कन्हैया लाल की जय ॥